

# वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक तत्व



डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

वाल्मीकि रामायण

में

राजनीतिक तत्व

# वाल्मीकि रामायण

## में

# राजनीतिक तत्त्व

डॉ० रामेश्वर प्रसाद गुप्त  
एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी) स्वर्णपदक प्राप्त  
पी-एच० डी०  
आचार्य एवं अध्यक्ष,  
का० सनातकोत्तर महाबिद्यालय  
दतिया (म०प्र०)



ईस्टर्न बुक लिंकसं  
विल्सो : : (भारत)

प्रकाशक :

इस्टन बुक लिक्स

५८२५, न्यू चंद्रावल, जवाहर नगर,  
दिल्ली-११०००७

R. SK. S. LIBRAR) 5852  
Acc No.....  
Call No.....

© लेखक

प्रथम संस्करण : १९९५

ISBN : 81-86339-19-1

मूल्य : ₹३००.००

मृत्तक :

शाम प्रिंटिंग एजेंसी (अमर प्रिंटिंग प्रेस)  
१/३६ ए, डबल स्टोरी, विजय नगर, दिल्ली-६

भारत भाता।

एवं

समस्त भारतवासियों के प्रति

सर्वप्रिय

—डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त

## प्रास्ताविक

भारत में राजनीतिक संगठन का प्रारम्भ छोटे-छोटे राज्यों की जिन्हें तब राष्ट्र कहा जाता था, निम्नतम इकाई ग्राम की व्यवस्था के लिये नियुक्त 'ग्रामणी' के साथ हुआ था। ग्रामणी वलि-समाहर्ता (कर बसूलने वाला) और राज्य के लिये सैनिक दल का भी संघटक होता था। गाँव में एक सभा होती थी जो पंचायत घर का काम देखने के साथ मनोरंजन-गृह के भी काम आती थी। एक दूसरी संस्था थी जिसे 'समिति' कहते थे। सम्भवतः यह जनपद की प्रमुख राजनीतिक इकाई थी। हो सकता है, समिति की संघटना सभा के प्रतिनिधियों को मिलाकर की जाती हो। जो हो, वैदिक काल में ये दोनों संस्थाएँ राष्ट्र की धूरी थीं। अथवेद ने उन्हें प्रजापति की 'दो दुहिताएँ' कहा है। ये 'संविदान' अर्थात् परस्पर मिल-जुलकर काम करती थी। वर्तमान 'संसद' की 'लोकसभा' और 'राज्य सभा' का यह मूल रूप था। धीरे-धीरे जैसे क्षुद्र जनपदमहाजनपदों में बदलते गये, छोटे-छोटे वैदिक 'पुरों' ने नगरों का रूप ग्रहण किया, दुर्गों का निर्माण हुआ। राजनीति ने भी स्वयं को व्यवस्थित किया। वैदिक साहित्य, विशेषतः ब्राह्मण ग्रन्थों में बड़े-बड़े राज्यों की न केवल चर्चा है अपितु उनके निर्माण, राजा की सिंहासन-च्युति, राज्याभिषेक, च्युत राजा की पुनः प्रतिष्ठा, राजा के वंशपरम्परागत रहने पर भी प्रजा द्वारा उसे मान्यता प्रदान करने, सेना संगठन, मन्त्रिपरिषद्, गुप्तचर-व्यवस्था, राजकोष आदि के सम्बन्ध में बड़ी दिलचस्प सामग्री मिलती है। मनु, कामन्दक,

शान्तिपर्व और अर्थशास्त्र में जो राजनीतिशास्त्र का सूक्ष्म और विस्तृत स्वरूप मिलता है वह वाल्मीकि के बहुत बाद का है। फिर भी रामायण काल में विदेह, कोसल, शूरसेन और स्वयं लङ्घा के शासनों को देखा जाय तो एक बात सबमें समान रूप से मिलती है और वह है राजा का एकमात्र धर्म-प्रजारञ्जन। राम, जनक और रावण सभी इस धर्म का पालन करते हैं। राज्य को जनता का इतना अधिक सहयोग रहता था कि राजा का पद त्याग या निवासिन, राज्य की सुख समृद्धि में विशेष बाधक नहीं होता था। इसीलिये दशरथ के आकस्मिक मरण और राम के दीर्घ वनवास का प्रभाव अयोध्या जनपद की सुख-समृद्धि पर नहीं पड़ा। उल्टे राम के लौटने तक सैन्य-शक्ति, कोष और व्यवस्था की दृष्टि से उसकी कई गुनी वृद्धि हो गयी। यह सच है कि रामायण काल तक न तो शासन-व्यवस्था विशेष जटिल थी और न लोकनीति और राजनीति में कोई अन्तर ही था। दोनों का आधार धर्म था। राजनीतिक जटिलता का युग नन्दों और मीरों से प्रारम्भ होता है।

डॉ० रामेश्वर प्रसाद गुप्त ने इस तत्त्व को समझा और उसके प्रकाश में रामायण में उपलब्ध शासन-व्यवस्था का, जिसने आगे चलकर 'राम-राज्य' के रूप में राज्यादर्श का रूप ग्रहण कर लिया, विस्तृत विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ में से किया है। ऐसा करते हुये उन्होंने न केवल पूर्ववर्ती अपितु पश्चाद्वर्ती राजतन्त्रों की भी विवेचना की है। जिनके जटिल संगठन का चित्र कोटिलीय अर्थशास्त्र और उसके नियामक तत्त्वों का निरूपण मनु, कामन्दक, शूक के ग्रन्थों और महाभारत के शान्तिपर्व में मिलता है। यह ग्रन्थ वस्तुतः वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था का भूमिका भाग है। बड़ी सरलता और स्पष्टता के साथ, आवश्यक प्रमाणों और शास्त्रीय उद्धरणों के साथ किया गया डॉ० गुप्त का यह प्रयत्न महाभारत पूर्व

राज्य-व्यवस्था पर ही नहीं, गुप्त काल तक की शासन-पद्धति पर भी व्यापक प्रकाश ढालता है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक दृष्टि को समझने में डॉ० गुप्त की यह कृति सहायक सिद्ध होगी।

डॉ० प्रभुदयालु अग्निहोत्री

ई २०७३ महावीर नगर  
भोपाल-४६२०१६  
५-११-६३

भू० पू० कुलपति  
जबलपुर विश्वविद्यालय,  
जबलपुर (म० प्र०)



श्री हनुमते नमः

## निवेदन

सम्ब्रहति 'राजनीति' छल प्रबच्छवनादि से आच्छन्न, अतएव अनेक आचरणों से अदृष्ट, मेघाच्छन्न पूर्णचन्द्र के समान अपनत्व व्यक्तित्व एवं आनन्दप्रदायी स्वरूप से विरहित है। प्रस्तुत ग्रन्थ में साझा राजनीति का सम्यक् निरूपण है, जिसका चिन्तन एवं तदनुसार आचरण राम जैसे आदर्श एवं श्रेष्ठ नेतृत्व के निमणि में समर्थ है। श्रेष्ठ नेतृत्व ही राष्ट्र के योग एवं क्षेम का कारक होता है।

राज्य में एक तन्त्र, प्रजातन्त्र या किसी भी प्रणाली का शासन हो, शासक वर्ग का प्रमुख उद्देश्य प्रजा एवं राज्य का हित करना है। राज्य के प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता, समानाधिकार, विकास एवं उन्नति का ध्यान रखना शासन का परम कर्तव्य है। यथापराध दण्ड की व्यवस्था एवं शीघ्र न्याय राज्य में अराजकता को रोककर शान्ति एवं स्वतन्त्रता में परम सहयोगी होते हैं। समय पर कार्य की सम्पन्नता न होने से राज्य में अराजक तत्त्वों की वृद्धि होती है, तब 'स्वतन्त्रता' स्वच्छन्दता तथा उच्छृङ्खलता में परिवर्तित होने लगती है। 'स्वतन्त्रता' नियमों के प्रति आबद्धता एवं प्रतिबद्धता है। यह सन्मार्ग पर चलने का संयम है। स्वच्छन्दता एवं उच्छृङ्खलता उसके विपरीत एवं विरोधी हैं, जो समाज और राष्ट्र में अराजक स्थिति उत्पन्न करने के कारण उनके अधोपतन का कारण हैं। स्वच्छन्दता में अनुशासन, चरित्र एवं कर्तव्यपालन के इति निष्ठा का ह्रास होता है, जो किसी भी देश की अधोगति का निमित्त है। राजनीति स्वच्छन्दता एवं स्वतन्त्रता का परिज्ञान

कराती हुई स्वच्छन्दता के परिहार हेतु एवं स्वतन्त्रता के स्थायित्व में शासन एवं प्रजा वर्ग को सचेत एवं सचेष्ट करती है।

**वस्तुतः** किसी भी राष्ट्र या देश की अवनति एवं पतन के दो ही कारण है। प्रथम कारण राजनीति के प्रति अज्ञानता है तथा दूसरा कारण है राजनीति का अनुचित प्रयोग। राजनीति का रूप अत्यन्त स्पष्ट होने पर भी चन्द व्यक्तियों ने अपने हित के लिये उस पर स्वार्थ का आवरण कर उसके रूप को विकृत कर दिया है। राजनीति में केवल दो तत्त्व या शक्तियाँ कार्य करती हैं—चरित्र तथा दण्ड। ये दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं। चरित्र की रक्षा दण्ड से होती है और दण्ड के समुचित प्रयोग का आधार चरित्र है। इतिहास के पन्नों को पलटने से स्पष्ट होता है कि जिस राज्य में चरित्र-बल रहा और दण्ड का यथोचित प्रयोग किया गया, उसका स्थायित्व पीढ़ियों और शदियों तक रहा। जिस समय भी चरित्र या दण्ड सम्बन्धी प्रमाद हुआ कि राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया।

समस्त विद्याओं एवं प्राणिमात्र का योग और क्षेम करने वाली दण्डनीति या राजनीति है।<sup>1</sup> अस्तु, संसार की समस्त विद्याओं में सर्वश्रेष्ठ मान्य 'राजनीति' परम विवेकी, श्रेष्ठ मतिमान्, परम पुरुषार्थी, निःस्वार्थ एवं देशभक्त व्यक्तियों का लोककल्याणकारी परम शस्त्र है, जो उन्हीं के अन्तः एवं बाह्य करणों में सुशोभित होता है। वही राजनीति जब अविवेकी लोगों के हाथ में पड़ जाती है, तो उसका दुरुपयोग कर उक्त तथाकथित लोग रावण जैसे प्रमत्त एवं दुराचारी, कदाचारी, व्यभिचारी एवं भ्रष्टाचारी बनकर समाज का एवं राष्ट्र का बड़ा अनर्थ एवं विघ्नवंश करते हैं एवं

१. आन्वोक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधकोदण्डः । तस्य नोति-  
दण्डनीतिः .....तस्मादण्डमूलास्तित्रो विद्याः । विनयमूलो  
दण्डः प्राणभूतां योगक्षेमावहः ।—कोटिलीय अर्थशास्त्र,  
चतुर्थोऽध्यायः ।

अपयण के भागी होते हुये भी लज्जाविहीन विचरते हुए संकोच नहीं करते तथा राजनीति को वाराञ्जना से भी बदतर रूप प्रदान करते हैं।

वस्तुतः श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ कभी भी अपने हित साधन में संलग्न नहीं होते। 'प्रजा का सुख ही उनका अपना सुख होता है एवं प्रजा का हित ही उनका अपना हित होता है।'

नेता या प्रशासक एवं शासक वर्ग के निम्नाङ्कित गुण विशेषो-  
लेखनीय है—

नेता विनीनो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः  
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रुद्रवंशः स्थिरोपुवा ।  
बुद्ध्युत्साहस्मृतिप्रज्ञाकलामानसमन्वितः  
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रवक्षुश्च धार्मिकः ॥३

स्पष्ट है कि शासक वर्ग एवं नेताओं को विनीत, मधुर, त्यागी, चतुर, प्रियवद, लोकप्रिय, पवित्र, वाकपटु, प्रसिद्धवंशवाला, स्थिर, युवरु, बुद्धि-उत्साह-स्मृति-प्रज्ञा-कला तथा मान से युक्त, शूर, दृढ़, तेजस्वी, शास्त्रों का ज्ञाता और धार्मिक होना अनिवार्य है।

किञ्चिर्यंतः राजनीति का अधिकारी एवं संचालनकर्ता उक्त गुणोपेत व्यक्ति ही मान्य है एवं उक्त व्यक्ति के हाथों में ही राजनीति शोभा समन्वित होती है। उक्त व्यक्ति ही राम के समान आदर्श राज्य की स्थापना में सक्षम एवं आदर्श होते हैं।

"वाल्मीकि-रामायण" को आधार मानकर तत्कालीन राजनीतिक तत्त्वों को विवेचना के माध्यम से प्रस्तुत प्रन्थ में राजनीति

१. प्रजासुखेसुखं राजः प्रजानां च हिते हितम् ।  
नात्मप्रियं हितं राजः प्रजानां तु प्रियं हितम् ॥  
—कौटिलीय अर्थशास्त्र ११६

२. दशरूपकम् २११, २

के स्वरूप-प्रत्यक्षीकरण के साथ राजनीतिज्ञों एवं प्रशासकों को राजनीति के स्वरूप एवं गुणों को आत्मसात करने हेतु उत्प्रेरणा एँ सन्निहित हैं। राम-राज्य की स्थापना हेतु तथा राम जैसे आदर्श उन्नायकों की निर्मिति हिताय प्रस्तुत अन्ध की विचारणा एँ सार्थक सिद्ध होंगी, इसी विश्वास के साथ वह कृति प्रस्तुत है।

पूर्वजों का सच्चा भाड़ उनके स्मरण में स्वीकार कर परम अद्वेय ताऊ स्व० श्रीयुत भवानी प्रसाद, श्रीयुत केशवप्रसाद, पिता श्रीयुत रामभरोसे, पितृव्य श्रीयुत भैयालाल, श्रीयुत मोतीलाल, अद्वेय ताई, माँ तथा आई एवं ज्येष्ठ भ्राता श्रीयुत नाथूराम जी नौगरइया [गुप्त] का सादर सविनय नमन सहित स्मरण ।

कार्य की सिद्धि में आशीष, उत्प्रेरणा एवं निर्देशन के लिये परम पूज्य गुरुजनों—डा० प्रभुदयालु अग्निहोत्री [भूतपूर्व कुलपति, जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर, म० प्र०], प्रो० श्रीयुत एस० एन० पन्त [अवकाश प्राप्त, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, टी० आर० एस० कालेज, रीवा, म० प्र०] प्रो० श्रीयुत चन्द्रभूषण सिंह चौहान, [अंग्रेजी विभाग] प्रो० श्रीमती शकुन्तला मलिक (अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, शा० एम० एल० बी० कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर, म० प्र०) तथा अन्य समस्त परम पूज्य गुरुजनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ।

जीवन में सदैव सन्मार्ग के उत्प्रेरक अतएव परम अद्वास्पद संस्कृत महाकवि पं० श्रीयुत सुधाकर शुब्ल (दतिया, डा० श्रीकृष्ण गुप्त (अवकाश प्राप्त, अध्यक्ष एवं प्राध्यापक, संस्कृत-विभाग, शा० एम० एल० बी० कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर, म० प्र०), श्रीयुत माधवसिंह चौहान (अवकाश प्राप्त, जिला शिक्षा-अधिकारी, दतिया), श्रीयुत सतीश चन्द्र शर्मा (अवकाश प्राप्त, शिक्षा उपसंचालक निवास-ग्वालियर) डा० हरिहर गोस्वामी (प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया), श्रीयुत बी० एम० कुमार (पुलिस अधीक्षक, दतिया), प्रोफेसर श्रीयुत

नरेन्द्र उपाध्याय (अध्यक्ष, विधि विभाग, शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया) के प्रति हृदय से आभार।

अपने सम्माननीय भाइयों श्रीयुत सीताराम, श्रीयुत श्रीराम एवं श्रोयुत बी० एल० गुप्त के प्रति आदर-भावाभिव्यक्ति।

प्रस्तुत कार्य में व्यावहारिक सहयोग के लिये अद्देया वहिन डा० सुषमा कुलथेष्ठ (संस्कृत-प्राध्यापक डी० आर० कालेज, दिल्ली) सम्मान्य वन्धु श्रीयुत नारायण प्रसाद उपाध्याय (संस्कृत व्याख्याता, ग्रालियर) प्रिय वन्धु डा० निलय गोस्वामी (स० प्राध्यापक, हिन्दी, शा० महाविद्यालय, बैतूल) के प्रति हृदय से सम्मान एवं प्रिय जामात् श्री हरिप्रकाश नीखरा तथा प्रिय पुत्र श्री राजेश गुप्त के प्रति स्नेह। मेरी पुत्रियों—उमा गुप्ता एवं अपर्णा गुप्ता तथा पहली श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता का प्रोत्साहन भी उक्त सभी के नामोल्लेख के लिये मुझे अनुप्रेरित करता है।

अन्त में,

‘सिया राम मय सब जग जानो

करङ्गे प्रनाम जोरि जुग पानी’

उक्त पावन भाव से सम्पूर्ण चराचर को बिनत नमन सह प्रस्तुत कृति का लोकहिताय लोकार्पण।

निवेदक

दिनांक

५.५.१९६३

डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त

आचार्य एवं अध्यक्ष [संस्कृत विभाग]

शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

दतिया (म० प्र०)



# विषयानुक्रमणिका

प्रास्ताविक	vii
निवेदन	xi
भूमिका	१-१८
राजनीति की परिभाषा, राजनीति का महत्व, साहित्य में राजनीति के कार्य की संक्षिप्त रूपरेखा, राजनीति तथा वाल्मीकि रामायण।	
प्रथम अध्याय—वाल्मीकि और उनकी रामायण	१६-५६
आदिकवि महर्षि वाल्मीकि—समय एवं जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व। रामायण-परिचय, आदिकाव्य, रामायण के संस्करण, समय, स्रोत, मूल एवं प्रक्षिप्त अंश, रामायण का महत्व, रामायण पर आलोचनात्मक कार्य, रामायण का उपयोग।	
द्वितीय अध्याय—रामायण में राज्यों का संगठन	६०-८४
राज्य की परिभाषा, राज्य का उद्भव, रामायण में राज्यों का संगठन, रामायणानुसार राज्य के कार्य एवं उद्देश्य, रामायण में एकतन्त्र और उसका स्वरूप, रामायण में राज्यों का वर्गीकरण।	
तृतीय अध्याय—रामायणकालीन शासन व्यवस्था	८५-२१२
राजतन्त्र शासन, राजा, राजा की उत्पत्ति, रामायण में राजपद, राजा का व्यक्तित्व, राजकुमार की शिक्षा, राजा का निवाचन, राज्याभिषेक, राजचिह्न, राजा की प्रतिज्ञा,	

राजा पर नियन्त्रण, राजा की दिनचर्या, राजा के कर्तव्य एवं अधिकार, राजा को सुविधाएँ, राजा की दिग्विजय, राजा का देवत्व, राजा का अधिकार-परित्याग, राजा का आदर्श, राम एक आदर्श राजा, रामराज्य का आदर्श।

**मन्त्री**—महत्त्व, मन्त्रियों की नियुक्ति, मन्त्रियों की संख्या, मन्त्रियों के प्रकार, पुरोहित, मन्त्रियों की योग्यता, मन्त्रियों के कार्य, मन्त्रियों के पदों का विभाजन, विभिन्न विभाग, मन्त्रिपरिषद्, मन्त्रियों का आवास, पहनावा, वेतन, राजा, मन्त्री, तथा मन्त्रणा, मन्त्रणा के प्रकार, तीर्थ, अन्य-पदाधिकारी।

**सभा**—सभा का गठन, पौरजानपद, नैगम, श्रेणी, सभा सदस्यों की योग्यता, सभापति, सभाभवन, सभा की बैठक, रामायण में सभा—एक दृष्टि (सभा की कार्यवाही), अयोध्या और लक्ष्मा की सभा—एक समालोचना, सभा के कर्तव्य, सभा के अधिकार, रामायणकालीन सभा की विशेषताएँ, रामायण में मन्त्रिपरिषद् और सभा।

**कोष**—महत्त्व, आय के ल्रोत, कर लेने की विधि, राज्य की आय का व्यय, विशेष।

✓ **न्याय**—महत्त्व, न्याय का आधार 'विधि, रामायण में विधि के ल्रोत, न्यायालय, न्याय सभा का संगठन, न्यायधीशों की योग्यता, न्यायपद्धति, न्याय की विशेषताएँ।

✓ **दण्ड**—रामायण में दण्ड का महत्त्व, दण्ड व्यवस्था, दण्डधर, अपराधी, अपराध, दण्ड के सिद्धान्त, दण्ड के प्रकार।

**रामायणकालीन प्रशासन**—एक दृष्टि—रामायण में विधि एवं संविधान, सरकार, रामायण में व्यवस्थायिका, कार्यपालिका, सचिवालय, न्यायपालिका, केन्द्रीय एवं ग्रामीण प्रशासन, रामायणकालीन शासन की विशेषताएँ, गृहनीति, रामायणकालीन शासन के दोष।

✓ चतुर्थ अध्याय—रामायणकालीन सैनिक संगठन

तथा युद्ध

२१३-२६७

सैनिक संगठन की आवश्यकता, रामायण में सैनिक संगठन, सेना का प्रधान—राजा, सेनापति, सेनापति की नियुक्ति, सेना—चतुरंगबल, विभिन्न सेन्य श्रेणियाँ, स्थल सेना, वायु सेना, नौ सेना, सेना की संस्था, सैनिकों का प्रशिक्षण, सारथी, दूत, गुप्तचर, शिविरनियन्ता, सैनिक, अनुशासन, सैनिकों को सुविधाएँ।

अस्त्र-शस्त्र—सुरक्षात्मक आयुध, आयुधागार।

✓ मित्र—मित्र के प्रकार, मित्र के प्रति व्यवहार, मित्र के कर्तव्य।

दुर्ग—दुर्ग के प्रकार, सुरक्षा एवं सुविधा।

✓ युद्ध—युद्ध के प्रकार, युद्ध के कारण, युद्ध का समय, यान, शिविर की व्यवस्था, युद्ध की तैयारी, युद्ध की घोषणा, युद्ध का आरम्भ, दुर्गों का विछंस, युद्ध के समय सावधानी, युद्ध में उत्साह, रामायण में युद्ध और उसके विविध रूप, कूटयुद्ध, आकाशयुद्ध, युद्ध में विजयार्थ यज्ञ, युद्ध में घड़गुण एवं चार नीतियाँ, युद्ध के नियम, युद्ध में सैनिकों को चिकित्सा, युद्ध में मृत सैनिकों का प्रबन्ध, युद्ध में बन्दी, युद्ध के पश्चात् विजित रांजय के प्रति व्यवहार, राक्षसों की हार के कारण।

रामायण में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

पञ्चम अध्याय—रामायणकालीन समाज, धर्म और

राजनीति

२६८-३०६

✓ रामायणकालीन समाज का गठन, वानरों की मनुष्यत्व, सिद्धि, वानर नामकरण, राक्षसों की मनुष्यत्व सिद्धि, राक्षस नामकरण, रामायण में वर्णव्यवस्था, आश्रम

व्यवस्था, रामायणकालीन समाज की सभ्यता एवं संस्कृति, उत्तरभारत के आयों की सभ्यता, उत्तर भारत के आयों की संस्कृति, वानरों की सभ्यता, वानरों की संस्कृति, राक्षसों की सभ्यता, राक्षसों की संस्कृति, रामायणकालीन समाज की तीन प्रमुख विशेषताएँ, रामायणकालीन समाज—एक आलोचनात्मक दृष्टि, रामायणकालीन समाज के दोष, रामायकालीन धर्म, धर्म की परिभाषा, रामायण में धर्म के प्रकार, रामायणानुसार धर्म और राजनीति।

उपसंहार

३१०-३१२

सन्दर्भ-प्रन्थ-सूची

३१३-३१६

## भूमिका

### राजनीति की परिभाषा

राजनीति राज्य सम्बन्धी नीति है। राजनीति में दो पद हैं— राज्य एवं नीति। 'राज्य' पद, राजन् + यत् से निर्मित है। इसका शाब्दिक अर्थ है राजा का (क्षेत्र)। इस प्रकार राज्य से तात्पर्य राजा के क्षेत्र या संस्था से है। नीति शब्द 'नी' धातु (निर्देश देना या मार्ग प्रदर्शन करना) से वितन् प्रत्यय लग कर बना है। नीति का अर्थ है 'उचित निर्देशन'। इस प्रकार राजनीति का शब्दार्थ 'राज्य सम्बन्धी उचित निर्देशन' है। राजनीति राज्य के चार तत्त्वों—भूमि, जनता, सरकार एवं सम्प्रभुता की व्यवस्था की नीति है। यह राज्य के स्थायित्व एवं उसके कार्यों को सुचारू रूप से संचालित करने का निर्देशन है। यह राज्य से सम्बन्धित कार्यों के विषय में उचित या अनुचित का परिज्ञान कराने वाली नीति है। इस नीति के निर्देशन के अनुचित होने पर राज्य का विनाश होता है और उचित होने पर राज्य का स्थायित्व दृढ़ होता है। अतः यह राज्य की शक्ति का नियन्त्रण और आधिपत्य करने की क्रिया है।

राजनीति राज्य के प्रत्येक पहलू अर्थात् समाज, उसके व्यवहार, उसके शासन एवं विदेश नीति को भी प्रभावित करती है। राजनीति तत्सम्बन्धी सम्पूर्ण राज्य एवं सम्बन्धित राज्य के अतिरिक्त क्षेत्र को भी पूर्णतः प्रभावित करती है। अतः इसका क्षेत्र न केवल सम्बन्धित राज्य की भूमि, जनसमुदाय, सरकार व सम्प्रभुता से ही है अपितु अन्य राज्यों तक भी विस्तृत है।

राजनीति के नेतृत्व, सत्य, ईमानदारी, कर्तव्य-पालन, परोपकार, रक्षा करना, विकास करना, संरक्षण एवं स्थायित्व के भाव को उत्पन्न करना आदि गुण हैं। राजनीति के चार मूल तत्त्व हैं—

- (१) धार्मिक एवं नेतृत्विक आधार।
- (२) व्यक्तिगत एवं समाज का सम्बन्ध स्थापित करना।
- (३) सब की स्वतन्त्रता बनाये रखना।
- (४) प्रजातन्त्रात्मक विधि को बनाये रखना।

प्राचीन भारत में राजनीति राज्य के सप्ताङ्गों पर आधारित थी। इसमें नेतृत्व आदि सभी गुण समाहित थे। इसके चार अंग—साम, दाम, भेद, और दण्ड थे। राज्य के प्रत्येक कार्य को कार्यान्वयित करने के लिये, चाहे वह कार्य आन्तरिक हो या बाह्य इन चारों का योग अपरिहार्य है। शासक को राज्य के प्रत्येक कार्य के संचालन और सिद्धि के लिये सर्वप्रथम साम (शान्ति का भाव) से कार्य करना चाहिये। यदि साम से कार्य की सिद्धि सम्भव न हो, तो दाम (लालच देकर) से अभीष्ट की प्राप्ति करे। इससे भी यदि कार्य में सफलता की प्राप्ति न हो, तो भेद से (विरोधी वर्ग में फूट ढालकर) कार्य की सिद्धि करे। यदि भेद से भी वाञ्छित की अनुपलब्धि रहे, तो दण्ड (दमन) का आश्रय लेना चाहिये। इन चारों के यथोचित प्रयोग से राज्य में अराजकता का भय नहीं रहता और उस राज्य की सुदृढ़ता के कारण अन्य राज्य भी उस पर आँख उठा कर देखने का साहस नहीं करते।

‘राजनीति’ नीति और धर्म से युक्त है। वस्तुतः नीति, राजनीति और धर्म समान धर्म वाले हैं, अन्तर केवल क्षेत्र का है। नीति का क्षेत्र व्यक्ति तक ही सीमित है। नीति कहती है कि नागरिक ‘आदर्श’ हो। राजनीति का क्षेत्र सम्पूर्ण राज्य

पर्यन्त है। राजनीति एक आदर्श राज्य का निर्माण करती है। धर्म का क्षेत्र नीति और राजनीति के क्षेत्र से वृहत्तर है। 'धर्म' व्यक्ति और राज्य के सहित सम्पूर्ण समाज या संसार के आदर्शों को ओर दृष्टि रखता है। वस्तुतः तीनों का रूप या गुण एक ही है। तीनों का लक्ष्य भी एक ही है। तीनों में नेतृत्व की प्रधानता है।

राजनीति के नीति शब्द से स्पष्ट है कि यह 'नीति' या 'नेतृत्व' से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है। इसीलिये राम ने भरत से राज्यकार्य संचालन में नीति का आश्रय लेने पर बल दिया था।<sup>१</sup> राजनीति का धर्म से भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। वाल्मीकि-रामायण में राजनीति के साथ धर्म के सम्बन्ध का महत्व अनेक स्थलों पर दर्शाया गया है।<sup>२</sup> अयोध्याकाण्ड में निर्दिष्ट है कि धर्मनुसार प्रजा का पालन करने वाले नीतिज्ञ और शासनदण्डधारी राजा को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।<sup>३</sup>

अस्तु, 'राजनीति' नीति और धर्म से सम्बन्धित राज्य की नीति है। इसका उद्देश्य राज्य में नेतृत्व का प्रसार और उसकी रक्षा करना एवं उत्तम नागरिकों का निर्माण करके एक आदर्श राज्य की स्थापना करना है।

१. तो वृत्ति वर्तमाने कृच्छिद् या च सत्पयगा शुभा ।

— वा० रा० २-१००-७५

२. रक्षा हि राजा धर्मेण सर्वे विषयवासिनः ।

— वा० रा० २-१००-४६

३. राजा तु धर्मेण हि पालयित्वा, महामतिदण्डधरः प्रजानाम् ।

प्रवाप्य कृत्स्नां वसुधां यथावदितश्चयुतः स्वयंमुपेति विद्वान् ।

— वा० रा० २-१००-७७

## राजनीति के अनेक नाम

राजनीति के लिये अनेक नामों का प्रयोग किया गया है। कोटिल्य ने इसे दण्डनीति कहा है।<sup>१</sup> वाल्मीकि रामायण में इसके लिये 'राजधर्म' प्रयुक्त है।<sup>२</sup> मनुस्मृति में प्रयुक्त 'राजधर्म' भी राजनीति का बोधक है।<sup>३</sup> महाभारत में राजनीति के लिये राजधर्म<sup>४</sup> एवं राज्यशास्त्र का प्रयोग है। भर्तृहरि ने इस विधा के लिये नृपनीति<sup>५</sup> शब्द का प्रयोग किया है। इस प्रकार राजनीति भिन्न-भिन्न नामों से अभिहित होती है।

## राजनीति का महत्त्व —

राज्यों के निर्माण के साथ ही साथ राजनीति का भी प्रार्द्धभाव हृआ होगा। राज्य के स्थायित्व का आधार ही राजनीति है। कोटिल्य के अनुसार यह समस्त विधाओं के योग-क्षेत्र की नीति है।<sup>६</sup> इसे अप्राप्त वस्तु को उपलब्ध कराने वाली, लब्ध की रक्षा करने वाली, रक्षित वस्तु की वृद्धि कराने वाली एवं बधित वस्तु को उपयुक्त पात्रों में उपयोग कराने वाली कहा गया है।<sup>७</sup> इसे लोक-यात्रा (सामाजिक-व्यवहार) की सफलता का भी आधार कहा गया है।<sup>८</sup> स्पष्ट है कि राज्य की प्राप्ति, उसकी रक्षा एवं उसकी उन्नति

१. अर्थशास्त्र १-२, १-४

२. कि मे धर्मदिविहीनस्य राजधर्मः करिष्यति ।

—वा० रा० २-१० १-१

३. राजधर्मनिप्रवदयामि । मनुस्मृति ७-१

४. महाभारत शान्तिपर्वं ६३-२६

५. नृपनीतिरनेक रूपा-नीतिशतकम् इतोक ४७

६. अर्थशास्त्र १-४

७. धर्मव्यवस्थाभार्या लब्धपरिरक्षणो रक्षितविवर्धनो वृद्धस्य तीर्थेषु  
प्रतिपादिनी च ।

—अर्थशास्त्र १-४

८. तस्यामायता लोकयात्रा । अर्थशास्त्र १-४

के लिये राजनीति का ज्ञान परमावश्यक है। इस पर निर्भर लोकयात्रा को सफलता इसके महत्व को और भी बढ़ा देती है। इसी कारण से शुकाचार्य के अनुयायी केवल दण्डनीति (राजनीति) को ही विद्या मानते हैं।<sup>१</sup> उनके मत में समस्त विद्याओं (आन्वेषिकी, व्रयो और वार्ता) का समावेश राजनीति में ही हो जाता है। क्योंकि सुचारूपेण राज्य व्यवस्था चलने पर सब विद्याओं के व्यवहार को स्वतः सिद्धि हो जाती है।<sup>२</sup>

राजनीति का पतन होने पर समस्त विद्याओं और समस्त धर्मों का, चाहे वे उन्नत ही क्यों न हों, नाश हो जाता है। राजनीति के महत्व को दृष्टि में रखते हुये महाभारत में निर्दिष्ट है कि 'आत्मत्याग के सभी रूप राजनीति में देखे जा सकते हैं, सभी विद्यायें राजनीति में विलीन हो जाती हैं, सभी ज्ञान राजनीति में प्रविष्ट हैं एवं समस्त संसार राजनीति में केन्द्रित हैं।'<sup>३</sup>

**वस्तुतः राजनीति राज्य का आधार स्तम्भ है।** यदि राज्य में उसकी नीति का निर्धारण न हो तो वह अस्तित्व विहीन हो जाता है। राजनीति का निर्धारण राज्य के संचालन के लिये अपरिहार्य है। राज्य की व्यवस्था को बनाने के लिये, उसके विकास एवं उत्कर्ष के लिये एवं आदर्श राज्य के निर्माण के लिये राजनीति का महत्वपूर्ण योग है।

### संस्कृत साहित्य में राजनीति के कार्य की संक्षिप्त रूपरेखा

वेदों में राजनीतिक तत्त्व—साहित्य सृजन के प्रारम्भ से ही राजनीति सम्बन्धी कार्य ने साहित्य में अपना स्थान निश्चित कर

१. दण्डनीतिरेका विद्येत्योशनसाः।

प्रथंशास्त्र १-२

२. तस्यां हि सर्व विद्यारम्भाः प्रतिवद्वा।

प्रथंशास्त्र १-२

३. सर्वे त्यागा राजघर्षेषु दृष्टा, सर्वाः दीक्षा राजघर्षेषु युक्ताः।

सर्वाः विद्या राजघर्षेषु चोक्ताः, सर्वे लोकाः राजघर्षे प्रविष्टाः।

—महाभारत शान्ति पर्व ६३-६६

लिया था। वेद हमारी संस्कृति और साहित्य के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं। हम देखते हैं कि वेदिक साहित्य में भी राज्य सम्बन्धी नियमों का विस्तृत उल्लेख है।

ऋग्वेद वेदों में सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में भी राजनीति सम्बन्धी विचार द्रष्टव्य हैं। ऋग्वेद के दो सूक्त (१०।१७३, १७४) राजनीति विषयक विचारों की दृष्टि से महत्त्व पूर्ण हैं। इनमें प्रजा द्वारा राजा के निर्वाचन से सम्बन्धित विवेचन है। अथर्ववेद के (७।८७-८८) सूक्त भी राजा के संवरण से सम्बन्धित है। अथर्ववेद के दो सूक्तों (३।३ एवं ३।४) में राजा के पुनः स्थापन एवं प्रजा द्वारा संवरण का विस्तृत विवेचन है। इसमें सभा एवं समिति के रूप में राजनीतिक संगठन का भी संकेत मिलता है।<sup>१</sup> इस प्रकार वेदों में अनेक स्थलों पर राजनीति सम्बन्धी विचारों का विवेचन है।

### ब्राह्मण ग्रन्थों में राजनीति

ब्राह्मण-ग्रन्थों में भी राजनीतिक तत्त्वों का विस्तृत विवेचन है। इनमें राजा के अभियेक का वर्णन एवं उसकी प्रतिज्ञाओं का उल्लेख,<sup>२</sup> राजा के स्थायित्व के लिए राजसूय एवं अश्वमेघ यज्ञों का अनुष्ठान,<sup>३</sup> राजा से सम्बन्धित सेनानी, पुरोहित आदि। यारह 'रत्नी' अधिकारियों का उल्लेख,<sup>४</sup> एवं अनेक शासन पद्धतियों 'भोज्य, स्वाराज्य, साम्राज्य, एवं राज्य का उल्लेख'<sup>५</sup>

१. अथर्ववेद ७।१२।१, २

२. शतपथ ब्रा० ४।३।३।२ एवं तैत्तिरीय ब्रा० १।७।१०।१-६ एवं ऐतरेय ब्राह्मण बा० ३।१५

३. शतपथ ब्राह्मण काण्ड १३

४. शतपथ ब्रा० ५।३

५. ऐतरेय ब्राह्मण बा० ३

राजनीतिक विचारों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार तैत्तिरीय और पञ्चविंश ब्राह्मण में भी राजनीतिक तत्त्वों का विवेचन किया गया है। स्पष्ट है कि वैदिक साहित्य में राजनीतिक विचारों का विशद उल्लेख है।

### रामायण और महाभारत में राजनीतिक विचार

लौकिक संस्कृत साहित्य के प्राचीन काव्य ग्रन्थ रामायण और महाभारत में भी राजनीतिक विचार पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं। रामायण में राज्य के सप्ताङ्गों का संकेत देकर उन-उन राज्याङ्गों के विषय में विस्तृत विचार विमर्श किया गया है।<sup>१</sup> प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ में इसका विस्तृत विवेचन किया जायेगा।

महाभारत में राजनीतिक विचारों का विवेचन विस्तृत रूप में किया गया है। शान्तिपर्व राजनीतिक तत्त्वों के विवेचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमें राजधर्म का सुन्दर विवेचन है। इसके अतिरिक्त सभापर्व (अध्याय ५) में शासन का आदर्श, आदि पर्व (अध्याय १४२) में शस्त्रादि का वर्णन, सभापर्व (अध्याय ३२) में और वनपर्व में (अध्याय २५, ३२, ३३ एवं १५०) आपत्ति कालिक नीतियों पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। उपर्युक्त राजनीति विषयक समस्त कार्य, कथाओं के माध्यम से है।

### राजनीति पर स्वतन्त्र कार्य —

**वस्तुतः** राजनीति के सिद्धान्तों पर स्वतन्त्र रूप से साहित्य पांचवीं या छठवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व से पहले का नहीं है। महाभारत में कहा गया है कि राजनीति के सिद्धान्तों पर कार्य

१. अप्रमत्तो वले कोशे दुर्गे जनपदे तथा, भवेथा गुह राज्यं हि दुरारक्षतम् मतम् । —वा० रा० २१५२।७२

एवं —यस्य कोशश्च व०ङ्गदचमित्पाण्यात्मा भूमिप, समवेतानि सर्वाणि सराज्यं महदश्मुते । —वा० रा० ४।२६।१२

ब्रह्मदेव के द्वारा एक लाख से भी अधिक दलोंकों में किया गया है। इस कार्य को सफलतापूर्वक विशालाक्ष (शिव), महेन्द्र, बृहस्पति और काव्य (शुक्र) द्वारा संक्षिप्त रूप दिया गया। इनके अतिरिक्त मनु, प्राचेतस, भरद्वाज और गौरशिरा आदि राजनीति शास्त्र के प्रणेताओं के नाम एवं वैशालाक्ष, बाहुदन्तक, बाहुस्पत्य आदि शास्त्रों का नाम भी महाभारत में निर्दिष्ट है।<sup>१</sup> उपर्युक्त राजनीति शास्त्र के प्रणेताओं के ग्रन्थ अनुपलब्ध होने पर भी यह तो स्पष्ट ही है कि राजनीति विषयक सामग्री का सृजन सातवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व तक हो चुका था।

राजनीति विषयक स्वतन्त्र ग्रन्थ पाँचवीं या छठवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व के पश्चात् के उपलब्ध हैं। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, पारासरस्मृति, शुक्रनीति आदि राजनीति के महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

राजनीति के सिद्धान्तों पर विस्तृत एवं महत्वपूर्ण विचारों का संग्रह हमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र (चौथी शताब्दी ईस्वी पूर्व) में मिलता है। राज्य के सप्ताङ्ग ही कौटिलीय अर्थशास्त्र की विषय-सूची का आधार है। इन्होंने स्पष्ट किया है कि राज्य की सातों प्रकृतियों या अङ्गों के मिल कर कार्य करने से राज्य रूपी शरीर सुचालित तथा परिपुष्ट होता है। इन्होंने अपने ग्रन्थ में अन्य पूर्वाचार्यों—भरद्वाज (द्रोण), विशालाक्ष (शिव), पिशुन (नारद), कौणकदन्त (भीष्म), वातव्याधि (उद्धव), बाहुदन्तीपुत्र (इन्द्र), परासर एवं पाराशर के मन्त्रव्यों एवं सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए उनके मत का खण्डन किया है। कौटिल्य के राजनीति विषयक विचार अत्यन्त उन्नत हैं। इनके बाद के राजनीति विषयक ग्रन्थों में इनके विचारों के अतिरिक्त नवोन तत्वों का समावेश नहीं हो सका।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनन्तर कामन्दकीय नीतिसार (लगभग चौथी शताब्दी ईस्वी) राजनीति का ग्रन्थ सामने आया।

१. महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय ५७-५६

यह कार्य कोटिल्य के कार्य का संक्षिप्त रूप ही है। तीसरी शताब्दी ईस्वी के लगभग विष्णुशर्मा द्वारा राजनीतिक विचारों से युक्त 'पञ्चतन्त्र' की रचना की गई।<sup>१</sup> यह ग्रन्थ भी अर्थशास्त्र का सार रूप ही है। जैसा कि प्रस्तुत ग्रन्थ से स्पष्ट होता है।<sup>२</sup> इसके अनन्तर जैन लेखक सोमदेवसूरि (६६० ई०) का 'नीतिवाक्यामृतं' भी पूर्व रचित राजनीतिक विचारों का संक्षिप्त रूप है।

एक हजार ई० के लगभग राजनीति विषयक सिद्धान्तों के अनेकानेक स्वतन्त्र ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। 'शुक्रनीति' (आठवी शताब्दी ई०) राजनीति का अगला कार्य है। यह शासन सम्बन्धी विचारों की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है। यह राजा, मन्त्री एवं अन्य अधिकारियों के कर्तव्यों का विवेचन करता हुआ विदेश नीति, युद्ध, न्याय आदि से सम्बन्धित विचारों को प्रस्तुत करता है। राजनीतिक विचारों को प्रस्तुत करने वाला एक अन्य ग्रन्थ 'वाहंस्पत्य अर्थशास्त्र' है। यह भी पूर्व विचारों का ही विवेचन करता है।

पुराणों में भी राजनीति विषयक पर्याप्त विचार पाये जाते हैं। अग्निपुराण, गरुडपुराण, मत्स्यपुराण, मार्कण्डेयपुराण आदि में कथाओं के माध्यम से राजनीतिक विचारों का उल्लेख है। लेकिन इनमें कोई मौलिकता नहीं है।

१००० ई० से १७०० ई० तक नीति और धर्म विषयक अनेक पुस्तकों विरचित हुईं। इनमें राजनीति सम्बन्धी विचार भी पाये जाते हैं। इस समय के राजनीति सम्बन्धी महत्वपूर्ण ग्रन्थ मुख्य रूप से निम्नलिखित हैं—सोमेश्वर का 'अभिलाखितार्थं चिन्तामणि'

१. सस्कृत साहित्य की रूपरेखा पृष्ठ, ३२२

२. सकलार्थजास्त्रसारं जगति समालोक्य विष्णुशर्मोदसम् ।

तन्त्रे: पञ्चभिरेतत्त्वकारं सुमनोहरं शास्त्रम् ।

(प्रथम चार अध्याय), भोज का 'युवितकल्पतरु' (१०२५ ई०), लक्ष्मीधर का 'राजनीतिकल्पतरु' (११२५ ई०) अनन्भट्ट की नीति चन्द्रिका (१२०० ई०), देवनभट्ट का 'राजनीतिकाण्ड' (१३०० ई०), चण्डेश्वर का 'राजनीतिरत्नाकर' (१३२५ ई०), नीलकण्ठ का 'नीतिमयूख' (१६२५ ई०) और मित्रमिथ का 'राजनीति प्रकाश' (१६५० ई०)। इन सभी में राजनीति की अपेक्षा परमार्थ सम्बन्धी विचारों का उल्लेख अधिक है। लेकिन फिर भी राजा, मंत्री, दुर्ग, कोष एवं गृह और विदेशनीति आदि से सम्बन्धित विचारों का वर्णन राजनीति की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।<sup>१</sup>

धर्मसूत्र एवं स्मृतियों में भी राजनीतिक विचारों का विवेचन है। यद्यपि यह ग्रन्थ धार्मिक दृष्टि से लिखे गये हैं परन्तु इनमें भी राज्य व्यवस्था एवं राजा से सम्बन्धित कार्य-कलापों का विस्तृत विवेचन है।

### संस्कृत के काव्यों एवं नाटकों में राजनीति—

संस्कृत के काव्यों एवं नाटकों में भी राजनीतिक विचारों का समावेश है। 'प्रतिज्ञायोगन्धरायण' (भास, चौथी शताब्दी ई० पूर्व), रघुवंश और मालविकाग्निमित्र (कालिशास, प्रथम शताब्दी ई० पूर्व), हितोपदेश (नारायण पण्डित, चौदहवी शताब्दी ई०), कादम्बरी और हृष्णचरितम् (वाणभट्ट, ७वीं शताब्दी ई०), दशकुमारचरित (दण्डी, ६वीं शताब्दी ई०), राजतरच्छिणी (कल्हण, १२वीं शताब्दी ई०), किरातार्जुनीयम् (भारवि ६वीं शताब्दी ई०), शिशुपालवध (माघ, ७वीं शताब्दी ई०), आदि ग्रन्थों में राजनीतिक विचारों का उल्लेख है।

संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में भी राजनीतिक विचार दृष्टिगोचर होते हैं। आचारण सूत्र (प्राकृत भाषा में लिखित), दीर्घनिकाय, चुल्लवग्ग, दिव्यावदान और

१. स्टेट एण्ड गवर्नमेंट इन एन्डवन्ट इन्डिया, पृ० २०

जातक (पालि भाषा में विरचित) भी प्राचीन भारतीय राजनीति विषयक सामग्री का उल्लेख करते हैं।

### शिलालेखों एवं मुद्राओं में राजनीति—

प्राचीन भारत के ताम्रपत्र और शिलालेख भी राजनीतिक सिद्धान्तों का उल्लेख करने के कारण अपना महत्व रखते हैं। यह राज्य के कार्यों के विषय में विचार व्यवत् करते हैं। इनमें अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों के विषय में भी निर्देश मिलते हैं।

प्राचीन मुद्रायें भी प्राचीन भारतीय राजनीति के विषय में उल्लेख करती हैं। शिवि, मालव, अर्जुनायन, कुण्ड, योधेय इत्यादि गणतन्त्रों का अस्तित्व मुद्रा लेखों से स्पष्ट सिद्ध हो जाता है।<sup>१</sup>

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में स्वतन्त्र रूप से तथा साहित्य के माध्यम से राजनीतिक विचार विशद रूप से वर्णित हैं।

### राजनीति सम्बन्धी आलोचनात्मक कार्य—

राजनीति विषयक मूल कार्य के अतिरिक्त तत्सम्बन्धी आलोचनात्मक कार्य भी प्रचुरता से प्राप्त होता है। यह कार्य अब और तीव्र गति से हो रहा है। संस्कृत साहित्य के राजनीतिक विचारों से सम्बन्धित मूल ग्रन्थों एवं साहित्य ग्रन्थों-वेदों, ब्राह्मणों, (ब्राह्मण ग्रन्थों), आख्यानों, स्मृतियों, पुराणों, काव्यों एवं नाटकों आदि में वर्णित राजनीतिक विचारों को आधार मानकर विद्वानों ने राजनीति सम्बन्धी आलोचनात्मक कार्य करके प्राचीन भारत की राजनीति पर प्रकाश डाला है। यह कार्य भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने किया है।

पाश्चात्य विद्वानों की यह धारणा थी कि भारतीयों में राजनीतिक विचारों की कमी है। तथ्य को न जानते हुये पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीयों में इस कमी का उल्लेख किया है। प्रो. डनिंग ने अपने कार्य 'ए हिस्ट्री ऑफ पोलिटिकल थोरीज, एन्थ्रेन्ट

१. प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, पृ० १८

एष्ट मिडिवल' की भूमिका में लिखा है कि पूर्ववर्ती आयों ने अपनी राजनीति को अध्यात्म विचार और परमार्थ विचार के बातावरण से, जिसमें वह आज दबी हुई है, कभी मुक्त नहीं किया।<sup>१</sup> इसी प्रकार १४६६ ई० में प्रो० मंक्समूलर ने 'हिस्ट्री आफ एन्ड्रेन्ट संस्कृत लिटरेचर' (पृष्ठ ३०, ३१) में लिखा है कि, 'भारतीयों ने राष्ट्रीयता की भावना को कभी नहीं जाना हिन्दुओं का देश दाशनिकों का देश था। ऐसे ही ग्रन ने भारतीयों को राजनीति पर आरोप लगाते हुये लिखा है कि पूर्वीराज्य मुख्यतः कर एकत्रित करने वाली संस्थायें हैं।<sup>२</sup> सेनार्ट ने भारतीयों को राज्य या पितृभूमि के प्रति विचारों से रहित कहा है। उनके मत से भारतीयों के विचार राजनीतिक संविधान का विस्तार नहीं कर सके।<sup>३</sup> उपर्युक्त विद्वानों के विचारों से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय लोगों का राजनीतिक सिद्धान्तों पर कोई योगदान नहीं है। लेकिन उनके यह विचार निर्मूल है। उपर्युक्त विद्वानों के द्वारा भारतीय शास्त्रों का सम्यक् अध्ययन न किये जाने के कारण ही यह विचार प्रकट किये गये हैं। इन विद्वानों के कथन भारतीयों के लिये चेतावनी के कारण बने और भारतीय विद्वानों का ध्यान राजनीति के कार्य की ओर गया। १६वीं शताब्दी के अन्तिम तीन दशकों में भगवान लाल इन्द्राजी, आर० जी० भण्डारकर, आर० एल० मित्र एवं बी० जी० तिलक ने उपर्युक्त विद्वानों के कथनों को निर्मूल सिद्ध किया। 'इन विद्वानों ने अपने देश के अतीत इतिहास का अनेक रूपों में अनुसंधान के द्वारा अपने समय की, अपने देश की राजनीतिक और सामाजिक प्रगति के लिए एक सशक्त स्थिति बनाने का

१. सम आस्पेक्ट आफ एन्ड्रेन्ट हिन्दू पौलिटो, डा० डी० आर० भण्डारकर, पृ० १

२. द स्टेट इन एन्ड्रेन्ट इण्डिया—वेनी प्रसाद, पृ० ४६८

३. उद्घृत आस्पेक्ट आफ पौलिटिकल प्रायिडियाज एष्ट इन्स्टीट्यूशन्स इन एन्ड्रेन्ट इण्डिया, पृ० २

प्रयास किया।<sup>१</sup> इसी समय भारतीय अतीत के विषय में अनुसंधान प्रारम्भ हुआ।

१८९४ में पी० एन० सिंह ने एक लेख में स्पष्ट किया कि प्राचीन भारत में शासन के तरीकों के विषय में अज्ञानता के कारण लोगों के ध्रामक विचार है।<sup>२</sup> इसी तथ्य को लेकर ए० सी० दास ने एक लेख में अपने विचार व्यक्त किये, 'अंग्रेजी शासन की अपेक्षा प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन अच्छा था।'<sup>३</sup>

१९०१ ई० में कौटिल्य के अर्थशास्त्र की खोज के फलस्वरूप एवं १९०६ में साम शास्त्री द्वारा इसे प्रकाशित कराये जाने पर प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों की खोज प्रारम्भ हुई। इसके फलस्वरूप प्राचीन भारतीय राजनीति का वर्णनात्मक और आलोचनात्मक योगदान प्रारम्भ हुआ। इस समय के० पी० जायसवाल के द्वारा प्राचीन भारतीय राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया गया एवं १९२४ ई० में भारतीय राजनीति के ऊपर 'हिन्दू पालिटी' नामक महत्वपूर्ण पुस्तक सामने आई। इस पुस्तक में प्राचीन भारत में प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली के प्रचलन एवं उसके महत्व पर प्रकाश ढाला गया।

सन् १९१६ ई० से १९२५ ई० तक प्राचीन भारतीय राजनीति पर महत्वपूर्ण शोध कार्य किये गये। प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारों पर अनेक लेख एवं पुस्तकें लिखी गईं। सन् १९१६ ई० में पी० एन० बनर्जी की 'पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन एन्डियन इंडिया' प्रकाशित हुई। इसमें प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था को

१. आर्सपैक्टस आफ पोलिटिकल आयिडियाज एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स इन एन्डियन इंडिया, पृ० २-३

२. वही, पृ० ३

३. आर्सपैक्टस आफ पालिटिकल आइडियाज एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स इन एन्डियन इंडिया, पृ० ४

संवेदानिक कहा गया। इसी समय के० बी० रंगस्वामी आयन्गर का, 'सम आस्पैक्टस आफ एन्ड्यन्ट इण्डियन पालिटी' प्रकाश में आया। सन् १९१८ ई० में आर० सी० मजूमदार ने अपने कार्य 'कारपोरेट लाइफ इन एन्ड्यन्ट इण्डिया' में स्पष्ट किया कि प्राचीन भारत में राजनीतिक संस्थायें उन्नत अवस्था में थीं। सन् १९२० ई० में एन० एन० ला की 'इन्टर स्टेट रिलेशन्स इन एन्ड्यन्ट इण्डिया' प्रकाश में आई।<sup>१</sup> सन् १९२१ ई० में एन० एन० ला ने अपनी द्वितीय पुस्तक, 'आस्पैक्टस आफ एन्ड्यन्ट इण्डियन पालिटी', में प्राचीन हिन्दू राजनीति में धर्म के रूप पर विस्तृत रूप से विचार प्रस्तुत किये। सन् १९२२ ई० में बी० के० सरकार की 'पालिटिकल इन्स्टीट्यूशन्स एण्ड श्योरीज आफ दी हिन्दूज' प्रकाशित हुई। प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने राजनीति पर धर्म के प्रभाव को बताते हुये स्पष्ट किया कि हिन्दू राज्य 'धर्म' से संचालित थे। सन् १९२३ ई० में य० एन० धोधल की 'हिन्दू आफ हिन्दू पालिटिकल श्योरोज' प्रकाशित हुई। धोधल ने पाश्चात्य लेखकों के भारतीय राजनीति विषयक भ्रामक विचारों का खण्डन किया।<sup>२</sup>

सन् १९२५ ई० में डी० आर० भण्डारकर ने अपने व्याख्यानों, 'सम आस्पैक्टस आफ एन्ड्यन्ट हिन्दू पालिटी' में डनिंग, मंबसमूलर और ब्लूमफील्ड के मतों को उधृत करते हुये उनका खण्डन किया। उन्होंने कहा कि डनिंग को पूर्वी देशों के विषय में ज्ञान नहीं। भण्डारकर के यह व्याख्यान सन् १९२६ में पुस्तक के रूप में प्रकाश में आये।<sup>३</sup> तत्पश्चात बी० आर० आर० दीक्षितार ने अपना शोध कार्य 'हिन्दू एडमिलिस्ट्रेटिव इन्स्टीट्यूशन्स' १९२७ में पूर्ण किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्राचीन भारत में राष्ट्रीयता

१. प्राचीन भारत में राज्य योर न्यायपालिका, पृ० ३३६

२. आस्पैक्टस आप पालिटिकल प्राइडियाज एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स इन एन्ड्यन्ट इण्डिया, पृ० ७-८।

३. वही, ८

और देश भवित की कमी न थी, दिग्बिजय इसके प्रमाण है।<sup>१</sup>

इसी प्रकार से प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन और अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के विषय में भी विद्वानों ने आलोचनात्मक कार्य प्रस्तुत किया। आर० के० मुकर्जी का, 'लोकल गवर्नेंट इन एन्ड यन्ट इण्डिया' ग्रामीण और केन्द्रीय शासन से सम्बन्धित राजनीतिक कार्य प्रकाश में आया। इसी प्रकार का पी० एन० बनर्जी का, 'इन्टरनेशनल ला एण्ड कस्टम इन एन्ड यन्ट इण्डिया' कार्य भी प्रकाशित हुआ। उनके मत से प्राचीन भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के विषय में निश्चित नियमों का ज्ञान रखते थे।<sup>२</sup> सन् १६२५ ई० में एस० बी० विश्वनाथ का 'इन्टरनेशनल ला इन एन्ड यन्ट इण्डिया' इस बात को स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारतीय युद्ध के नियमों से अवगत थे।<sup>३</sup> सन् १६२५ ई० और १६३० ई० के मध्य प्राचीन भारतीय राजनीति पर प्रचुर कार्य हुआ। सन् १६२७ ई० में एन० सौ० बंदोपाध्याय की दो पुस्तकें 'डबलमेंट आफ हिन्दू पालिटो एण्ड पालिटिकल थ्योरीज' तथा 'कोटिल्य' प्रकाश में आई। प्रथम पुस्तक में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि प्राचीन भारत में अत्याचारों शक्ति को स्थान नहीं था। 'कोटिल्य' पुस्तक में उन्होंने यह उल्लेख किया कि कोटिल्य एक सच्चे राष्ट्रीय राजा को आशा के स्वप्न देखते थे।<sup>४</sup> सन् १६२८ ई० में बेनी प्रसाद की 'स्टेट इन एन्ड यन्ट इण्डिया' तथा 'गवर्नर्मेन्ट इन एन्ड यन्ट इण्डिया', ये दो पुस्तकें प्रकाश में आई। सन् १६३१ में एस० के० आयग्नार ने अपनो 'एबोल्यूशन आफ हिन्दू एडमिनिस्ट्रेटिव इन्स्टीट्यूशन्स इन साउथ इण्डिया में शासन के सिद्धान्तों की विवेचना की। सन्

१. वही, पृ० ८-९

२. वही, पृ० ६-१०

३. वही, पृ० १०

४. वही, पृ० १०

१६२६ ई० में एक महत्वपूर्ण कार्य 'कन्ट्रोव्यूशन्स टू द हिस्ट्री आफ दि हिन्दू रेवेन्यू सिस्टम' य० एन० धोधल का प्रकाश में आया इन्होंने प्राचीन काल के कर विषयक सिद्धान्तों के विषय में प्रकाश डाला।<sup>१</sup>

इसी तारतम्य में आगे भी भारतीय राजनीति पर आलोचनात्मक कार्य होता रहा। सन् १६३२ में बी० आर० आर० दीक्षितार का 'मीर्यन पालिटी' प्रकाशित हुआ।<sup>२</sup>

सन् १६३८ ई० में प्राचीन भारतीय राजनीति विषयक एच० एन० सिन्हा का कार्य 'सोवेरन्टी इन एन्ड्यन्ट इण्डियन पालिटी' प्रकाश में आया एवं सन् १६४१ ई० में पी० सी० धर्मा का 'रामायण पालिटी' प्रकाशित हुआ।<sup>३</sup> इस प्रकार अब भारतीय राजनीति के एक-एक पक्ष को लेकर कार्य प्रारम्भ हुआ। सन् १६४१ ई० में के० ए० नीलकण्ठ शास्त्री का 'द प्लेस आफ अर्थशास्त्र इन द हिस्ट्री आफ इण्डियन पालिटी' प्रकाशित हुआ। सन् १६४४ ई० में जगदीशलाल शास्त्री का 'पालिटिकल थॉट इन पुराणाज' सन् १६३२ ई० में के० नीलकण्ठ शास्त्री का 'स्टडीज इन चोल हिस्ट्री एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन' तथा 'दिथ्योरी आफ प्री मुस्लिम इण्डियन पालिटी', सन् १६३४ ई० में आर० डी० बनर्जी का 'इन्टर नेशनल ला एण्ड कस्टम इन एन्ड्यन्ट इण्डिया', सन् १६३७ में पी० सी० रामस्वामी का 'इण्डियन पालिटिकल थ्योरीज' सन् १६४६ में एस० एस० आलतेकर का 'स्टेट एण्ड गवर्नेंट इन एन्ड्यन्ट इण्डिया', सन् १६५२ ई० में बी० आर० आर० दीक्षितार का 'द गुप्ता पालिटी', सन् १६५३ ई० में एम बी० कृष्णा राव का 'स्टडीज इन कौटिल्य', सन् १६५० ई० में एच० सी० चौधरी का'

१. वही, प० ११

२. वही, प० २४५

३. रामायण कालीन संस्कृति, प० ५

पालिटिकल हिस्ट्री आफ एन्ड्यन्ट इण्डिया', सन् १९५८ ई० में एच० एल० चटर्जी का' इन्टरनेशनल ला एण्ड इन्टर स्टेट रिलेशन्स इन एन्ड्यन्ट इण्डिया', सन् १९५६ ई० में आर० एस० शर्मा का आस्पैक्ट्स आफ पौलिटिकल आइडियाज एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स इन एन्ड्यन्ट इण्डिया,' सन् १९६३ ई० में भास्कर सालेतोरे का 'एन्ड्यन्ट इण्डियन पालिटिकल थाट एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स,' सन् १९६५ ई० में वी० वी० मिश्र का 'पालिटी इन अग्निपुराण,' सन् १९६५ ई० में हरिहर नाथ त्रिपाठी का 'प्राचीन भारत में राज्य और न्यायपालिका, सन् १९७१ ई० में डा० रामाश्रम शर्मा का 'ए सोस्यो-पालिटिकल स्टडीज आफ द वाल्मीकि रामायण आदि राजनीति विषयक कार्य प्रकाश में आया। इसी प्रकार से राजनीतिक विषयक कार्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है। राजनीति विषयक इस आलोचनात्मक कार्य के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीयों में राजनीतिक विचारों के प्रति जागरूकता प्रारम्भ से ही थी एवं उन्हें राजनीति सम्बन्धी पर्याप्त ज्ञान था।

### राजनीति और वाल्मीकि रामायण—

काव्य किसी कथा के माध्यम से समाज से सम्बन्धित विभिन्न तत्त्वों का ज्ञान कराने में समर्थ होता है। वाल्मीकि रामायण में राम कथा के माध्यम से तत्कालीन भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, राजनीति आदि के विषय में विस्तार से विचार प्रस्तुत किये गये हैं। यह कृति मुख्य रूप से राजाओं के कार्यकलापों से सम्बन्धित है। राजाओं के कार्यकलापों का आधार राजनीति होती है। अतः प्रस्तुत कृति में राजनीतिक विचारों का विशदतया उल्लेख है। रामायण में राजा, अधिकारीवर्ग, सामन्त, प्रजा और यहां तक कि कृषि मुनि भी राजनीति के प्रभाव से प्रभावित हैं। सम्पूर्णकृति में यत्र तत्र राजनीतिक विचार विख्याते पड़े हैं। इसमें निम्नलिखित स्थल राजनीति की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं—

- (१) राम का भरत के प्रति राजनीतिक उपदेश।<sup>१</sup>
- (२) प्रजा का वृत्तान्त जानने में असावधान रहने के कारण सूर्पनखा द्वारा रावण के प्रति उक्ति।<sup>२</sup>
- (३) राजनीति के सही रूप को प्रस्तुत करते हुये मारीच का रावण के प्रति कथन।<sup>३</sup>
- (४) हनुमान् की रावण के प्रति उक्ति।<sup>४</sup>
- (५) विभीषण का रावण के प्रति निवेदन एवं माल्यवान् का रावण से कथन।<sup>५</sup>
- (६) कुम्भकरण की रावण से वार्ता।<sup>६</sup>
- (७) विभीषण द्वारा प्रहस्त आदि मन्त्रियों को निर्देश।<sup>७</sup>

इन स्थलों के अतिरिक्त उत्तरकाण्ड के भी कुछ स्थल राजनीतिक विचारों को प्रस्तुत करते हैं जो कि राजनीतिक दृष्टि से महत्त्व रखते हैं।

रामायण में राजनीतिक तत्त्वों के विशद विवेचन को दृष्टि में रखते हुए प्रस्तुत शोध कार्य किया गया है।

प्रस्तुत कार्य का आधार ग्रन्थ, 'धीमद्वाल्मीकि रामायण' (तीन भागों में प्रकाशित, सम्बत् १६६२), प्रकाशन—स्टीमप्रेस, कल्याण, 'बम्बई' है।

१. वा० रा० २-१००

२. वा० रा० ३-३३

३. वा० रा० ३-३७, ३८, ४१

४. वा० रा० ५-५१

५. वा० रा० ६-३५-६, वा० रा० ६-६, १०. ग्राहि

६. वा० रा० ६-१२

७. वा० रा० ६-१४

## प्रथम अध्याय

# वाल्मीकि और रामायण

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि—

स्वार्थ-लिप्सा एवं भोग आदि इच्छाओं के प्रति उदासीनता एवं फल की इच्छा न करते हुए सत्कर्म में प्रवृत्ति मनुष्य की श्रेष्ठता का प्रतीक है। ऐसे व्यक्ति धन के तो अनिच्छुक रहते ही हैं, साथ ही साथ यश की उपेक्षा करते हैं। ऐसे ही महाविभूतियों में महाकवि वाल्मीकि का नाम आता है। महर्षि वाल्मीकि ने राम के समय के भारत का सम्पूर्ण चित्र अपनी कृति में चित्रित किया है। उन्होंने इस विशाल देश के सम्पूर्ण राज्यों के विषय में, उनकी स्थिति के विषय में, उनमें निवास करने वाले प्राणियों के विषय में, विभिन्न जातियों की सभ्यता, संस्कृति, राजनीति आदि के विषय में विवेचन किया, लेकिन अपने विषय में, अपने समय, कुल, व्यक्तित्व आदि के विषय में संकेत भी नहीं दिया। अपनी इस निलिप्तता के कारण महर्षि एक महान् आदर्श व्यक्ति तो हैं लेकिन उनके जीवन का विषय हमारे लिए एक विवाद का विषय बना हुआ है।

मेरा विषय रामायण में राजनीतिक तत्वों का विवेचन करना है। अतः विषय से सम्बन्धित कृति 'रामायण' के रचयिता महर्षि वाल्मीकि के जीवन और समय के विषय में किञ्चित् विचार प्रस्तुत करना आवश्यक हो गया है। महर्षि वाल्मीकि के समय की संस्कृति, सभ्यता, आधिक, धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति आदि के परिज्ञान के लिये न तो तत्कालीन शिलालेख या अन्य कोई साहित्यिक सामग्री ही प्राप्त है और न तत्कालीन इतिहास ही प्राप्त है। वाल्मीकि

रामायण ही इसके लिए एक मात्र प्रामाणिक ग्रन्थ है। अस्तु रामायण में निर्दिष्ट सामग्री एवं आलोचकों द्वारा प्रस्तुत प्रमाणों के अनुसार आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के समय और जीवन के विषय में विचार प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। वाल्मीकि की कृति रामायण में उनके समय और जीवन के विषय में निम्नलिखित संकेत प्राप्त होते हैं—

(१) बालकांड के प्रथम सर्ग में उल्लेख है कि नारद से मुनिपुंगव वाल्मीकि ने अपने समय के श्रेष्ठ गुणों से युक्त नर के विषय में प्रश्न किया।<sup>१</sup>

(२) नारद वाल्मीकि से कहते हैं कि राजा राम श्रेष्ठ गुणों से युक्त है<sup>२</sup> एवं इस समय वे राज्यारूढ़ हैं।

(३) नारद का कथन है कि राम करोड़ों गायें दान देकर ब्रह्मलोक को जायेंगे।<sup>३</sup>

(४) नारद के देवलोक प्रस्थान कर जाने के पश्चात् वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर पहुँचे, जो श्री गङ्गा से थोड़ी दूरी पर थी।<sup>४</sup>

(५) ब्रह्मा की प्रेरणा से वाल्मीकि ने राम के चरित्र को रचना की।<sup>५</sup>

(६) बनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता तीनों वाल्मीकि के आश्रम में गये। वहाँ वाल्मीकि ने उनका स्वागत किया।<sup>६</sup>

१. वा० रा० १।१।१, ५

२. वा० रा० १।१।७ आदि

३. गवीं कोट्यपुतं दस्वा ब्रह्मलोकं यमिष्यति । वा० रा० १।१।६२

४. स मृदूर्तं गते तस्मिन्देवलोकं मुनिस्तदा, जगाम तमसातीरं जान्हव्या-स्त्वविद्वरतः । वा० रा० १।२।३

५. वा० रा० १।२।३२, ३३

६. वा० रा० २।५।६।१६, १७

(७) रामायण के उत्तर-काण्ड में वाल्मीकि के निवास स्थान का निर्देश है। वे गङ्गा के पार तमसा के तट पर आश्रम में रहते थे।<sup>१</sup>

(८) वाल्मीकि राजा दशरथ के सखा कहे गये हैं।<sup>२</sup>

(९) राम के द्वारा परित्यक्ता सीता वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ दी गई।<sup>३</sup>

(१०) शत्रुघ्न ने वाल्मीकि के आश्रम में प्रस्थान किया।<sup>४</sup>

(११) सोता ने अपने पुत्रों को वाल्मीकि के आश्रम में उन्हीं के संरक्षण में जन्म दिया। सीता के पुत्रों, लव और कुश को वाल्मीकि ने राम कथा सिखाई और राम की सभा में राम को सीता के प्रति विश्वास उत्पन्न कराया।<sup>५</sup>

(१२) वाल्मीकि प्राचेतस (वरुण के पुत्र) थे।<sup>६</sup>

(१३) वाल्मीकि भूगवंशीय थे।<sup>७</sup>

इस प्रकार रामायण के वालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और उत्तर-काण्ड में महर्षि वाल्मीकि के जीवन एवं उनके कृतित्व से सम्बन्धित संकेत मिलते हैं।

उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट है कि—

(१) वाल्मीकि भूगवंशीय मुनि थे। वे प्राचेतस अर्थात् वरुण के पुत्र थे।

१. वा० रा० ७-४५।१७

२. राजो दशरथस्येष्टाः पितुर्मुनिपुनवः; सखा परमको विप्रो वाल्मीकि-  
स्यमहायशाः। वा० रा० ७।६७।१६

३. वा० रा० ७।४७।१४ प्रादि

४. वा० रा० ७।७।१।३

५. वा० रा० ७।६६।१६ प्रादि

६. वा० रा० ७।६६।१६

७. वा० रा० ७।६४।२६

- (२) वाल्मीकि तमसा नदी के किनारे आश्रम में रहते थे ।
- (३) वे राम के समकालीन थे ।
- (४) उन्होंने कभी पाप नहीं किया ।

रामायण से प्राप्त उपर्युक्त संकेतों से वाल्मीकि के जीवन के विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त नहीं होता है । उनके समय के विषय में इतना संकेत अवश्य मिलता है कि वे राम के समकालीन थे । इनके चरित्र के विषय में, 'मनसा, कर्मणा, वाचा भूतपूर्व न किल्विषम्,' से स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि होने के पूर्व के जीवन में भी डाकू या कुकृत्य करने वाले वे नहीं थे, जैसा कि इस विषय में उनसे सम्बन्धित लोक कथायें प्रचलित हैं ।

वाल्मीकि के विषय में रामायण में उल्लिखित सामग्री के अतिरिक्त विद्वानों एवं आलोचकों के मतानुसार निम्नलिखित साक्ष्य हैं—

(१) डा० फादर कामल बुल्के के अनुसार वाल्मीकि के विषय में प्रामाणिक वाल्मीकि कृत रामायण में कुछ भी सामग्री नहीं मिलती ।<sup>१</sup> वाल्मीकि के विषय में जो डाकू होने की बात प्रचलित है, उसके विषय में डा० बुल्के ने लिखा है कि 'वाल्मीकि के डाकू होने और इसके बाद तपस्वी बनने की जो कथायें आगे चलकर प्रचलित हो गई हैं उनका मूल स्रोत सम्भवतः महाभारत में देखा जा सकता है ।'<sup>२</sup> डा० फादर बुल्के ने वाल्मीकि के जीवन और समय के विषय में निश्चित मत प्रस्तुत नहीं किया ।

(२) अध्यात्म रामायण में वाल्मीकि के डाकूवृत्ति को धारण करने, तत्पश्चात् वेराग्य हो जाने से तपस्वी होने और तप करते हुये वलि वल्मीकि से निकलने के कारण वाल्मीकि के नाम से

१. मनसा कर्मणा वाचा भूतपूर्व न किल्विषम् । वा० रा० ७।६।२१

२. राम कथा, पृष्ठ ३७

३. राम कथा, पृष्ठ ३८

अभिहित होने का उल्लेख है।<sup>१</sup> परन्तु इससे उनके निश्चित समय का और जीवन के विषय का ज्ञान नहीं होता है।

(३) अध्यात्म रामायण की उपर्युक्त कथा आनन्द रामायण में भी मिलती है।<sup>२</sup> परन्तु इससे भी अभीष्ट की सिद्धि नहीं होती।

(४) कृतिकाव्यास कृत रामायण में वाल्मीकि का प्रारम्भिक नाम रत्नाकर बताया गया है। उन्हें व्यवन का पुत्र भी कहा है।<sup>३</sup> वाल्मीकि का यह परिचय भी अपूर्ण है।

(५) डा० नानूराम व्यास ने वाल्मीकि के विषय में रामायण में उल्लिखित संकेतों के आधार पर यह विचार प्रस्तुत किया है कि 'वाल्मीकि' के जीवन सम्बन्धी इस सामग्री की प्रामाणिकता संदिग्ध है। स्वयं रामायण में उनके विषय में जो उल्लेख आये हैं वे मौलिक नहीं माने जाते। वाल्मीकि-नारद सम्बाद और क्रीड़च वध के प्रसंग किसी दूसरे के द्वारा लिखे हुये हैं। चित्रकूट के निकट राम-वाल्मीकि की भेट का उल्लेख भी रामायण के केवल दाक्षिणात्य पाठ में पाया जाता है। आधुनिक अन्वेषक वाल्मीकि को राम का समकालीन नहीं मानते।<sup>४</sup> डा० व्यास अन्यत्र लिखते हैं कि भले ही वाल्मीकि आधुनिकों की सम्मति में राम के समकालीन न रहे हों, फिर भी अन्य रामायणों की तुलना में वे राम राज्य की परम्पराओं और लोक श्रुतियों के अधिक निकट थे।<sup>५</sup>

डा० व्यास के उपर्युक्त कथन से भी महर्षि वाल्मीकि के निश्चित समय का ज्ञान नहीं होता है। इतना अवश्य स्पष्ट होता

१. अध्यात्म रामायण २१६।४२, ८८

२. आनन्द रामायण, राज्यकाण्ड, अध्याय १४

३. कृतिकाव्य रामायण, पृष्ठ २

४. रामायण कालीन समाज, पृ० ५, ६

५. रामायण कालीन संस्कृति पृ० २

है कि महर्षि वाल्मीकि यदि राम के समकालीन नहीं थे तो भी वे राम के समय के कुछ ही समय पश्चात् रहे होंगे।

**वस्तुतः** रामायण से ही वाल्मीकि के विषय में स्पष्ट ज्ञान हो सकता है। भले ही वाल्मीकि के जीवन और समय से सम्बन्धित अंश रामायण में प्रक्षिप्त ही वर्णों न हो, वे मूल कृति से बहुत बाद के नहीं हो सकते, अतः वाल्मीकि के विषय में वे ही रथल अधिक प्रामाणिक हैं।

वाल्मीकिरामायण में वाल्मीकि को राम के समकालीन कहा गया है। राम के समय के विषय में भी विद्वानों के विभिन्न मत हैं। पुराण विशेषज्ञ पार्जिटर के अनुसार राम का समय १६०० वर्ष ईस्वी पूर्व माना गया है।<sup>१</sup> अतः वाल्मीकि का समय राम के समकालीन मानने से या तो १६०० वर्ष ई० पूर्व माना जा सकता है या किञ्चित् बाद का। आज रामायण का जो स्वरूप है उसके अनुसार वाल्मीकि का समय इतने बाद का नहीं हो सकता, वर्णोंकि रामायण अनेक वर्णों में प्रक्षिप्त अंशों से युक्त होकर यह स्वरूप प्राप्त कर सकी।

अस्तु मूल रामायण और प्रक्षिप्तांशों सहित सम्पूर्ण रामायण के समय के विषय में आगे होने वाली चर्चा से मूल रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि के समय का अनुमान किया जा सकता है।

### वाल्मीकि का व्यक्तित्व और कृतित्व

#### वाल्मीकि का व्यक्तित्व—

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के जीवन और समय के विषय में भले ही पूर्ण ज्ञान न हो, उनकी कृति रामायण उनके व्यक्तित्व को स्पष्ट कर देती है। वे श्रेष्ठ कृषि, आदि कवि, बुद्धिमान् पंडित,

१. उद्धृत, रामायण कालीन संस्कृति, पृ० ५

लोक कल्याण के इच्छुक, उपस्थी, नीतिज्ञ, दयालु, कर्तव्यनिष्ठ, धर्मज्ञ, आर्य संस्कृति के रक्षक एवं आदर्श राज्य को स्वापना के लिये प्रेरणा के श्रोत के रूप में अपनी कृति के माध्यम से हमारे समक्ष आते हैं। महर्षि वाल्मीकि के व्यक्तित्व के विषय में कुछ साहित्यकारों एवं आलोचकों के भत निम्नाङ्कृत हैं—

महाकवि कालिदास ने “कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्-पूर्वसूरिभिः”<sup>१</sup> लिखकर वाल्मीकि को बाणी का द्वार खोलने वालों में अग्रगण्य अर्थात् आदि कवि एवं कवियों के मार्ग-दर्शक के रूप में माना है।

प्रसिद्ध काव्य शास्त्री आनन्दवर्धनाचार्य ने महर्षि वाल्मीकि को शोक एवं इलोक का समीकरण करने वाला श्रेष्ठ समालोचक माना है।<sup>२</sup>

बाचस्पति गेरोला ने वाल्मीकि के विषय में लिखा है कि ‘वे आदि कवि, महाकवि, धर्माचार्य और सामाजिक जीवन की वारीकियों के ज्ञाता सभी कुछ एक साथ थे वे गम्भीर आलोचक भी थे।’<sup>३</sup>

डा० नानूराम व्यास ने लिखा है कि ‘वाल्मीकि क्रृष्ण समाज के अग्रगण्य तपस्थी, साधक, वेद वेदांगों के परिनिष्ठित विद्वान्, रस सिद्ध कवीश्वर, तत्कालोन भारत के मानचित्र के सम्यक् ज्ञाता, सामाजिक प्रथाओं एवं मर्यादाओं के संस्थापक और व्याख्याकार सत्य और न्याय के समर्थक, धर्म के स्तम्भ एवं लोकानुरक्षण के प्रबल हिमायती थे।’<sup>४</sup>

अस्तु भारतीय संस्कृति एवं धर्म के रक्षक के रूप में अपनी कृति के माध्यम से महर्षि वाल्मीकि आज भी प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व की प्रतिमा बन कर हमारे समक्ष उपस्थित है।

१. रघुंशमहाकाव्यम्, प्रथम सर्ग, इलोक ४

२. इवन्यालोक १।१८

३. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ० २०२

४. रामायण कालोन समाज, पृ० ६

### वाल्मीकि का कृतित्व—

वाल्मीकि ने एक ही कृति रामायण की रचना की है। रामायण में उल्लेख है कि वाल्मीकि ने रामायण काव्य रचने का संकल्प किया।<sup>१</sup>

रामायण में सात खण्ड हैं। वे इस प्रकार है—वालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किञ्चिन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड, एवं उत्तरकाण्ड। इस कृति में २४००० इलोक, ५०० सर्ग<sup>२</sup> एवं १०० उपाख्यान हैं।<sup>३</sup>

### रामायण का नामकरण—

रामायण पद रामस्य अयनम् से निर्मित है। रामायण का अर्थ राम का मार्ग या राम के जीवन मार्ग को प्रकाशित करने वाला काव्य रामायण है।

### रामायण का विषय—

रामायण में राम के चरित्र का आधिकारिक कथा के रूप में वर्णन है। वाल्मीकि ने इस चरित्र का वर्णन-ब्रह्मा की प्रेरणा से किया है।<sup>४</sup> ब्रह्मा के निर्देशानुसार महर्षि वाल्मीकि ने राजसिंहासन पर आसीन राम का सम्पूर्ण चरित्र विचित्र पदों से युक्त काव्य में वर्णन किया।<sup>५</sup> महर्षि ने स्वयं लिखा है कि उन महात्मा इक्षवाकु वंश वाले

१. कृत्स्नं रामायणं काव्यमीदृशेः करवाण्यहम् । वा० रा० १।२।४१

२. चतुविंशत्सहस्राणि इलोकानामुवत्वानृषिः, तथा संग्रहताःपञ्च पट् काण्डानि तथोत्तरम् । वा० रा० १।४।२

३. सन्निवद्दं हि इलोकानां चतुविंशत्सहस्रकम्, उपाख्यानशतं चैव भार्गवेण तपस्विना । वा० रा० ७।६।४।२६

४. रामस्यचरितं कृत्स्नं कुरु त्वमूष्यिसत्तम् । वा० रा० १।२।३।१

एवं वतं कथय धीरस्य यथाते नारदाच्छ्रुतम् । वा० रा० १।२।३।२

एवं कुरु रामकथां पुण्यां इलोकवदां मनोरमाम् । वा० रा० १।२।३।५

५. प्राप्तंराजस्य रामस्य वाल्मीकिभगवानृषिः, चकार चरितं कृत्स्नं विचित्रपदमात्मवान् । वा० रा० १।४।१

एवं रघुवंशस्य चरितं चकार भगवानृषि । वा० रा० १।३।६

राजाओं के वंश में यह महा कथा उत्पन्न हुई है जो रामायण के नाम से जगत् में प्रसिद्ध है।<sup>१</sup> इस प्रकार इक्षवाकुवंशीय राम की कथा का वर्णन ही कवि का वर्ण्य विषय रहा है। इस प्रधान कथा से सम्बन्धित वानरों आदि की कथा को कवि ने प्रासङ्गिक कथा के रूप में अपनी कृति में वर्णन किया है।

### 'रामायण' आदि काव्य—

काव्य साहित्य का उत्तम अंग है। काव्य से मनुष्य को जैसा अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है वैसा और किसी प्रकार के साहित्य से नहों। आचार्य विश्वनाथ ने 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' से स्पष्ट किया है कि रसात्मक वाक्य ही काव्य है। इस दृष्टि से जब रामायण पर दृष्टिपात लिया जाता है, तब हम पाते हैं कि रामायण रसात्मक वित रचना है, अतः काव्य है। रामायण में इस कृति को स्वयं ही काव्य की संज्ञा दी गई है।<sup>२</sup>

रामायण संस्कृत भाषा के काव्यों में सबसे प्रथम रचना मानी जाती है अतः यह आदि काव्य भी है। वाल्मीकि रामायण में भी इस काव्य को आदि काव्य कहा गया है।<sup>३</sup> निषाद द्वारा कौञ्च पक्षी का वध किये जाने पर महिषि के मुख से जो नूतन छन्दमयी वाणी निःसृत हुई, वह इलोक या काव्य कहा गया है।<sup>४</sup> उक्त वाणी को काव्य या इलोक का रूप देने का, एवं पादबद्ध और लययुक्त समअक्षरमयी कहने का तात्पर्य भी यही है कि इस प्रकार की छन्दबद्ध रचना इससे पूर्व कभी नहीं हुई।

१. इक्षवाकुणामिदं तेषां राजां वंशे महात्मनाम्, महात्पन्नमाम्यानं रामायणमिति श्रुतम् । वा० रा० १।५।३

२. न ते वाग्नृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति । वा० रा० १।२।३५  
एवं काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्चरितं महत् १।४।७  
एवं वा० रा० १।२।४१

३. आदिकाव्यमिदं त्वाव्यंपरा वाल्मीकिना कृतम् ।

वा० रा० ६।१३।१। १०३

४. शोकातंस्य प्रवृत्तो मे इलोकोभवतु नाम्यथा । वा० रा० १।२।१८

वाल्मीकि रामायण के प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'इत्यार्षं श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदि काव्ये' ये शब्द रहते हैं।

रामायण आदि काव्य है इसको पुष्टि वाल्मीकि के बाद के कवियों ने भी की है। महाकवि कालिदास (ई० पू० प्रथम शताब्दी) ने रामायण को 'पहली कविता' के रूप में स्वीकार किया है।<sup>१</sup> करुण रस के कवि भवभूति (६वीं शताब्दी) ने रामायण को आदि काव्य स्वीकार करते हुये 'मा निषाद प्रतिष्ठां' पद को लक्ष्य करके 'उत्तर रामचरित' में लिखा है कि वेद से अन्यत्र भी छन्द का नया आविभाव हो गया।<sup>२</sup> भवभूति ने वाल्मीकि को आदि कवि की संज्ञा दी है।<sup>३</sup> आनन्दवर्धन (६वीं शताब्दी) ने अपनी कृति में वाल्मीकि को आदि कवि कहा है।<sup>४</sup>

रामचरित मानस की वृहत्टीका 'मानस पीयूष' में महर्षि की रचना रामायण और उनके विषय में उल्लेख है कि, 'यद्यपि लोक और वेदों में इनके पहले छन्दोवद्व वाणी का प्रचार पाया जाता है तथापि मनुष्यों के द्वारा काव्य और इतिहास की जैसी रचना होती है वैसी इनके पूर्व न थी। इस प्रकार की रचना इन्हीं से (वाल्मीकि से) प्रारम्भ हुई। इससे इनको आदि कवि कहा गया है।<sup>५</sup>

सभी आलोचकों ने भी वाल्मीकि को आदि कवि और उनकी कृति रामायण को आदि काव्य माना है। डा० रामस्वामी इस विषय में लिखते हैं कि वाल्मीकि निःसंदेह आदि कवि हैं, वे प्राचीन-

१. स्वकृति गापयामास कविप्रथमपद्धतिम्। रघुवंश महाकाव्यं १५।३३

२. आम्नायादन्यत्र नूतनश्छन्दसामवतारः। उत्तररामचरितम्, द्वितीय अंक, पू० ६०

३. आद्यः कविरसि। उत्तररामचरितम्, द्वितीय अंक, पू० ६१

४. छवन्यालोक, उद्योत १ एवं, काव्यस्यात्मा स एवायं तथा चादिकवेः पुरा। छवन्यालोक, १।१८.

५. मानसपीयूष (वालकाण्ड) खण्ड १ पू० ३।३

तम एवं श्वेष्ठतम कवि है।<sup>१</sup> अनेन प्रकारेण सर्वसम्मति से वाल्मीकि आदि कवि और उनकी कृति रामायण आदि काव्य के रूप में प्रतिष्ठित है।

### रामायण महाकाव्य है—

रामायण आदि काव्य के साथ-साथ महाकाव्य के लक्षणों से भी उपेत है। दृष्टि के काव्यादर्श के अनुसार महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक हो, उसका नायक धीरोदात्त प्रकृति का हो, जिसका लक्ष्य चर्तुर्वर्गफल की प्राप्ति हो। महाकाव्य अलङ्कृत, भावों एवं रसों से युक्त, दीर्घ, संग बढ़ एवं पञ्च सन्धियों से युक्त हो। उसमें मञ्जलाचरण एवं आशीर्वादात्मक वाक्य हो।<sup>२</sup> महाकाव्य के उपर्युक्त लक्षणों के अनुसार रामायण में महाकाव्य के सभी प्रमुख लक्षण विद्यमान हैं। जंसा कि डा० नानूराम व्यास ने लिखा है कि 'रामायण में महाकाव्य के सभी प्रमुख लक्षण, विषय की उदात्तता, घटनाओं का वंचित्यपूर्ण विन्यास तथा भाषा का सौष्ठव पाये जाते हैं।<sup>३</sup> अतः रामायण महाकाव्य की कोटि में आता है।

### रामायण के संस्करण—

रामायण के विभिन्न पाठ प्रचलित हैं इसका कारण यह है कि प्रारम्भ में रामायण मौखिक रूप में प्रचलित था और बहुत काल के बाद भिन्न-भिन्न परम्पराओं के आधार पर स्थाई लिखित रूप धारण कर सका। फिर भी कथानक के दृष्टिकोण से विभिन्न पाठों की तुलना करने पर सिद्ध होता है कि कथावस्तु में जो अन्तर पाये जाते हैं वे गोण हैं।<sup>४</sup> रामायण के विभिन्न पाठ निम्नाङ्कित हैं—

१. स्टडोज इन रामायण, पृ० १८८

२. काव्यादर्श ११४।१६

३. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा, पृ० १४

४. रामकथा, पृ० ३१

(१) देवनागरी संस्करण—निर्णय सागर प्रेस बम्बई से प्रकाशित। उत्तर भारत में इसी संस्करण का विशेष प्रचलन है।

(२) बंगाल संस्करण—यह कलकत्ता से प्रकाशित है। इस संस्करण का प्रकाशन डा० गोरजियो ने अनेक उपयोगी टिप्पणियों के साथ किया है। यह सन् १८८४ ई० से १८८७ ई० तक प्रकाशित हुआ।

(३) काश्मीर या पश्चिमोत्तरीय संस्करण—यह दयानन्द महाविद्यालय लाहौर के अनुसन्धान कार्यालय से सन् १९१३ ई० में प्रकाशित हुआ।<sup>१</sup>

(४) दक्षिणात्य दक्षिण भारत के संस्करण—यह मध्य विलास बुक डिपो, कुम्भ कोणम से प्रकाशित है। यह सन् १९२६, ३० ई० में प्रकाशित हुआ।

### रामायण का रचनाकाल—

रामायण के रचना काल के विषय में विद्वानों एवं आलोचकों का एक मत नहीं है। स्वयं वाल्मीकि के अनुसार इस कृति का रचना काल राम का राज्य काल है। वालकाण्ड के आरम्भ में वाल्मीकि मुनि ने नारद से प्रश्न किया कि इस समय संसार में गुणवान् व्यक्ति कौन है।<sup>२</sup> नारद ने तत्कालीन श्रेष्ठ पुरुष राम का उल्लेख किया एवं वाल्मीकि ने राम को विषय बनाकर रामायण की रचना की।<sup>३</sup> राम आयोध्या के राजसिंहासन पर आसीन हो चुके थे तभी वाल्मीकि ने रामायण काव्य की रचना की।<sup>४</sup> राम के वर्णन के लिये नारद ने वर्तमान क्रियाओं का प्रयोग भी किया है।<sup>५</sup>

१. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्यवलदेव उपाध्याय, पृ० ६४

२. वा० रा० १११२

३. वा० रा० १२१४२, ४३

४. प्राप्तराजस्य रामस्य वाल्मीकिभगवान्मृषिः, चकार चरितं कृत्स्नं विचित्रपदमात्मवान्। वा० रा० १४१।

५. वा० रा० १११८, ६१० आदि

राम दान आदि देकर वैकुण्ठ को जावेंगे, इस प्रकार की भविष्यत् काल की कियाओं के प्रयोग से प्रतीत होता है कि रामराज्य के समाप्त होने से पहले रामायण की रचना हुई।

अयोध्याकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड में उल्लिखित प्रमाणों से भी सिद्ध होता है कि वाल्मीकि राम के समकालीन ये तथा उन्होंने राम के राज्य काल में ही रामायण की रचना की। उदाहरणार्थ लब्धुश ने यह काव्य राम के अश्वमेघ समारोह के अवसर पर सभा में बैठ कर गाया।<sup>१</sup> वाल्मीकि स्वर्यं सीता के सतीत्व की साक्षी देने के लिये राम की सभा में उपस्थित हुये एवं सीता को दोष रहिता सिद्ध करने के लिये शपथ की।

उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर यदि वाल्मीकि रामायण की रचना राम के समकालीन मानी जाये, तो राम के समय का भी निर्धारण करना होगा।

परम्परानुसार राम का समय त्रेतायुग माना जाता है। राम-स्वामी शास्त्री ने लिखा है कि 'परम्परानुसार रामायण त्रेतायुग में, आज से लगभग ६ लाख वर्ष ई० पूर्व (६६७१०२ वर्ष ई० पूर्व) लिखी गई।<sup>२</sup>

राम का समय पार्जिटर के अनुसार, जैसा कि पूर्व निर्दिष्ट है, १६०० वर्ष पूर्व है। राम के समकालीन होने से वाल्मीकि रामायण का भी यही रचना काल रहा होगा।

**वस्तुतः** रामायण में उल्लिखित राम एवं वाल्मीकि से सम्बन्धित प्रसंग प्रक्षिप्त माने जाते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि वाल्मीकि को महत्त्व देने के लिये उनका सम्बन्ध राम से जोड़ दिया गया है। जैसा कि तुलसीदास का सम्बन्ध राम से जोड़ने का प्रयास किया गया है—

१. वा० रा० ७।६४।१६

२. स्टडीज इन रामायण, पृ० २३

चित्रकूट के घाट पर, भई सन्तन की भीड़ ।

तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक करै रघुबीर ।

इसी प्रकार वाल्मीकि और राम से सम्बन्धित प्रसंग भी बाद में जोड़ दिये गये । वस्तुतः वाल्मीकि तो राम से बहुत समय बाद हुये होंगे ।

रामायण की रचना ऋग्वेद कालीन मानने का भी सन्देह हो सकता है, व्योंगि ऋग्वेद के सूक्तों के रचयिता हृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अश्वि, भारद्वाज और वसिष्ठ रामायण में पात्र के रूप में उल्लिखित हैं । यह ऋषि रामायण के अनुसार राम से भी सम्बन्धित है । अतः राम का काल ऋग्वेद का काल माना जा सकता है एवं अनुमान किया जा सकता है कि वाल्मीकि ने ऋग्वेद के रचना काल<sup>१</sup> में रामायण की रचना की होगी ।

लेकिन ऋग्वेदिक काल में वाल्मीकि का होना या रामायण की रचना की जाना सम्भव नहीं हो सकता, व्योंगि यदि रामायण ऋग्वेदिक काल में रची जाती, तो उसकी भाषा भी वैदिक भाषा होती या उसकी भाषा का वैदिक भाषा से बहुत कुछ साम्य होता ।

रामायण के अनेक स्थलों के आधार पर रामायण का समय वैदिक काल के बाद का ही प्रतीत होता है । रामायण में वेदोपवृहण<sup>२</sup> शब्द का प्रयोग है । इसके अतिरिक्त तीनों वेदों ऋक्, यजु और साम का भी उल्लेख है ।<sup>३</sup> वेदों के अतिरिक्त वेदाङ्ग शब्द का भी उल्लेख रामायण में किया गया है ।<sup>४</sup> राम और हनुमान् के प्रथम बातलाप के समय हनुमान् द्वी संस्कारयुक्त वाणी को सुनकर राम ने कहा कि इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण बहुधा सुना है

१. तिलक के अनुसार ऋग्वेद का रचना काल ४००० से २५०० वर्ष विं पूर्व है । उद्दृत वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ० १४०

२. वा० रा० १।४।६

३. नाम॑ग्वेदविनोतस्य नायजुवैद्यधारिणः, नासामवेदविदुषः शक्यमेवं प्रभावितुम् । वा० रा० ४।३।२८

४. वेदवेदाङ्गतत्वज्ञो, वा० रा० १।१।४

वयोंकि इन्होंने दीर्घ समय तक वार्तालाप करने पर भी अशुद्ध शब्द का प्रयोग नहीं किया।<sup>१</sup> इसी प्रकार सीता ने भी हनुमान् की बाणी को संस्कार युक्त और कम सम्पन्न कहा।<sup>२</sup>

वाल्मीकि रामायण में व्याकरण शब्द का प्रयोग एवं बाणी के लिये संस्कार शब्द का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि पाणिनि की व्याकरण के पश्चात् रामायण की रचना हुई होगी। वयोंकि बाणी का संस्कार या भाषा का संस्कार सर्व प्रथम पाणिनि ने ही अपनी अष्टाध्यायी की रचना करके किया। व्याकरण शब्द का प्रयोग पाणिनि की अष्टाध्यायी की ओर ही संकेत करता है। अतः रामायण का रचना काल पाणिनि के समय के बाद का होगा। पाणिनि ने कौसल्या और कैकड़ी का नाम अपने सूत्रों में उद्घृत किया है।<sup>३</sup> पाणिनि का समय गोल्डस्टकर ने ६ या १०वीं शताब्दी ईस्ट्री पूर्व बताया है।<sup>४</sup> पाणिनि का अन्तिम समय निर्धारण चौथी शताब्दी है। पूर्व माना गया है।<sup>५</sup> अतः वाल्मीकि का समय भी चौथी शताब्दी ई० निर्धारित किया जा सकता है।

रामायण का उत्तरकाण्ड निश्चय ही पाणिनि की अष्टाध्यायी के पश्चात् लिखा गया होगा। वयोंकि इसमें सूत्र, वृत्ति, अर्थपद, महार्थ आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।<sup>६</sup> यहाँ सूत्र, वृत्ति,

१. तृं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतं, वदु व्याहरतानेन न किञ्चिचद् पश्चिमतम् । वा० रा० ४।३।२६

२. संस्कारकमसम्पन्नामद्वाविलम्बिताम्, उच्चारयति कल्पाणि वाचम् हृदयहारिणां । वा० रा०

३. उद्गत, स्टडीज इन रामायण, प० ३८

४. उद्गत, स्टडीज इन रामायण, प० ३८

५. उद्गत, स्टडीज इन रामायण, प० ३८

६. समूप-वृत्यर्थपदं महार्थं संसंग्रहं सिद्धयति वै कपीन्द्रः ।

न हास्य किंवित्सदूशोऽस्ति शास्त्रे वैशारदे छन्दगतो तथेव । वा० रा० ७।३६।४७

अर्थपद, महार्थ आदि का प्रयोग रामायण की रचना को पाणिनि के बाद का सिद्ध करता है।

रामायण में 'पौराणिक'<sup>१</sup> (पुराण विद्या का जानकार) शब्द का प्रयोग हुआ है। इससे प्रतीत होता है कि रामायण का समय पुराणकाल या इसके बाद का (लगभग ६०० ई० पूर्व से ४०० ई० पूर्व तक के बीच का) रहा होगा।

रामायण में श्रमण<sup>२</sup> शब्द का प्रयोग है श्रमण शब्द का अर्थ टीकाकारों ने क्षपणक (बौद्धभिक्षु) किया है। इससे भी स्पष्ट होता है कि रामायण की रचना बौद्धधर्म के प्रादुर्भाव के पश्चात् अर्थात् पाँचवी शताब्दी ई० पूर्व के बाद हुई होगी; लेकिन मूल रामायण का रचना काल ५०० वर्ष ई० पूर्व के पश्चात का नहीं हो सकता, क्योंकि यदि मूल रामायण की रचना बौद्ध धर्म के पश्चात् हुई होती, तो बौद्ध धर्म के मुख्य तत्त्व अर्हिसा का प्रभाव अवश्य ही रामायण पर पड़ता, लेकिन ऐसा नहीं है। इसके अतिरिक्त यह भी बात है कि श्रमण शब्द का प्रयोग शवरी के प्रसङ्ग में प्रयुक्त हुआ है।<sup>३</sup> लेकिन शवरी बौद्ध भिक्षुणी के रूप में हमारे समक्ष नहीं आती।

डा० नानूराम व्यास ने श्रमण शब्द का अर्थ बौद्ध भिक्षु या क्षपणक न बताते हुए लिखा है कि 'आद्याण ग्रन्थों में श्रमण शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है उससे बौद्ध भिक्षु का संकेत नहीं मिलता। .....रामायण में उल्लिखित श्रमणों को वैदिक तपस्वियों की श्रेणी में गिना जा सकता है। आद्याण, गृहस्थ और वनवासी तापसों से पार्थक्य स्थापित करने के लिये वे अपने को श्रमण कहते थे।'

१. वा० रा० ७।६।४।५

२. आयैण् मम मान्त्रात्रा व्यसनं घोरमीप्सितम्।

श्रमणेन कृते पापे यथा पापं कृतं तथ्या। वा० रा० ४।१।६।३।५

३. वा० रा० ३।७।३।२।३

४. रामायण कालीन संस्कृति, पृ० २३४-२३५

अस्तु, रामायण के सभी साक्षों के आधार पर रामायण का रचना काल चौथी शताब्दी ई० पूर्व के लगभग माना जा सकता है।

रामायण के समय के निधीरण के विषय में विभिन्न विद्वानों ने भी अपने मत प्रस्तुत किये हैं। कुछ विद्वानों के मत निम्नाङ्कित हैं—

जर्मन विद्वान् याकोवी के अनुसार वाल्मीकि ने अपनी मूल रामायण की रचना ८००-६०० वर्ष ई० पूर्व में की। प्रक्षेप आदि से उसके कलेवर की वृद्धि होती रही और वर्तमान रूप ईसा के प्रादुर्भाव के आस पास हुआ।<sup>१</sup> वेवर के अनुसार रामायण का समय तीसरी या चौथी शताब्दी ई० पूर्व है।<sup>२</sup> मोनियर विलियम ने इसका रचना काल तीसरी शताब्दी ई० पूर्व माना है।<sup>३</sup> विन्टरनिट्स का भी यही मत है।<sup>४</sup> मैकडोनल का कथन है कि मूल काव्य पाचवीं शताब्दी ई० पूर्व के पहले का होना चाहिये।<sup>५</sup> कीथ ने इसका काल द्विंशती शताब्दी ई० पूर्व माना है।<sup>६</sup> काउन्ट विजारन्स्टजेरन इसका समय २००० वर्ष ई० पूर्व निश्चित करते हैं।<sup>७</sup> ए० इलेगल के अनुसार रामायण का समय ख्यारहवीं शताब्दी ई० पूर्व तथा जी० गोरेसियो के अनुसार इसका समय लगभग एक्सी शताब्दी ई० पूर्व माना गया है।<sup>८</sup>

**पाटिलिपुत्र (पटना) नगर ४०० वर्ष ई० पूर्व में निर्मित हुआ**

१. रामायण कालीन संस्कृति, पृ० २
२. स्टडीज इन रामायण, पृ० २३
३. स्टडीज इन रामायण पृ० २३
४. हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर, पृ० ५१७
५. ए हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर, पृ० ३०६
६. उद्गत, स्टडीज इन रामायण, पृ० २४
७. वही पृ० २४
८. उद्गत राम कथा, पृ० ३५

था। वाल्मीकि ने रामायण में उसका उल्लेख नहीं किया। जब कि उन्होंने अन्य पूर्वी भारत के नगरों का उल्लेख किया है। इससे स्पष्ट है कि रामायण का काल चौथी शताब्दी ई० पूर्व के पश्चात् का नहीं।<sup>१</sup>

रामस्वामी शास्त्री ने रामायण का समय ५०००-६००० वर्ष ई० पूर्व माना है।<sup>२</sup>

सी० बी० बेद्य रामायण का रचना काल दूसरी शताब्दी ई० पूर्व तथा दूसरी शताब्दी ई० के बीच मानते हैं। यद्यपि वह पहली शताब्दी पूर्व अधिक सम्भव समझते हैं।<sup>३</sup>

डा० बुल्के ने रामायण के समय के सम्बन्ध में अपना मत देते देते हुए लिखा है कि 'अधिक सम्भव प्रतीत होता है कि वाल्मीकि ने लगभग तीसरी शताब्दी ई० पूर्व अपनी अमर रचना की सुष्ठि की है।'<sup>४</sup>

आचार्य बलदेव उपाध्याय ने अनेक प्रमाणों के आधार पर रामायण का समय निर्धारित करते हुये लिखा है कि 'रामायण की रचना वुढ़ के पहले हो गई। अर्थात् रामायण को पाँचवी शताब्दी ई० पूर्व से पहले की रचना मानना न्याय संगत है।'

डा० नानराम व्यास ने रामायण के समय पर विचार करते हुये लिखा है कि, 'मूल रामायण की रचना निश्चय ही पाणिनि (५०० वर्ष ई० पूर्व) से पहले की जान पड़ती है, क्योंकि रामायण की भाषा में ऐसे अनेक आर्य प्रयोग पाये जाते हैं जो पाणिनीय व्याकरण से मेल नहीं खाते। यदि वाल्मीकि पाणिनि के बाद हुये होते, तो ऐसा न होता। पाणिनि ने कोसल, कीसल्या, कैकेयी, केक्य,

१. स्टडीज इन रामायण, पृ० ३८

२. स्टडीज इन रामायण, पृ० ३६

३. उद्गत, दि रिहिल भाक दी रामायण, पृ० २०

४. रामकथा पृ० ३७

५. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ० ६७

भरत, वैश्वरण, विभोगण, रावण और वाल्मीकि जैसे नामों की व्युत्पत्ति भी समझाई है। किन्तु रामायण के प्रधान पात्र राम, सीता और दशरथ पाणिनि में नहीं मिलते।<sup>१</sup>

रामायण के प्रक्षेपांशों में उत्तरकाण्ड सबसे बाद का प्रतीत होता है। लेकिन यह भी तृतीय शताब्दी ई० पूर्व से बाद का नहीं। इस सन्दर्भ में आचार्य वलदेव उपाध्याय का मत उल्लेखनीय है— बोढ़ों में एक प्रसिद्ध जातक है 'दशरथजातक' जिसमें रामायण का वर्णन संक्षेप रूप में उपलब्ध होता है। इसमें पालिभाषा में रूपान्तरित उत्तरकाण्ड का एक श्लोक हू-बहू मिलता है इस जातक का समय विक्रम पूर्व तृतीय शताब्दी माना जाता है। अतः मानना पड़ेगा कि उत्तरकाण्ड की रचना उक्त शताब्दी के पहले की है।<sup>२</sup> अतः सम्पूर्ण रामायण की रचना का समय तृतीय शताब्दी के पश्चात् का नहीं है।

कालिदास ने वाल्मीकि को आदि कवि कहा है।<sup>३</sup> इससे यह स्पष्ट है कि वाल्मीकि को प्रसिद्धि रामायण के रचनाकार के रूप में कालिदास के समय (प्रथम शताब्दी ई० पूर्व) तक हो चुकी थी।

रामायण के रचना काल से सम्बन्धित उपर्युक्त प्रमाणों एवं आलोचनात्मक विवरण से रामायण का रचना काल पूर्णतः निश्चित नहीं होता। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि रामायण के साक्ष्य के आधार पर मूल रामायण का समय बौद्ध धर्म के प्रादुर्भाव के पूर्व (५०० वर्ष ईसा पूर्व) रहा होगा, एवं प्रक्षेपांशों सहित समग्र रामायण का रचना काल, वेदांग, पुराण, श्रमण, व्याकरण तथा सूत्र, वृत्ति, अर्थपद, महार्थ आदि पदों के प्रयोगों के कारण चतुर्थ शताब्दी ईसा पूर्व एवं तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य का माना जा सकता है, इसके पश्चात् का नहीं।

१. रामायण कालीन समाज, पृ० ६

२. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ० ६३-६४

३. रघुवंश महाकाश्य, संग १५ श्लोक ४१

## रामायण की कथा का स्रोत

रामायण की कथा के स्रोत के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न दृष्टिकोण हैं। कोई-कोई आलोचक रामायण की कथा का स्रोत विदेशी तत्वों को मानते हैं, कोई इसका स्रोत जातक कथाओं में वर्णित राम कथा का बहुत रूप मानते हैं। कुछ विद्वान् रामायण की कथा को काल्पनिक मानते हैं, बहुत से विद्वान् इसका स्रोत ऐतिहासिक मानते हैं। उपर्युक्त सभी दृष्टियों को ध्यान में रखकर रामायण के स्रोत पर विचार किया जाता हैः—

रामायण की कथा का स्रोत विदेशी तत्वों को मानने वाले विद्वानों में वेवर और एम० वेंकट रत्नम प्रमुख हैं। डा० वेवर का मत है कि बौद्ध ग्रन्थ 'दशरथ जातक' में वर्णित रामकथा की प्रेरणा को ग्रहण करके आदि कवि ने अपने ढंग से उसको रामायण में विस्तार से लिख दिया है। वेवर का इस सम्बन्ध में कथन है कि उक्त बौद्ध ग्रन्थ में अनुपलब्ध सीता हरण की कथा को वाल्मीकि ने सम्भवतः होमर काव्य के 'पेरिस द्वारा हेलेन का अपहरण' प्रसंग से और लंका युद्ध को सम्भवतः यूनानी सेना द्वारा 'त्राय' का अवरोध, प्रसंग से उद्धृत किया है।<sup>१</sup> डा० बुल्के ने वेवर के मत के विषय में टिप्पणी की है कि होमर के काव्य को रामायण अथवा राम कथा का आधार मानने के लिए वेवर को छोड़ कर कोई भी तैयार नहीं है।<sup>२</sup> डा० बुल्के ने दशरथ जातक की रामकथा को वाल्मीकीय रामकथा का विकृत रूप कहा है।<sup>३</sup>

**बस्तुतः** रामायण की कथा जातक कथाओं या दशरथ जातक की कथा का विस्तार नहीं कही जा सकती, क्योंकि स्वयं वाल्मीकि

१. उद्दृत, संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गेरोला पृ० २०३-२०४

२. रामकथा पृ० १०२

३. वही

ने रामायण को वेदों का विस्तार कहा है।<sup>१</sup> राम सम्बन्धी चरित्र की गाथायें वैदिक काल में प्रचलित रही होंगी और वाल्मीकि ने उन्हें एक बहुत काल का रूप दे दिया। डा० बुल्के ने लिखा है कि 'प्रारम्भ से ही दानस्तुति स्वरूप 'नाराशंसी' गाथाओं' का उल्लेख मिलता है (ऋग्वेद १०, ८५, ६) वाल्मीकि के पूर्व रामकथा सम्बन्धी गाथायें प्रचलित हो चुकी थीं। इसके प्रमाण हमें बोढ़ त्रिपिटक में मिलते हैं।<sup>२</sup> वाल्मीकि ने उस स्फृट आस्थान काव्य को एक ही प्रबन्ध काव्य में संकलित करके लगभग ३०० ई० पूर्व आदि रामायण की रचना की है।<sup>३</sup>

रामायण के ल्रोत के विषय में वैकट रत्नम के मत को उद्धृत करते हुए डा० बुल्के ने लिखा है कि 'एम० वैकट रत्नम का विश्वास है कि यह वास्तव में मिथ देश के रमसेस नामक राजा का इतिहास है।'<sup>४</sup> इस मत का निराकरण करते हुए डा० बुल्के ने लिखा है कि 'रमसेस के विषय में आधुनिक खोज के आधार पर जो कुछ ज्ञात हुआ है उससे स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण से उस राजा का कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता।'

रामायण की कथा के ल्रोत सम्बन्धी जे० टी० ब्हीलर के मत को उद्धृत करते हुए डा० बुल्के ने लिखा है कि ब्हीलर के अनुसार रामायण काव्य ब्राह्मण और बोढ़ दोनों धर्मों के संघर्ष का प्रतीक है। राक्षसों से बोढ़ों का अभिप्राय है।<sup>५</sup> ब्हीलर के मत से सहमत न होते हुए डा० बुल्के ने लिखा है कि 'रामायण में जो राक्षसों का चित्रण मिलता है उसमें उनके बोढ़ होने का कोई भी निर्देश नहीं मिलता। 'राक्षस' ब्राह्मणों के विरोधी अवश्य हैं लेकिन

१. वेदोपबृह्णं वा० रा० १४१६

२. रामकथा पू० १३४

३. वही पू० १३६

४. रामकथा पू० ११६

५. वही

६. वही० पू० ६६, १००

वे स्वयं भी यज्ञ करते हैं और नर भक्षो भी कहे जा सकते हैं'।<sup>१</sup> इस प्रकार ब्लौलर का मत भी कपोल कल्पित है।

रामायण की कथा को काल्पनिक मानने वालों में रमेश चन्द्र दत्त है। रमेश चन्द्र दत्त महाभारत के पात्रों की तरह रामायण के वीरों को भी काल्पनिक मानते हैं।<sup>२</sup> लेकिन यह केवल कल्पित विचार ही है।

येदातोरे सुव्वाराव के अनुसार 'रामायण का अर्थ दार्शनिक है, रामायण के भौगोलिक स्थान योगशास्त्र के चक्र है। ई० सूर भी रामकथा में एक दार्शनिक शास्त्र का प्रतिपादन करते हैं।<sup>३</sup> डा० बुल्के इन मतों के सम्बन्ध में असहमति प्रकट करते हैं कि, इतना ही निश्चित है कि ये कल्पनायें आदि कवि के मन से कोसों दूर थीं।<sup>४</sup>

रामायण को कथा के स्रोत विषयक अन्य मत ई० हापकिन्स, डा० वान नेगेलैन, दिनेश चन्द्र सेन आदि के भी हैं। इन मतों को उद्धृत करते हुए डा० बुल्के ने इनके सम्बन्ध में आलोचना भी प्रस्तुत की।

वस्तुतः रामायण की कथा ऐतिहासिक है। लेकिन इस मत में भी विद्वानों की भिन्न-भिन्न धारणायें हैं। रामायण के द्वितीय भाग का आधार निर्धारित करने के लिए डा० याकोवी वेदिक साहित्य का सहारा लेते हैं।<sup>५</sup> याकोवी के मत का समर्थन मंकडानल और कीथ ने भी किया है।<sup>६</sup> वस्तुतः ये मत निराधार हैं। डा०

१. वही पृ० १००

२. रामायण कालीन संस्कृति, पृ० ६

३. रामकथा, पृ० १००

४. रामकथा पृ० ११६

५. उद्धृ०, रामकथा, पृ० १०६

६. वही

बुल्के इस विषय में लिखते हैं कि डा० याकोवी के इस मत के विरुद्ध हम सामान्य रूप से कह सकते हैं कि इसमें कल्पना प्रधान है।<sup>१</sup>

जे० सो० ओमन का मत है कि रामायण की कहानी ऐतिहासिक सत्य पर आधारित है। आर्य जब गगा के मंदान में निवास ही कर पाये होंगे कि इन्हें असभ्य जातियों के साथ युद्ध करना पड़ा होगा और उनके मुख्य नेता के बीरतापूर्ण 'कार्य' गान की कथा वस्तु बन गये होंगे।<sup>२</sup> ओमन का यह कथन कि रामायण की कहानी ऐतिहासिक है, सत्य है। लेकिन उस रूप में नहीं जैसा कि उन्होंने प्रस्तुत किया है। रामायण की कथा के स्रोत के विषय में दिनकर का मत है कि रामकथा सम्बन्धी आख्यान काव्यों की वास्तविक रचना वैदिक काल के बाद इष्टवाकुवंश के सूतों ने आरम्भ की। इन्हीं आख्यान काव्यों के आधार पर वाल्मीकि ने रामायण की रचना की। इस रामायण में अयोध्याकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक की कथा वस्तु का वर्णन या और उसमें सिर्फ १२०० श्लोक थे।<sup>३</sup>

डा० बुल्के ने रामायण की कथा का स्रोत ऐतिहासिक बताते हुए स्पष्ट किया है कि 'वाल्मीकि रामायण' को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि को अपने कथानक की ऐतिहासिकता के विषय में सन्देह नहीं है। नायक का छल से बाली का बध करना भी ऐतिहासिकता की ओर निर्देश करता है।<sup>४</sup> रामायण को उपजीव्य बताते हुए बुल्के का मत है कि राम, रावण तथा हनुमान के विषय में पहले स्वतन्त्र आख्यान प्रचलित थे, जिनके संयोग से रामायण की रचना हुई।<sup>५</sup>

१. वही

२. उद्भूत, द कन्सेप्ट ग्राफ घर्म इन रामायण, पृ० १४

३. संस्कृत के चार अध्याय, पृ० ६६

४. रामकथा, पृ० ११३

५. वही, पृ० ६४

वी० वी० कामेश्वर ऐयर का भी यही मत है कि भारतीय परम्परा और समग्र संस्कृत साहित्य में राम के ऐतिहासिक अस्तित्व को स्वीकार किया गया है।<sup>१</sup>

रामायण की कथा का स्रोत ऐतिहासिक है, इसका प्रमाण स्वयं रामायण से प्राप्त होता है। रामायण में उल्लेख है कि जिस वंश में सगर नाम के राजा हुए, जिनके ६० पुत्रों ने समुद्र का खनन किया था<sup>२</sup> उन महात्मा इक्षवाकु<sup>३</sup> वंश के राजा में यह महाकथा उत्पन्न हुई। जो रामायण के नाम से प्रसिद्ध है। रामायण की कथा की ऐतिहासिकता की पुष्टि के लिए रामायण में इक्षवाकु वंश के राजाओं से सम्बन्धित राज्य एवं निविचित भूभाग का भी उल्लेख है। रामायण में उल्लेख है कि सरयू नदी के किनारे धन धान्य से सम्पन्न कौसल नाम का जनपद था।<sup>४</sup> इसमें मानवों के राजा मनु द्वारा निर्मित अयोध्या नगरी थी।<sup>५</sup> इसमें राजा दशरथ राज्य करते थे।<sup>६</sup> उन्हीं राजा दशरथ की रानी कौसल्या के गर्भ से राम का जन्म हुआ।<sup>७</sup> वे राम ही इक्षवाकु वंश को बड़ाने वाले थे।<sup>८</sup>

१. वा० रा० ए४७ दि वेस्टनैं क्रिटिक्स, उद्धृत, रामायण कालीन संस्कृति प० ७
२. येवां स सगरो नाम सागरोयेनखानितः, पष्ठिपुत्रसहस्राणि यं यामतं पर्यंवारयन्। वा० रा० १।५।२
३. इक्षवाकूणामिदं तेवा राजा वंशेऽमहारमना, महदुत्पन्नमारुप्यानं रामायण-मिति श्रुतम्। वा० रा० १।५।३
४. कौसलोनाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान्, निविष्टः सरयूतीरे प्रभृत धनधान्यकम्। वा० रा० १।५।५
५. अयोध्यानाम नगरो तत्रासीलोकविश्रुता, मनुना मानवेन्द्रेण्यापुरी निर्मिता स्वयं। वा० रा० १।५।६
६. तां तुराजादशरथो महाराष्ट्रविष्वंनः, पुरोमावासयामास दिवि देवपतियंथा। वा० रा० १।५।८
७. कौसल्या जनयद रामं। वा० रा० १।६।१०
८. पुत्रमैक्षवाकुनन्दनम्। वा० रा० १।६।१०

आसीन हो जाने पर उनके सम्पूर्ण चरित्र उन्होंने राम के राजसिंहासन पर का वर्णन वाल्मीकि ने रामायण में किया है।<sup>१</sup>

स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण की कथा का स्रोत न तो विदेशी है, न जातक कथाओं में वर्णित रामकथा का विस्तार है और न दार्शनिक तत्त्वों पर आधारित है और न काल्पनिक है। रामायण को कथा का स्रोत वह ऐतिहासिक रूप भी नहीं है जो असंवद्ध या मनगढ़न्त हो। रामायण की कथा का स्रोत को सल जनपद में मनु के द्वारा वसाई गई अयोध्या नगरों में राज्य करने वाले इदवाकु कुल के राजवंश में उत्पन्न सत्य के रक्षक, लोक हितंषी एवं राजाओं में थेष्ठ राम का चरित्र है।

### रामायण के मूल और प्रक्षिप्त अंश

किसी ग्रन्थ में जब उस ग्रन्थ कर्ता को मृत्यु के पश्चात् कोई अन्य व्यक्ति स्वरचित या अन्य किसी की रचना को जोड़ देता है तो वह अंश प्रक्षिप्त अंश कहलाता है।

रामायण का आज का जो रूप है उसके विषय में सामान्य रूप से यह धारणा है कि यह एक कवि की रचना नहीं है। इसकी प्रतीति अनेक प्रमाणों से होती है। रामायण में कई स्थल ऐसे हैं जिनमें कि एक ही प्रकार के कथा के वर्णन में विरोध है। इस कृति में मूल और बाद में जोड़े गए अंशों की रचना शैली में भी वैभिन्न है। इसमें प्रक्षेपांशों का स्पष्टोकरण इससे भी होता है कि प्रस्तुत कृति के रचयिता वाल्मीकि किन्हीं-किन्हीं प्रसंगों में स्वयं पात्र के रूप में वर्णित है।

रामायण का अध्ययन करने से एवं प्रक्षेपांशों की दृष्टि से विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि रामायण में निम्नांकित अंश प्रक्षिप्त है :—

१. प्राप्तराजवस्य रामस्य वाल्मीकिर्भवानृपिः । चकार चरितं कृत्वा विवितपदमयं वत् । वा० रा० ॥५॥१

बालकाण्ड में प्रारम्भिक चार सर्ग प्रक्षिप्त प्रतीत होते हैं, क्योंकि इन सर्गों को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसकी कथा को बाल्मीकि नहीं कह रहे हैं, कोई अन्य व्यक्ति ही इस कथा को कहने वाला है। इस कथा में बाल्मीकि भी एक पात्र के रूप में निर्दिष्ट है। बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में उल्लेख है कि बाल्मीकि ने नारद से श्रेष्ठ गुणों से युक्त नर के विषय में प्रश्न किया।<sup>१</sup> यदि यह अंग बाल्मीकि द्वारा लिखा गया होता तो, बाल्मीकि उत्तम पुरुष में प्रयुक्त हुए होते। ऐसा प्रतीत होता है कि बाल्मीकि का परिचय, व्यक्तित्व और महत्त्व बताने के लिये किसी व्यक्ति के द्वारा या बाल्मीकि के जिथों के द्वारा बालकाण्ड में प्रारम्भिक चार सर्ग बाद में जोड़ दिये गये।

बाल्मीकि कृत रामायण की कथा का आरम्भ बालकाण्ड के पांचवें सर्ग से ही प्रतीत होता है। कुछ विद्वानों के अनुसार सम्पूर्ण बालकाण्ड ही प्रक्षिप्त है। याकोबी का मत है कि उत्तरकाण्ड की भाँति बालकाण्ड भी आदि रामायण का अंग नहीं है।<sup>२</sup> इस कथन को पुष्टि डा० बुल्के ने अनेक प्रमाण देकर की है<sup>३</sup> और यह सिद्ध किया है कि बालकाण्ड आदि रामायण में नहीं था।

डा० बुल्के एवं याकोबी का उपर्युक्त मत मान्य नहीं हो सकता। क्योंकि रामायण में इस कृति के कलेवर के लिये 'षट्काण्डानितयोतरम्'<sup>४</sup> का प्रयोग हुआ है। षट्काण्डानि से बालकाण्ड से युद्धकाण्ड तक का बोध होता है। युद्धकाण्ड के अन्त में यन्थ के समाप्त होने को सूचना भी प्रतीत होती है। दूसरी बात यह भी है कि बालकाण्ड सम्पूर्ण रामायण का आधार है। अतः बालकाण्ड के प्रथम चार सर्गों एवं अवतारवाद के अंशों

१. बा० रा० १।१।१।

२. उद्भृत, रामकथा प० १२२

३. रामकथा, प० १२२-१२४

४. बा० रा० १।४।२

को, जो कि प्रक्षिप्त प्रतीत होते हैं, छोड़ कर यह काण्ड मूल या आदि रामायण में अवश्य ही रहा होगा।

उत्तरकाण्ड पर प्रक्षिप्तांशों की दृष्टि से विचार करने पर यह पूर्ण रूपेण होता है कि यह सम्पूर्ण काण्ड प्रक्षिप्त है। इस काण्ड के प्रक्षिप्त होने में निम्नलिखित प्रमाण है—

(१) वालकाण्ड में 'षट्काण्डानि तथोत्तरम्' <sup>१</sup> से यह छवि निकलती है कि उत्तरकाण्ड बाद में रचा गया होगा। अथवा तथोत्तरम् लिखने की क्या आवश्यकता थी। केवल षट् के स्थान पर सप्त ही लिखा जा सकता था। राम, रावण, हनुमान् आदि से सम्बन्धित कथाओं को महत्त्व देने की दृष्टि से ही यह रचना-कार्य उत्तरकाण्ड के रूप में वाल्मीकि-रामायण में जोड़ दिया गया।

(२) रामायण में उत्तरकाण्ड बाद में जोड़ने का एक प्रमाण यह भी है कि उसमें ब्राह्मणों की महिमा का अत्यधिक वर्णन है। सम्भवतः इसी महिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये किसी ब्राह्मण ने श्रेष्ठ कृति रामायण में उत्तरकाण्ड को रचकर जोड़ दिया।

(३) उत्तरकाण्ड में अनेक स्थलों से प्रतीत होता है कि उनमें वाल्मीकि के अतिरिक्त कोई अन्य ही कथा को कह रहा है। उदाहरण स्वरूप सीता के दो पुत्रों की उत्पत्ति की सूचना मुनि वालक ने वाल्मीकि मुनि को दी।<sup>२</sup> वाल्मीकि प्रसन्न हुये<sup>३</sup> 'वाल्मीकि ने दोनों कुमारों की रक्षा की,'<sup>४</sup> आदि। यदि वाल्मीकि

१. वा० रा० ११४।२

२. वाल्मीकेः प्रियमाचर्ष्युः सीतायाः प्रसवं शुभम् । वा० रा० ७।६६।२

३. जगामतन् हृष्टात्मा ददर्श चकुमारको, भूतघ्नीं चाकरोत्ताम्याम् रक्षा रक्षोविनाशिनीम् । वा० रा० ७।६६।५

४. भूतघ्नीं चाकरोत्ताम्याम् रक्षा रक्षोविनाशिनीम् । वा० रा० ७।६६।५

द्वारा उत्तरकाण्ड की रचना हुई होती तो वे उत्तम पुरुष में प्रयुक्त हुये होते।

(४) रामायणानुसार इस कृति का रचना काल राम का राज्य काल अर्थात् ब्रेता युग है।<sup>१</sup> लेकिन उत्तरकाण्ड में उल्लेख है कि जब वाह्याण एवं क्षत्रिय अवनति को प्राप्त हुए, तब अधर्म का दूसरा चरण पश्ची पर आया, जो द्वापर कहलाया।<sup>२</sup> रामायण की रचना पूर्वोक्ति के अनुसार ब्रेता युग में हुई। अतः उत्तरकाण्ड में द्वापर युग के आगमन को सूचना का उल्लेख यह सिद्ध करता है कि उत्तरकाण्ड की रचना ब्रेतायुग के बाद की अर्थात् द्वापर युग की है। यदि उत्तरकाण्ड भी ब्रेतायुग की रचना होता, तो द्वापर का प्रयोग इसमें भविष्यत् काल की किया के साथ होता। जैसा कि कलियुग के आगमन के लिये भविष्यत् काल की किया का प्रयोग है।<sup>३</sup>

(५) उत्तरकाण्ड में वर्णन आया है कि इष्वाकु कुल के इष्ट देव जगन्नाथ है।<sup>४</sup> जगन्नाथ, जो कि पुरो में है, सुभद्रा, श्रीकृष्ण और बलभद्र का अर्थवितार है। अतएव इनका प्रादुर्भाव कृष्णावतार के पश्चात् मानना पड़ेगा। रामावतार तो कृष्णावतार के बहुत पूर्व का है। अतः जगन्नाथ का इष्वाकु कुल का आराध्य देव होना संगत नहीं जान पड़ता। अतः उत्तरकाण्ड कृष्णावतार के पश्चात् द्वापर युग की रचना प्रतीत होती है।

(६) उत्तरकाण्ड में वासुदेव का नाम आया है।<sup>५</sup> यह कृष्ण के लिये प्रयुक्त होगा। अतः उत्तरकाण्ड आदि रामायण से बहुत बाद की रचना प्रतीत होती है।

१. वा० रा० १।४।१

२. ततो द्वापर संज्ञा सा युगस्य समजायत। वा० रा० ६।७।४।२३

३. वा० रा० ७।७।४।२७

४. वा० रा० ७।१०।८।३।

५. उत्पत्त्वते हि लोकेऽस्मिन् यदूनां कीर्तिवर्घनः, वासुदेव इति स्पातो लोके पुरपविग्रहः। वा० रा० ७।५।३।२०

(७) उत्तरकाण्ड में मूल रामायण के प्रसङ्गों से विरोध एवं असंगतियाँ भी प्राप्त होती हैं। बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड में वर्णित अहिल्या के प्रसङ्ग एवं इन्द्र के शाप के विषय में विरोध है। कहीं कहीं विषय के प्रस्तुत करने में असंगतियाँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। युद्धकाण्ड में उल्लेख है कि राम द्वारा सत्कृत होकर सुग्रीव किञ्चिकधापुरी में प्रस्थान कर गये और विभीषण ने लड्ढा की ओर प्रस्थान किया।<sup>१</sup> उत्तरकाण्ड में पुनः उनकी उपस्थित दिखाई गई है<sup>२</sup> जब कि उनके पुनः आने का कोई उल्लेख नहीं है।

(८) उत्तरकाण्ड में वर्ण्य विषय में स्वयं विरोध मिलता है। जैसे कि लक्ष्मण ने सीता के साथ गङ्गा को पार किया।<sup>३</sup> तथापि उनके गङ्गा पार होने का पुनः विस्तार से वर्णन है।<sup>४</sup>

(९) उत्तरकाण्ड में भूतकाल की कियाओं का प्रयोग भी इस बात को सूचित करता है कि राम राज्य के अनन्तर ही उत्तरकाण्ड की रचना हुई होगी।

(१०) उत्तरकाण्ड में उल्लेख है कि रामायण में २६००० श्लोक एवं १०० उपाख्यान हैं।<sup>५</sup> प्रचलित वाल्मीकि रामायण में बालकाण्ड से युद्धकाण्ड तक ही २४००० से अधिक श्लोक पाये जाते हैं अतः उत्तरकाण्ड निश्चित ही प्रक्षिप्त है।

उत्तरकाण्ड के प्रक्षेप के विषय में 'रामायण कालीन व्यार्थ संस्कृति के रचयिता' विष्णु दामोदर शास्त्री का मत है कि 'यह बात अवश्य है कि अन्य ६ काण्डों के बनुसार उत्तरकाण्ड का भी कुछ अंश प्रक्षिप्त होगा, और है भी, पर इतने से ही 'सम्पूर्ण उत्तर-

१. वा० रा० ६।१३।१।८३, ८४, ८५

२. वा० रा० ७।३।०।५२

३. वा० रा० ७।४६।३३, ३४

४. वा० रा० ७।४७।१

५. वा० रा० ७।६।४।२६

काण्ड ही प्रक्षिप्त है' यह नहीं कहा जा सकता।<sup>१</sup> उन्होंने आगे लिखा है कि 'उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त तो नहीं है किन्तु रामायण का परिशिष्ट है यह बात वालकाण्ड सर्ग ३, श्लोक ३६ से ही स्पष्ट होती है। यथा—

अनागतं च यत् किञ्चित् रामस्य वसुधातले ।  
तच्चकारोतरे काव्ये वाल्मीकिर्भगवान् ऋषिः ॥

अर्थात् श्रीरामचन्द्र जी के चरित्र वर्णन में जो कुछ वर्णन करने के लिये बाकी रह गया है, अर्थात् जो कथा प्रसंग छूट गये हैं उन सबका समावेश भगवान् वाल्मीकि ऋषि ने उत्तरकाण्ड में किया है।<sup>२</sup>

श्री विष्णु दामोदर शास्त्री ने यह भी उल्लेख किया है कि 'यदि उत्तरकाण्ड को रचना महर्षि वाल्मीकि ने न की होती तो (१) राजसों की उत्पत्ति (२) हनुमान् जी का जन्म (३) रावण का पराक्रम (४) श्रीराम का चरित्र, (५) भरत और शत्रुघ्न के पराक्रम, (६) सोता त्याग, लवकुश जन्म, श्रीराम जो का पुनः दारपरिश्रह न करके अन्त तक व्रतस्थ रहना, श्रीराम के प्रति प्रजाजनों द्वारा प्रकट किया हुआ असीम प्रेम तथा अन्यान्य प्रसङ्गों का चिह्न भी शेष न रहा होता।<sup>३</sup>

श्री विष्णु दामोदर शास्त्री द्वारा प्रस्तुत किये गये उपर्युक्त प्रमाण उत्तरकाण्ड के प्रक्षिप्त न होने के लिये पर्याप्त नहीं है। यद्योऽकि यदि उत्तरकाण्ड वाल्मीकि की रचना होती, तो उसमें मूल रामायण से एवं स्वयं के कथानक में विरोध एवं असंगतियाँ न होती एवं स्वयं वाल्मीकि भी पात्र के रूप में प्रयुक्त न होते।

१. रामायण फालीन प्रायः संस्कृति-निवन्ध माला, प्रथम भाग, पृ० ६५

२. वही पृ० ६६

३. वही पृ० ६७

रामायण में वालकाण्ड के प्रथम चार सर्ग एवं उत्तरकाण्ड तो प्रक्षिप्त हैं ही, साथ ही अन्य काण्डों में भी प्रक्षेपांश हैं। किंचिकन्धाकांड के स्थलों में भी विरोध होने के कारण वे प्रक्षिप्त प्रतीत होते हैं। उदाहरणार्थं राम से प्रथम वार्ता के समय सुग्रीव अपने को वालि द्वारा राज्य से निष्कासन करने की वात कहता है।<sup>१</sup> लेकिन अन्यत्र इसी प्रसंग को सुग्रीव भिन्न रूप में कहता है कि वालि मुझे नार डालने के लिये मेरे ऊपर दोढ़ा तब मैं मन्त्रियों सहित भागा।<sup>२</sup> इस प्रकार के विरोध प्रक्षेपांश को ही सिद्ध करते हैं।

डा० बुल्के ने रामायण के प्रक्षेपांशों पर विस्तार से विचार किये हैं। उनकी दृष्टि में वालकांड एवं उत्तरकाण्ड तो पूर्ण रूपेण प्रक्षिप्त है, साथ ही अन्य काण्डों में भी प्रक्षेप है। उनके मत से रामायण में प्रक्षेपांशों को संक्षेप में निम्नलिखित रूप से उल्लेख किया जाता है—

(१) डा० बुल्के ने उल्लेख किया है कि रामायण में अवतार सम्बन्धी समस्त सामग्री प्रक्षिप्त है।

(२) कथा में पुनरुक्ति के प्रसंग प्रक्षिप्त है।

(३) इसमें अद्भुत रस की सामग्री का उल्लेख प्रक्षिप्त है।

(४) इसमें काव्यात्मक तथा अलङ्कार पूर्ण वर्णन प्रक्षिप्त है।

(५) रामायण को ज्ञान का भंडार बनाने की प्रवृत्ति के कारण इसमें प्रक्षिप्त अंश जोड़े गये हैं।

(६) इसमें आदर्शवाद के प्रभाव के कारण भी प्रक्षेप हुये हैं।

१. डा० रा० ४।८।३२

२. डा० रा० ४।४६।११

उपरोक्त तत्त्वों के आधार पर डा० बुल्के ने प्रायः सभी काँडों में कुछ न कुछ प्रक्षिप्त अंश बताये हैं। प्रस्तुत कृति में कई काल्पनिक प्रसंग भी अनन्त प्रक्षिप्ता का समर्थन करते हैं। वस्तुतः रामायण के बालकाँड के प्रथम चार संग और इसमें आये हुये विरोधी प्रसंग, अयोध्याकाँड के प्रसंग, अरण्यकाँड में राम के दिव्य पराक्रम के प्रसंग, सुन्दर-काँड में आये हुये राम के देवीय गुणों से युक्त होने के प्रसंग एवं युद्धकाँड में अवतार से सम्बन्धित प्रसंग एवं अन्य काल्पनिक और विरोधात्मक सामग्री प्रक्षेपांश ही हैं।

### रामायण में प्रक्षेपों के कारण —

रामायण में प्रक्षेपों के कारण निम्नलिखित हैं—

(१) प्रारम्भ में रामायण की कथा मौखिक रूप में रही होगी। अतः इसके गायन करने वाले कुशीलवो द्वारा ही इसमें विभिन्न अंशों को जोड़ दिया गया होगा। जैसा कि याकोवी के मत को उद्धृत करते हुए डा० बुल्के ने लिखा है कि 'कुशीलव रामायण को गाते-गाते श्रोताओं की रचि का भी ध्यान रखते होंगे। जिन गायकों में काव्यकौशल था वे इन लोक प्रिय अंशों को बढ़ाते थे और इसी तरह आदि रामायण का कलेवर बढ़ाने लगा।' रामायण में कुशीलवो द्वारा राम की सभा में रामायण की कथा के गायन का उल्लेख है।<sup>१</sup>

(२) प्रक्षेपों का दूसरा कारण यह भी रहा होगा कि किसी वर्ग विषेष की महत्ता को स्थिर रखने के लिये उस जाति विशेष

१. राम कथा, पृष्ठ १४१

२. वा० रा० १४१४

के व्यवित ने अपने वर्ग की महत्ता को बढ़ाने के प्रसंग रच कर रामायण में जोड़ दिये होंगे। जैसे कि राम द्वारा ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के कथन के उल्लेख<sup>१</sup> आदि। यह इसलिये किया कि ये प्रसंग महत्त्वपूर्ण उपयोगी और सामाजिक नियम के रूप में स्थिर रहें।

(३) प्रक्षेपों का कारण यह भी रहा होगा कि कुछ कवियों ने अपनी रचना को महत्त्व देने के लिये रामायण में जोड़ दिया होगा।

(४) रामायण में प्रक्षेपों का एक यह भी कारण है कि यह लिपिबद्ध हुई होगी तो लेखबद्ध करने वालों ने इस कृति में जाने या अनजाने दूसरों के नीति के श्लोक एवं लोक प्रचलित अनेक गाथायें लिपिबद्ध कर दी होंगी।

(५) रामायण में अवतार सम्बन्धी कई प्रसंग हैं। यह अवतार सम्बन्धी श्लोक और अनेक पीराणिक कथायें भी प्रस्तुत कृति में प्रक्षेपों के रूप में जोड़ दिये गये होंगे।

**प्रस्तुत:** रामायण ६ काण्डों की कहानी है। जैसा कि मस्ती एम. वेंकटेश आयन्गर ने इस कृति को ६ पुस्तकों या काण्डों की कहानी कहा है।<sup>२</sup> उत्तरकाण्ड पूर्णतः प्रक्षिप्त है। अन्य सभी काण्डों में भी अनेक स्थल प्रक्षिप्त हैं जो कि पहले काल्पनिक, अवतार सम्बन्धी, विरोधी आदि वहे गये हैं। रामायण में जितने भी प्रक्षेपांश हैं वे मूल रामायण की रचना काल के बहुत बाद के नहीं हैं। अतः सम्पूर्ण रामायण (प्रक्षेपांशों सहित) को दृष्टि में रख कर

१. शा० रा० ७।६०।१४

२. द रोइट्री प्राक वाह्योक्ति, पृ० २१

भी प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में रामायण में राजनीतिक तत्त्वों का विवेचन किया गया है।

### बाल्मीकि रामायण का महत्व—

सत्य, शिव एवं सौन्दर्य गुणों से युक्त ऐतिहासिक<sup>१</sup> कृति बाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति का आधार, प्रतीक एवं उद्बोधक है। यह कृति तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक स्थिति, राजनीतिक व्यवस्था आदि समाज के सभी क्षेत्रों का परिज्ञान कराती है। और आदर्श समाज के निर्माण की प्रेरणा देती है।

रामायण कालीन राज्यों का संचालन धर्म द्वारा होता था। उस समय धर्म किसी वर्ग विशेष, जाति विशेष या सम्प्रदायिक तत्त्वों से प्रभावित न होकर सदाचार, आत्मकल्याण तथा लोक-कल्याण आदि भावनाओं के स्तम्भों पर स्थित था। रामायण में वर्णित यही धर्म राज्य का आधार स्तम्भ होने के कारण आज के युग के लिये मार्ग दर्शन के रूप में अवस्थित है। अतः आदर्श राज्य की स्थापना के लिये रामायण में उल्लिखित राजनीतिक तत्त्वों के अवलोकन की आवश्यकता रामायण के महत्व को और भी बढ़ा देती है।

यह कृति न केवल सामाजिक या राजनीतिक आदर्शों की दृष्टि से ही अनुकरणीय है, अपितु यह साहित्य की दृष्टि से भी संस्कृति साहित्य में कथावस्तु, चरित्र चित्रण, भाषा शैली और उद्देश्य की दृष्टि से अपना श्रेष्ठतम् स्थान रखती है। यह कवियों की प्रेरणा का स्रोत भी रही है जैसा कि स्वयं इसी कृति में उल्लिखित है कि 'परं कबोनामाधार'। इसी कृति से प्रेरित होकर

१. वा० रा० ६।१३। ११२

२. वा० रा० १।४।२।

संस्कृत के अन्य कवियों भात, कालिदास, भवभूति आदि ने आदि-कवि वाल्मीकि के महत्व को निर्दिष्ट करते हुये अपनी रचनाओं में इसके कथानक को स्थान दिया है।

संस्कृत साहित्य में रामचरित सम्बन्धी अनेक रामायणों एवं महाकाव्यों अध्यात्म रामायण, रघुवंश महाकाव्य, रावणवध या भट्टिकाव्य, कुमारदास का जानकीहरण, अभिनन्द का रामचरित, क्षेमेन्द्र का दशावतारचरित एवं रामायणमञ्जरी, मानान्तक का रामचन्द्रोदय, विमल सूरि के पउमचरित का हरिषणाचार्य कृत संस्कृत अनुवाद आदि की रचना हुई लेकिन वाल्मीकि रामायण ही अपने महत्व के कारण इतनो लोकप्रिय बनी एवं सभी काव्यों में श्रेष्ठतम स्थान प्राप्त कर सकी।

वाल्मीकि रामायण के महत्व के विषय में कुछ आलोचकों एवं विद्वानों के मत उल्लेखनीय है, जो निम्नांकित है—

डा० बुल्के का मत है कि आदि कवि वाल्मीकि के पूर्व की रामकथा, विषयक कथाओं तथा आस्थान काव्यों की लोकप्रियता तथा व्यापकता निर्धारित करना असम्भव है और इस सामग्री की अल्पता का ध्यान रखकर यह अनुमान दृढ़ हो जाता है कि जिस दिन वाल्मीकि ने इस प्राचीन गाथा साहित्य को एक ही कथा सूत्र में ग्रथित कर आदि रामायण की सृष्टि की थी उसी दिन से राम कथा की द्विग्विजय प्रारम्भ हुई।

पी० मेसेल आसेल ने रामायण के महत्व को दर्शाते हुये लिखा है कि 'आत्मत्याग वीरत्व और पति-पत्नी के प्रेम की यह अनूठी कथा विश्व में जितनी प्रसारित हुई है उतनी कोई अन्य साहित्यिक कृति नहीं।'

आर० वी० जागोरदार ने रामायण को सहज भावों और

सौन्दर्य की कृति मानते हुये लिखा है कि लौकिक संस्कृत के महाकाव्यों में रामायण का सहज स्वाभाविक प्रवाह, उसकी भावप्रवणता, सरलता एवं सौन्दर्य चेतना के कम दर्शन होते हैं। इस कमी की पूर्ति के लिये ये कवि पाण्डित्य प्रदर्शन और बलच्छारों का प्रचर प्रयोग करने लगे। इन प्रासङ्गिक असमानताओं के आजाने पर भी लौकिक संस्कृत साहित्य रामायण के यथासम्भव निकट ही बना रहा।<sup>१</sup>

रबीन्द्र बाबू ने रामायण को सर्वाञ्जीणता को लक्ष्य करके एक बार कहा था कि, रामायण की प्रधान विशेषता यही है कि उसमें घर की ही बातें अत्यन्त विस्तृत रूप से वर्णित हुई हैं। पिता-पुत्र में, भाई-भाई में, स्वामी-स्त्री में जो धर्म बन्धन है, जो प्रीति और भक्ति का सम्बन्ध है उसने रामायण को इतना महान् बना दिया है कि वह सहज में महाकाव्य के उपयुक्त हो गया है।<sup>२</sup>

डा० नानूराम व्यास ने रामायण की महत्ता को स्पष्ट करते हुये लिखा है कि भारतीय साहित्य के आधे से अधिक हिस्से को वाल्मीकि रामायण ने प्रेरित किया है जो संस्कृत में वाल्मीकि के कथानक को लेहर अनेक रामायण निर्मित हुईं वहाँ आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य में भी रामकथा की अद्वितीय व्यापकता दिखाई रहती है। तमिल कंवन रामायण, तेलगु द्विपाद रामायण, मत्यालम रामवरित, कन्नड़ तोखे रामायण, बंगाली कृति वासीय रामायण, हिन्दो रामवरितमानस, उडिया बलरामदास रामायण, असमिया रामायण, मराठी भावार्थ रामायण, गुजराती रामबाल-चरित, कथा राजस्थानी रघुनाथ रूपक गोतों से—ये वाल्मीकि की

१. श्रुमा इन संस्कृत लिटरेचर, पृ० ८, १०

२. प्राचीन साहित्य (डारा रबीन्द्रनाथ ठाकुर), पृ० १, अनुवादक रामदहिन मिथ्र, उद्गत संस्कृत साहित्य का इतिहास, (वाचस्पति नेरोला) पृ० २०८

दिग्भिरुजय के प्रमाण हैं।<sup>१</sup>

वाचस्पति गेरोला ने रामायण के महत्व के विषय में उल्लेख किया है कि रामायण एक दिन अपने अकेले निर्माता की कृति मात्र रहो होगी, किन्तु आज वह कोटि-कोटि नर नारियों के घर-घर की वस्तु है। रानायण निःसन्देह एक महान् कवि की महान् कृति है। उसमें एक और तो अपने महान् निर्माता की अनुपम पाण्डित्य प्रतिना का समावेश है और दसरों और जिस देश एवं धरती में उसका निर्माण हुआ, वहाँ के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और आदर्शमय जीवन में समग्रताओं का एक साथ समावेश है।<sup>२</sup>

बीमनमय नाथ दत्त ने रामायण के महत्व का उल्लेख इस प्रकार किया है कि 'महाभारत के विषय में जो लोकोक्ति प्रचलित है कि जो भारत (महाभारत) में नहीं है वह भारत (भारतवर्ष) में नहीं है, वह रामायण पर भी घटित होती है।'<sup>३</sup>

रामायण की महत्ता के कारण हो इस कृति में इसके स्थायित्व का उल्लेख किया गया है।<sup>४</sup>

अस्तु मानव जीवन के सभी पक्षों को एवं सभी सिद्धान्तों का उल्लेख करने वालों यह कृति वाल्मीकि रामायण अपने महत्व को अक्षुण्ण बनाने में समर्थ है। रामायण की सर्वाङ्गीण भावना का परिचय उसके आकार में ही मिलता है। उसकी इसी सर्वाङ्गीणता के कारण स्वयं कवि ने उसे काव्य,<sup>५</sup> आख्यान<sup>६</sup> और पुरातन

१. रामायण कालीन संस्कृति प० २६४

२. संस्कृत साहित्य का इतिहास, द्वारा वाचस्पति गेरोला प० २०१, २०२।

३. उद्दृत रामायण कालीन संस्कृति, प० ४

४. वा० रा० १।२।३६

५. वा० रा० १।२।४१ एवं वा० रा० १।५।७

६. वा० रा० १।४।२१, २७ एवं वा० रा० १।५।३

इतिहास' कहा है।

रामायण के महत्व के कारण, जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट है इसकी कथा को आधार मानकर अनेक काव्य ग्रन्थ और नाटक आदि तो लिखे ही गए हैं साथ ही साथ इस पर आलोचनात्मक कार्य भी बहुलता से हुआ है एवं अब भी हो रहा है। प्रस्तुत विषय में डा० नानूराम व्यास ने उल्लेख किया है कि आधुनिक काल में रामायण विषयक अध्ययन प्रारम्भ हुये लगभग एक शताब्दी होने को आई है। इस क्षेत्र में लैसेन नामक जर्मन विद्वान अग्रणी माने जाते हैं। वेवर, म्युअर, प्रेडरिक, मोनियर विलियम, याकोवी, हेन्स, विटज, वामगार्टनर, लुडविग, ल्यूडसन, डाल्हमेन, लेवी, हापकिस, मंकडानेल, विटर्ननिक्स, कीथ, पार्जिटर, रवेन, प्रभूति विद्वानों ने एक समालोचक की दृष्टि से बालमीकि रामायण की व्याख्या की। किन्तु पादचात्य विद्वानों ने अधिकतर रामायण के पाठों की समीक्षा, उसके रचना काल के विवेचन तथा उसके ऐतिहासिक तथ्यों के मूल्यांकन में ही अपने को उलझाये रखा। रामायण के रोचक पक्ष उसके सांस्कृतिक अध्ययन की ओर उनका ध्यान नहीं गया। कतिपय भारतीय विद्वानों ने भी अंग्रेजी में रामायण की अन्तरङ्ग परीक्षा की है। स्वर्गीय चिन्तामणि विनायक वेद की 'दि रिडिल आफ दी रामायण' (बम्बई १६०६) में काव्य और इतिहास की दृष्टि से बालमीकि रामायण की समालोचना की गई। कुमारी पी० सी० धर्मा की 'रामायण पोलिटी' (मद्रास १६४१) में रामायणकालीन राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण है। स्वर्गीय वी० यस० श्रीनिवास शास्त्री की 'लेखनसं आन दी रामायण' में रामायण के पाठों का सुन्दर चरित्र चित्रण किया गया है। के० एस० रामाश्वामी शास्त्री की 'स्टडीज इन द रामायण' (बड़ोदा १६८८) में रामायण का ऐतिहासिक, तुलनात्मक एवं काव्य शास्त्री समीक्षण किया गया है।

तथा रामायण की कुछ पहेलियों को सुलझाया गया है। डा० सी० सेन, वी० आर० रामचन्द्र दीक्षिकार, नील माधव सेन, शिवदास बनर्जी, सी० एन० मेहता, वी० एस० सुक्यनकर, सो० शिवराममूर्ति, एस० सो० सरकार, नवीन चन्द्रदास, टी० परमशिवऐयर, जे० एन० समद्वदर, एम० वी० किबे, नीलकण्ठ शास्त्र, के० राघवन, मनमथ साधराय, वी० एच० बड़ेर आदि भारतीय विद्वानों ने भी रामायण पर आलोचनात्मक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, साहित्यिक, कलात्मक आदि दृष्टियों से अनुसंधानपरक ग्रन्थ अथवा लेख लिखे हैं।... हिन्दी के रामायण सम्बन्धी शोध पूर्ण साहित्य में सर्वाधिक उल्लेखनीय कृति डा० वुल्के की 'रामकथा' है।<sup>१</sup>

उपरोक्त कार्य के अतिरिक्त अन्य अनेक विद्वानों ने रामायण पर महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कार्य किया है। रामायण कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुये डा० नानूराम व्यास ने 'रामायणकालीन संस्कृति' एवं 'रामायण कालीन समाज' का प्रकाशन कराया। रामायण कालीन संस्कृति सम्बन्धित विष्णु दामोदर शास्त्री का रामायणकालीन आर्य संस्कृति निबन्ध माला (प्रथम भाग) कार्य भी सामने आया। सन् १६४० ई० एम० बी० आयंगर की 'दि पोट्रो आफ वाल्मीकि' रामायण के श्रेष्ठ स्थलों की आलोचना के रूप में प्रस्तुत की गई। सन् १६६५ ई० में बी० खान ने, 'दि कन्सेप्ट आफ धर्म इन वाल्मीकि रामायण' लिख कर रामायण में उल्लिखित धर्म की विचारधारा को प्रस्तुत किया। इसी प्रकार एन० आर० नावलेकर ने 'ए न्यू एप्रोच टू द रामायण' लिखकर रामायण में वर्णित कथा के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। डा० विद्या मिश्रा ने, 'वाल्मीकि रामायण एवं रामचरित मानस का तुलनात्मक अध्ययन' भी प्रकाश में आया। सन् १६७७ ई० में एस० एन० व्यास की 'इण्डिया इन द रामायण एज' प्रकाशित हुई एवं अभी हाल ही में सन् १६७१ ई० रामाश्रय शर्मा द्वारा

१. रामायण कालीन संस्कृति, पृ० ५

'वाल्मीकि रामायण को सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए 'ए सोशल पोलिटिकल स्टडी आफ दी वाल्मीकि रामायण' प्रस्तुत किया गया।

अनेन प्रकारेण वाल्मीकि रामायण पर बहुलता से आलोचनात्मक कार्य किया गया एवं किया जा रहा है। इस अवाह अमृत सागर में विद्वान गोता लगाते हुए भी नहीं थकते तथा कुछ न कुछ प्राप्ति करके उसे समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार वाल्मीकि रामायण का महत्व स्पष्ट ही है।

### रामायण का उपयोग—

किसी कृति की सार्थकता उसके उपयोग में है। कला कला के लिये ही नहीं होती अपितु उसे जीवन के लिये ही उपयोगी होना चाहिये। जैसा कि डा० रामकुमार वर्मा ने उल्लेख किया है कि 'यह सर्व मान्य है कि साहित्य राष्ट्र की तपस्या है, वह जीवन के अनन्त प्रयोगों की सिद्धि है और समस्त सम्बेदनाओं का साररूप है। वह केवल 'आज' का मनोरंजन ही नहीं है, परन्तु 'कल' का सम्बल भी है। अनः उसमें जीवन का ऐसा परिष्करण या उर्जस्वीकरण है, जिससे मनुष्य को भविष्य में बल मिल सके।'

अस्तु, मनुष्य या समाज के उपयोग की दृष्टि के रामायण पर जब दृष्टिपात किया जाता है तो यह कृति नवरसों के रसास्वादन से आनन्दित करने के अतिरिक्त मनुष्य के जीवन के चार प्रमुख अभीष्ट लक्ष्यों, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति की साधिका, आदर्श समाज की स्थापना, शुभाशुभ का परिज्ञान कराने वाली श्रेष्ठ शिक्षिका और सत्कर्मों को करने की प्रेरणा का लोत, राजा को अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रखने की अधिकारिणी,<sup>१</sup> सामान्य मनुष्य से लेकर राजा को भी परहित और लोकहित की प्रेरणा

१. साहित्य शास्त्र (डा० रामकुमार वर्मा) पृ० ३

२. डा० रा० २१००।४६

देने वाली एवं आदर्श राज्य को स्थापना के लिये उचित निर्देशिका सिद्ध होती है। आसुरी प्रवृत्तियों से बलात् सुप्रवृत्तियों की ओर आकर्षित करने वाली और रामराज्य के आदर्शों<sup>१</sup> का उल्लेख करने वाली यह कृति इसीलिये पुनः हम भारतीयों के हृदय को रामराज्य की स्थापना के लिये प्रेरित करती है। अनेन प्रकारेण वाल्मीकि रामायण वादि काल से भारतीय समाज के लिये उपयोगी रही है एवं उपयोगी रहेगी।

## द्वितीय अध्याय

# रामायण में राज्यों का संगठन

राज्य की परिभाषा—

राज्य (राज्ञोभावः कर्मवा) राजन् में यत् प्रत्यय से बनता है। राज्य का अभिप्राय राजा के क्षेत्र से है। प्राचीन भारतीय राजशास्त्रियों में राज्य के स्वरूप को प्रतिपादित करते हुए इसकी सप्तांग में कल्पना की है। राज्य प्रशासन की आवश्यक सामग्री के ये सात राज्यांग इस प्रकार हैं—स्वामी, अमात्य, सुहृत, कोण, राष्ट्र, दुर्ग (पुर) और वल (सेना)।

कौटिल्य के अनुसार राज्य के दो तत्व, जनता एवं भूमि है।<sup>१</sup> आधुनिक राजनीति विज्ञारदों द्वारा राज्य के चार तत्व माने गये हैं—निश्चित भू-भाग, जनसंख्या, सरकार (पदाधिकारी-व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका) तथा सम्प्रभृता (स्वयं की सत्ता)। इस प्रकार राज्य निश्चित भू-भाग से युक्त क्षेत्र है जिसके निवासी परस्पर एक दूसरे से विधियों द्वारा सम्बन्धित हो। इसमें सुसंगठित जासनतन्त्र होता है एवं अन्य राज्यों से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करने के अधिकार होते हैं।

राज्य का उद्भव—

आदि काल में मनुष्य जंगली था। धीरे-धीरे वह मिल कर एक स्थान पर रहने लगा। सर्वप्रथम वह परिवार या कुलों के रूप में एक स्थान पर रहा होगा। फिर कई परिवार एक साथ समूह बना कर रहने लगे होंगे, ताकि हिसक पशुओं या जात्रुओं से सुरक्षित

रह सके और एक दूसरे की सहायता की जा सके। यह कई परिवार जब एक साथ मिल कर रहे होंगे तो इन्हें ग्राम का रूप मिला होगा। इस प्रकार अलग-अलग कई ग्राम राज्य के उद्भव का कारण बने होंगे। इसका संचालन किसी वर्ग विशेष या व्यक्ति विशेष के हाथ में रहा होगा, ताकि अव्यवस्था और असंयतता उत्पन्न न हो। अराजकता से बचने के लिये राज्य की उत्पत्ति हुई होगी। जैसा कि रामायण में उल्लिखित है कि विना राजा के देश में किसी की कोई वस्तु अपनी नहीं रहती। मछलियों की तरह सब लोग परस्पर एक दूसरे को अपना ग्रास बनाते हैं।<sup>१</sup>

रामायण, महाभारत और दीर्घनिकाय में राज्य की उत्पत्ति के विषय में उल्लेख है। रामायण में उल्लेख है कि सतयुग में मानवीय प्रजा विना राजा के थी।<sup>२</sup> प्रजाजनों ने पाप कृत्यों से बचने के लिये ब्रह्मा से किसी राजा को बनाने के लिए प्रार्थना की।<sup>३</sup> क्योंकि प्रजाजन जानते थे कि राजा के विना व्यवित का स्वायित्व असम्भव है।<sup>४</sup> इस पर ब्रह्मा ने इन्द्रादि लोकपालों के तेज के अंशों से युक्त एक क्षुप नामक पुरुष उत्पन्न करके—उसे पृथ्वी का राजा बनाया।<sup>५</sup> इस प्रकार राजा के बनने से राज्य का प्रादुर्भाव हुआ।

राज्योत्पत्ति के विषय में महाभारत में आया है<sup>६</sup> कि कृतियुग के आदि में न राज्य था न राजा, न दण्ड था और न दण्ड देने वाला। धर्म से प्रजा परस्पर रक्षा करती थी। लेकिन यह स्थिति सदैव न रही। लोग धर्म से विमुख हुए। लोगों में स्वार्य उत्पन्न हुआ।

१. वा० रा० २१६७।३१

२. वही, ७।७।६।३६

३. वही, ७।७।६।३६

४. वही

५. वही, ७।७।६।४२, ४३, ४४

६. महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय ५८।१२, १४, १६

मत्स्य न्याय शुरू हुआ। इस कठिन अवस्था को देखकर सब देवता ब्रह्मा के पास गये। उनकी प्रार्थना सुनकर ब्रह्मदेव ने संसार में धर्मचिरण प्रतिष्ठित कराने के लिये 'विरजा' नामक एक मानस पुत्र को उत्पन्न किया। 'विरजा' को राजा बनाया। प्रजा उसका आदेश पालन करने लगी। इस प्रकार राज्य और राजा की उत्पत्ति हई। इसमें प्रजा को भी सहमति थी। प्रजा ने एक व्यक्ति विशेष को अपने ऊपर राज्य करने का अधिकार इसी शर्त पर दिया था कि वह धर्म और न्याय के साथ शासन करते हुए असाधु का विनाश और साधु का परिव्राण करेगा।

इसी प्रकार दीर्घनिकाय के अनुसार एक व्यक्ति जिसका नाम महाजनसम्भृत् था, जो कि बुद्धिमान था, लोगों ने उससे प्रार्थना की कि वह राजा बने और विनाश को दूर करे। उसने यह स्वीकार किया और लोगों ने उसे राजा के रूप में स्वीकार किया। इस प्रकार राज्य का प्रारम्भ हुआ।'

**वस्तुतः** समाज की उन्नति और उसका अस्तित्व राज्य के संगठन पर ही निर्भर है। मनुष्य की प्रवृत्तियाँ स्वभावतः बुराई की ओर जाती हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर आदि मनुष्य में स्वभावतः ही होते हैं। इन प्रवृत्तियों के संयमन के लिये उचित बन्धन अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के देहिक, देविक और भौतिक कष्ट भी मनुष्य पर आते हैं, उनके निवारणार्थं प्रारम्भ में मनुष्य को एक व्यवस्था या संगठन की आवश्यकता हुई और राज्य का उद्भव हुआ। इस प्रकार मानवता के विकास और सामाजिक व्यवस्था के लिये एक संगठन बना और वह राज्य कहलाया।

**रामायण में राज्यों के प्रकार या शासन पद्धतियाँ—**

वैदिक साहित्य से ही विभिन्न शासन पद्धतियों का परिचय

१. दीर्घनिकाय, तृतीय भाग पृ० ८४।६६।

मिलता है। ऋग्वेद में ही राज्य के विभिन्न प्रकार निर्दिष्ट हैं। राज्य के द्वारा व्यवस्थित रूप ग्रहण करने पर राज्य शक्ति का रूप सामने आता है। वैदिक साहित्य में प्रयुक्त एक राज (ऋग्वेद ८-३७-३) अधिराज (अथर्ववेद ६-६८-२), समाज (ऋग्वेद १-२५-१०), एवं स्वराज्य (ऋग्वेद २-२-१) आदि से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक काल में राज्य शक्ति की स्थापना और उनमें स्तर भेद हो चुका था।<sup>१</sup> ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार राज्य, भोज्य, वैराग्य और साम्राज्य देश के विभिन्न भागों में स्थापित थे।<sup>२</sup> लेकिन भण्डारकर ने इन शब्दों का प्रयोग विभिन्न शासन प्रणालियों के स्थान पर उपाधियों के रूप में माना है।<sup>३</sup> लेकिन अन्य विद्वानों, जैसे पी० एन० बनर्जी ने इन्हें शासन प्रणालियाँ ही माना है।<sup>४</sup> इस प्रकार वैदिक युग से ही राज्यों के विभिन्न प्रकार या विभिन्न शासन पद्धतियों, विशेष रूप से गणतन्त्रात्मक और राजतन्त्रात्मक एवं अल्पजन शासन पद्धतियों का परिचय मिलता है।

बाह्यिक रामायण में राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली का ही उल्लेख है। रामायण में यह राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली दो प्रकार की कही जा सकती है, एक संवेद्धानिक राजतन्त्र या प्रजातन्त्रात्मक राजतन्त्र या मर्यादितराजतन्त्र और दूसरी राजतन्त्रात्मक शासन पद्धति। राजा दशरथ या राजा राम का राज्य संवेद्धानिक राजतन्त्र था और रावण का राज्य राजतन्त्रात्मक राजतन्त्र कहा जा सकता है। रामायण में सम्राट्, सर्वराज, चक्रवर्ति, अधिराज आदि का प्रयोग है लेकिन ये सभी राजा दशरथ एवं उनके पुत्रों की उपाधियों के लिए प्रयुक्त हैं। यह राजतन्त्र शासन पद्धति के ही

१. प्राचीन भारत में राज्य और न्यायपालिका, पृ० १०

२. ऐतरेय ब्राह्मण ८-३-१४

३. सम आस्पेक्ट प्राक एश्यन्ट हिन्दू पालिटी, पृ० ६१।६५

४. उद्गत प्राचीन भारत में राज्य और न्यायपालिका, पृ० ४७

द्योतक हैं। इस प्रकार रामायण में मूलतः राजतन्त्रात्मक शासन पद्धति का ही उल्लेख है।

### रामायण में राज्यों का संगठन—

मनुष्य के संगठित जीवन विताने से राजनीतिक संगठन का प्रारम्भ होता है। इस राजनीतिक संगठन का स्वरूप वैदिक काल से ही स्पष्ट होता है। उस समय कुल या परिवार राजनीतिक इकाई का स्वरूप था। तत्पश्चात् कई कुलों से गोत्र बना, गोत्र से जन, जन से विज्ञ तथा विज्ञों का समन्वित रूप राष्ट्र था।<sup>१</sup>

रामायण के समय तक राजनीतिक संगठन का रूप स्पष्ट हो चुका था राज्य की सीमा निर्धारित हो चुकी थी। इसमें राज्य राष्ट्र, राज्य, जनपद और विषय के रूप में सामने आया। रामायण में राज्य के लिए जनपद,<sup>२</sup> विषय,<sup>३</sup> देश,<sup>४</sup> एवं राज्य<sup>५</sup> का उल्लेख है। पुरी शब्द भी कहीं-कहीं पर राज्य के अर्थ में प्रयुक्त है।<sup>६</sup> सम्भवतः जनपद विषय एवं देश भौगोलिक इकाई के रूप में और राज्य राजनीतिक इकाई के रूप में प्रयुक्त है। जनपद और राष्ट्र सम्पूर्ण देश के लिए प्रयुक्त है।<sup>७</sup> जनपद या राष्ट्र शब्द का प्रयोग राजधानी के अतिरिक्त शेष देश के लिए भी रामायण में प्रयुक्त हुआ है।<sup>८</sup> जनपद या राष्ट्र संवास,<sup>९</sup> ग्राम,<sup>१०</sup> महाग्राम,<sup>११</sup> घोष,<sup>१२</sup>

१. हिन्दू पालिटी, पृ० १२

२. वा० रा० १५४५

३. वही ११६१२२, ११७११०, १११०१२६

४. वही ११५१४४ एवं २१६८१३

५. वही २१२१४, २१५०११, २१६७१६ एवं २१६८१६ आदि

६. वही ११३२१४

७. वही ११५१५ एवं २१५०१५

८. वही २१३४१५५

९. वही २१४६१३

१०. वही २१४६१३

११. वही ४१४०१२२

१२. वही २१८३१५

पट्टन,<sup>१</sup> पुर,<sup>२</sup> या नगर<sup>३</sup> से मिलकर बना। रामायण में राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई ग्राम प्रतीत होती है। ग्राम, महाग्राम, घोष, पट्टन, पर और अतिरिक्त भूमि-पर्वत, बन,<sup>४</sup> खाने,<sup>५</sup> दुर्ग आदि सभी का संगठित रूप राष्ट्र के स्वरूप को स्पष्ट करता है। इसके अतिरिक्त एक स्वतन्त्र राष्ट्र के अन्तर्गत अधीनराज्य भी होते थे।<sup>६</sup> रामायण में यही राज्यों का स्वरूप था।

### रामायणानुसार राज्य के कार्य और उद्देश्य

राज्य मानवीय संस्था है। व्यक्ति के आवश्यक कार्यों की पूर्ति और व्यक्ति के आवश्यकता है। जैसा कि पूर्व निर्दिष्ट है, जारीरांगों की तरह राज्य के दो सप्तांग होते हैं। राज्य प्रशासन के आवश्यक तत्त्व इन राज्यांगों के द्वारा ही राज्य के समस्त कार्य कियान्वित होते हैं। इसी लिए कौटिल्य ने इन्हें राजसम्पद कहा है।<sup>७</sup> परस्पर उपकारी इन सप्तांगों से ही राज्य का निर्माण होता है।<sup>८</sup> इन्हीं के मिलकर कार्य करने पर ही राज्य का संगठन, उसकी दृढ़ता एवं स्थायित्व निर्भर है। इन सप्त प्रकृतियों के सम्यक कार्य करने से ही राज्य का विकास और उत्कर्ष होता है।

बाल्मीकि रामायण के अनुसार राज्य के इन सप्तांगों के प्रति अग्रमत रहने पर ही राज्य की रक्षा की जा सकती है।<sup>९</sup> इन पर

१. वा० रा० ४१४०।२४

२. वही १।३।३६ एवं १।१।८

३. वही १।१।१।६ एवं १।१।१।२४

४. वही २।३।४।५५

५. वही २।१।०।०।४६

६. वही १।५।१४

७. अतिरिक्तः प्रकृतयः सप्तताः स्वगणोदयाः, उक्ताः प्रत्यंग भूतास्ताः प्रकृता राजसम्पदः। प्रम्भशास्त्र ६।१।१

८. परस्परो उपकारोदं सप्तांगं राज्यमुच्यते। कामन्दकनीतिसार—घट्टाय ४

९. वा० रा० २।५।२।७२

चोतक हैं। इस प्रकार रामायण में मूलतः राजतन्त्रात्मक शासन पद्धति का ही उल्लेख है।

### रामायण में राज्यों का संगठन—

मनुष्य के संगठित जीवन विताने से राजनीतिक संगठन का प्रारम्भ होता है। इस राजनीतिक संगठन का स्वरूप वैदिक काल से ही स्पष्ट होता है। उस समय कुल या परिवार राजनीतिक इकाई का स्वरूप था। तत्पश्चात् कई कुलों से गोत्र बना, गोत्र से जन, जन से विश्व तथा विश्वों का समन्वित रूप राष्ट्र था।<sup>१</sup>

रामायण के समय तक राजनीतिक संगठन का रूप स्पष्ट हो चुका था राज्य की सीमा निर्धारित हो चुकी थी। इसमें राज्य राष्ट्र, राज्य, जनपद और विषय के रूप में सामने आया। रामायण में राज्य के लिए जनपद,<sup>२</sup> विषय,<sup>३</sup> देश,<sup>४</sup> एवं राज्य<sup>५</sup> का उल्लेख है। पुरी शब्द भी कहीं-कहीं पर राज्य के अर्थ में प्रयुक्त है।<sup>६</sup> सम्भवतः जनपद विषय एवं देश भौगोलिक इकाई के रूप में और राज्य राजनीतिक इकाई के रूप में प्रयुक्त है। जनपद और राष्ट्र सम्पूर्ण देश के लिए प्रयुक्त है।<sup>७</sup> जनपद या राष्ट्र शब्द का प्रयोग राजधानी के अतिरिक्त शेष देश के लिए भी रामायण में प्रयुक्त हुआ है।<sup>८</sup> जनपद या राष्ट्र संवास,<sup>९</sup> ग्राम,<sup>१०</sup> महाग्राम,<sup>११</sup> घोष,<sup>१२</sup>

१. हिन्दू पालिटी, पृ० १२

२. वा० रा० १५१५

३. वही १६२२, १७१०, ११०१२६

४. वही १५१४ एवं २१६८।१३

५. वही २।२।४, २।५।०।११, २।६।७।६ एवं २।६।८।६ यादि

६. वही १।३।२।५

७. वही १।५।५ एवं २।५।०।५

८. वही २।३।४।५।५

९. वही २।४।६।३

१०. वही २।४।६।३

११. वही ४।४।०।२२

१२. वही २।८।३।१५

पटटन,<sup>१</sup> पुर,<sup>२</sup> या नगर<sup>३</sup> से मिलकर बना। रामायण में राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई ग्राम प्रतीत होती है। ग्राम, महाग्राम, घोष, पटटन, पर और अतिरिक्त भूमि-पर्वत, वन,<sup>४</sup> खाने,<sup>५</sup> दुर्ग आदि सभी का संगठित रूप राष्ट्र के स्वरूप को स्पष्ट करता है। इसके अतिरिक्त एक स्वतन्त्र राष्ट्र के अन्तर्गत अधीनराज्य भी होते थे।<sup>६</sup> रामायण में यही राज्यों का स्वरूप था।

### रामायणानुसार राज्य के कार्य और उद्देश्य

राज्य मानवीय संस्था है। व्यक्ति के आवश्यक कार्यों की पूर्ति और व्यक्ति तथा राज्य के हितों के लिये राज्य की आवश्यकता है। जैसा कि पूर्व निर्दिष्ट है, शरीरांगों की तरह राज्य के दो सप्तांग होते हैं। राज्य प्रणासन के आवश्यक तत्त्व इन राज्यांगों के द्वारा ही राज्य के समस्त कार्य क्रियान्वित होते हैं। इसी लिए कौटिल्य ने इन्हें राजसम्पद कहा है।<sup>७</sup> परस्पर उपकारी इन सप्तांगों से ही राज्य का निर्माण होता है।<sup>८</sup> इन्हीं के मिलकर कार्य करने पर ही राज्य का संगठन, उसकी दृढ़ता एवं स्थायित्व निर्भर है। इन सप्त प्रकृतियों के सम्यक कार्य करने से ही राज्य का विकास और उत्कर्ष होता है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार राज्य के इन सप्तांगों के प्रति अग्रमत रहने पर ही राज्य की रक्षा की जा सकती है।<sup>९</sup> इन पर

१. वा० रा० ४।५०।२४

२. वही १।३।३६ एवं १।१।८

३. वही १।१।६ एवं १।१।२४

४. वही २।३।४।५५

५. वही २।१।०।४६

६. वही १।५।१४

७. ग्रिवोजा: प्रकृतयः सप्तताः स्वयणोदयाः, उवताः प्रस्तंग भूतास्ताः: प्रकृता राजसम्पदः। प्रर्थयास्त्र ६।१।१

८. परस्परो उपकारोदं सप्तांगं राज्यमुच्यते। कामन्दकनीतिसार—ग्रन्थाय ४

९. वा० रा० २।५।२।७२

समान दृष्टि रखने पर ही राज्य का स्थायित्व रहता है।<sup>१</sup> वस्तुतः जब यह राज्यांग परस्पर उपकारी भाव एवं समान भाव से कार्य करते हैं तो राज्य का स्थायित्व सुदृढ़ होता है।

राज्य धर्म और अर्थ एवं काम का मूल माना जाता है।<sup>२</sup> अतः राज्य के जनता के प्रति धर्म, अर्थ और काम सम्बन्धी कार्य होते हैं। प्रजार्थ धर्म, अर्थ और काम के फल के साधन के लिये राज्य के अंगों द्वारा सम्पादित होने वाले कार्य दो श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं—आन्तरिक कार्य और बाह्य कार्य।

राज्य के आन्तरिक कार्यों में प्रजा के जीवन और सम्पत्ति की रक्षा, सामाजिक व्यवस्था और लोक हित (शिक्षा का प्रसार, मार्ग निर्माण, कृषि कार्य का विकास आदि) एवं लोकानुरंजन करना आदि का अन्तरभाव है। राज्य के बाह्य कार्यों के अन्तर्गत बाह्य शत्रुओं से रक्षा करना एवं राज्य की वृद्धि करना आदि का समावेष होता है। ताकि राज्य का संगठन धृत, विक्षतन हो और उसका सतत्व विकास एवं उत्कथ हो।

रामायण में राज्य लोककल्याणार्थ एक संस्था के रूप में वर्णित है।<sup>३</sup> इसे प्रजा का योग क्षेम कारक कहा गया है।<sup>४</sup> इसमें राज्य प्रजा के सम्पूर्ण क्रिया-कलापों के साधक के रूप में वर्णित है। रामायण के अनुसार राज्य प्रजा को दुर्भिक्ष से बचाये,<sup>५</sup> देविक, भौतिक, और देहिकतापों से रक्षा करने में समर्थ हो और नगर एवं राष्ट्र को धन धान्य से पूर्ण रखे,<sup>६</sup> सभी वर्णों को अपने अपने

१. वा० रा० ४।२६।१।

२. धर्माधिकामपलायराज्यायनमः । नीतिवाच्यामृतम् । पू० ७

३. वा० रा० १।१।४६, ६०, ६३

४. वही २।६।७।३४

५. वही १।१।४८

६. वही १।१।६०, ६१, ६२, ६३

कर्तव्य से लगावे,<sup>१</sup> राज्य का वर्धन करे,<sup>२</sup> समस्त प्रजा को धर्मशील एवं सुसंयत बनाये,<sup>३</sup> कामी, कदर्य और नृशंसों को आश्रय न दे,<sup>४</sup> धर्मात्मा, सत्यवान एवं शीलवान को प्रध्य दे,<sup>५</sup> चौर्यवृत्ति को न पनपने दे,<sup>६</sup> भूठ, अशिक्षित एवं परनिन्दक को आश्रय न दे,<sup>७</sup> सभी में राष्ट्रीयता का भाव उत्पन्न कराये,<sup>८</sup> प्रजाजनों को गुण सम्पन्न बनाये।<sup>९</sup> इस प्रकार राज्य अपनी सब प्रकार से संवृद्धि करे।<sup>१०</sup> इसके अतिरिक्त लोक कल्याण के कार्य भी राज्य द्वारा करणीय बताये गये हैं। रामायणानुसार तिचाई की व्यवस्था,<sup>११</sup> सावंजनिक स्थलों का निर्माण,<sup>१२</sup> नूरतनशालादि की व्यवस्था, राजपथों पर प्रकाश की व्यवस्था,<sup>१३</sup> राजमार्गों की व्यवस्था,<sup>१४</sup> एवं हर प्रकार की सुरक्षात्मक व्यवस्था<sup>१५</sup> करना राज्य का कर्तव्य है। इसके अतिरिक्त धन का दुरुपयोग करने से प्रजा को बचाना,<sup>१६</sup> प्रजा को सदाचरण के लिये प्ररित करना तथा व्यवहार और न्याय के प्रति जागरुक रहना आदि राज्य के कर्तव्यों के रूप में कृति में

- 
१. वा० रा० १।१।६३ एवं १।६।१६
  २. वही १।५।१६
  ३. वही १।६।१६
  ४. वही १।६।१८
  ५. वही १।६।१६
  ६. वही १।६।१२
  ७. वही १।६।१४
  ८. वही १।६।१६
  ९. वही १।६।१३-१५
  १०. वही १।६।२८
  ११. वही २।१०।०।४४, ४५, ४६
  १२. वही २।६।११
  १३. वही २।६।१८
  १४. वही १।५।१८
  १५. वही १।५।१०, १३
  १६. वही २।१०।०।४७, ४८, ४९

उल्लिखित है। रामायण में असहाय, अनाथ और वृद्धों की उचित व्यवस्था करना तथा निर्धन को धन देना, दान करना दुर्भिक्ष के समय सहायता करना आदि भी राज्यों के कर्तव्यों के रूप में वर्णित है।

राज्य के बाह्य कार्यों के रूप में राज्य की शान्ति को भंग करने के कारणों का निवारण करना राज्य का प्रधान कर्तव्य था इसके लिये राज्य द्वारा बाह्य शत्रुओं के प्रति साम, दाम, भेद और दण्ड इन चार नोतियों तथा षड्गुणों, संवि, विग्रह, आसन, यान, संशय और दुर्धीभाव का आश्रय लिया जाता था। इसके अतिरिक्त राज्य को समीपस्थ दूरस्थ राज्यों से मंत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना करना भी अपेक्षित था। राज्य की समृद्धि की वृद्धि के लिये राज्य का विस्तार करना भी, रामायण में, राज्य के बाह्य कार्य के रूप में वर्णित है। इस प्रकार राज्य को हर प्रकार की कठिन स्थिति से बचाने के लिए और उसके उत्कर्ष शान्ति, विकास, आदि के हेतु राज्य के कार्यों का रामायण में विस्तार से वर्णन है।

अनेन प्रकारेण रामायण में राज्य समाज का आधार और उसके कल्याण का मुख्य साधन समझा जाता था। अतः उसके कार्य हितकारी एवं विकासात्मक थे। उसके कार्यों में समाज के कल्याण की भावना का नियोजन था। राज्य के कार्यों का संचालन केवल राजा ही या मन्त्री ही नहीं करता था अपितु समस्त कर्मचारी, विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख, पौरजनपद, निगम आदि भी राज्य के कार्यों में सहयोग देते थे।<sup>१</sup> इस प्रकार राज्य की कार्यवाही राजा, मंत्रियों और लोकप्रिय संस्थाओं के सक्रिय सहयोग से हीती थी।

**राज्य का उद्देश्य—**

राज्य युग का निर्माता कहा गया है।<sup>२</sup> इसका लक्ष्य राज्य का

१. वा० रा० २।२।१ एवं वा० रा० २।२।१६

२. महाभारत शान्तिपर्व, ६३।२५

सर्वाङ्गीन विकास करना है। रामायण के अनुसार राज्य का उद्देश्य राज्य की भौतिक उन्नति के साथ-साथ प्रजाजनों में आध्यात्मिक भावना का उदय करना भी था। इस प्रकार राज्य में शान्ति, सुरक्षा, व्यवस्था एवं न्याय की स्थापना करना तो राज्य का लक्ष्य ही था साथ ही लोगों में धर्म अर्थ और काम तथा मोक्ष की सिद्धि के लिए आस्तिकता की भावना को उदय करना भी इसका उद्देश्य था।<sup>१</sup> एवं उनमें धार्मिक वृत्ति को उत्पन्न करना भी राज्य का लक्ष्य था।<sup>२</sup> इस प्रकार राज्य का उद्देश्य प्रजा की भौतिक उन्नति के साथ-साथ नैतिक उन्नति करना भी था। राज्य प्रजा के धर्म, अर्थ एवं काम का सम्बर्धन करने को उचित रहता था। राज्य की सर्वोच्च शक्ति राजा भी त्रिवर्ग की प्राप्ति में तत्पर रहता था।<sup>३</sup> धर्म का तात्पर्य उस समय किसी सम्प्रदाय से न था अपितु धर्म के अन्तर्गत नैतिकता, सदाचार, सत्यवादिता, परोपकार, सन्तोष, निर्लोभता आदि समाहित थे।<sup>४</sup> इस प्रकार सत्य, सदाचार, नैतिकता आदि गुणों से समन्वित धर्म के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन करता हुआ तत्कालीन समाज सम्पन्नता को प्राप्त था। राज्य प्रजा को धर्म पूर्वक अर्थ का चिन्तन कराता है। उसे धर्मेण अंजित अर्थ के उचित उपभोग से सुख भोगने के लिए प्रेरित करता था तथा उसकी कामना की तृप्ति या सुख का सम्बर्धन संगीत, नृत्य, चित्रकला, स्थापत्यकला, आदि कलाओं के पोषण एवं संस्कृति के प्रचार व प्रसार के माध्यम से करता था। राज्य प्रजा की विघ्न बाधाओं से रक्षा करता हुआ धर्म, अर्थ और काम का सही उपभोग करता हुआ उनकी उन्नति करने में तत्पर रहता था। समाज में सभी को समान उन्नति के अवसर प्रदान किए गये थे।

१. वा० रा० १।६।८

२. वा० रा० १।६।९

३. वा० रा० १।६।५

४. वा० रा० १।६।६,६

सभी वर्णों को समान अधिकार थे। सभी स्वतन्त्र थे लेकिन स्वच्छन्दता से दूर थे। सभी प्रजाजन धर्म, अर्थ और काम के सम्यक् उपयोग से अपने इहलोक और परलोक के मार्ग को प्रशस्त करते हुए अपने को मोक्ष या उच्च पद का अधिकारी समझते थे।

इस प्रकार प्रजाजनों में स्वतन्त्रता एवं समानता की भावना का उदय करके, उन्हें सर्वतः सुरक्षित करके शान्तिपूर्ण एवं सुव्यवस्थित जीवन विताने के लिए प्रेरित करके,<sup>१</sup> सभी लोगों की ज्ञानेषणा और धर्मेषणा की तृप्ति करके,<sup>२</sup> उनकी भौतिक उन्नति करके और उनमें नेतृत्व और आध्यात्मिक भावना को उत्पन्न करके उनका सर्वाङ्गीण विकास करना ही राज्य का परम उद्देश्य था।

**रामायण का एक तत्त्व और उसका रूप—**

रामायण में एकतन्त्र और राजतन्त्र राज्यों का वर्णन है। इनमें राजा ही सर्वोच्च सत्ताधारी था। लेकिन वह अपनी शक्तियों का राज्य के कार्यों में स्वच्छन्दता पूर्वक उपयोग नहीं कर सकता था। उसके लिए उचित प्रतिबन्ध थे। दशरथ, राम, रावण, बालि, सुग्रीव आदि सभी राजाओं के लिए मंत्रणा, मार्गदर्शन देने के लिए एवं उन्हें स्वच्छन्द बनने से रोकने के लिए मन्त्रपरिषदें थी। राजा सर्वोच्च सत्ताधारी होते हुए भी प्रजा के सेवक के रूप में था।<sup>३</sup> उसकी मनमानी तो दूर रही, उसे प्रजा के हित के लिए अपने सुखों और अभीष्ठ का भी परित्याग करना पड़ता था। राजा दशरथ ने लोक कल्याण के लिए अपने प्रिय बालकों राम और लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षार्थ विश्वामित्र के लिए सौंप दिया था।<sup>४</sup> राजा राम ने भी लोकरंजनार्थ अपनी प्रिय महिषी सीता का परित्याग कर

१. वा० रा० ११।६०, ६३ एवं १।६।६ आठि

२. वही १।६।१४

३. वही ७।७।४।३।

४. वही १।२।२।३

दिया था।<sup>१</sup> रामायण में राजा को देश की सुख समृद्धि एवं विपत्ति का उत्तरदायी कहा गया है।<sup>२</sup> राजकार्यों में राजा को सहायतार्थ मन्त्रिपरिषद् के अतिरिक्त पौरजनपद, निगम आदि संस्थायें भी थी। अतः रामायण में एक तन्त्र राज्य संवैधानिक राजतन्त्र के अर्थ का चोतक है, जैसाकि आगे शासन व्यवस्था एवं समाज व्यवस्था के बर्णन से स्पष्ट हो जायेगा।

### रामायण में राज्यों का वर्णन—

रामायण काल में राज्य छोटे छोटे थे। बड़े बड़े नगर ही राज्य बन गए थे। हाँ इतना अवश्य था कि उनके आस पास के छोटे-छोटे गाँव भी उनमें सम्मिलित थे, जैसे कि अयोध्या का समीपस्थ नन्दीग्राम भी कौशल राज्य की सीमा के अन्तर्गत था।

उत्तरी भारत में आर्यों के राज्य थे। इनका क्षेत्र हिमालय और विन्ध्य पर्वत के मध्य भाग का भूभाग था। इस भूभाग में मिथिला, काशी, कौशल, केकय, सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र, विशाला, शंकाशी, अंग, बंग, मगध, मत्स्य, आदि स्वतन्त्र राज्य थे। कौशल राज्य ही उत्तर भारत में सबसे बड़ा राज्य था लेकिन यह बहुत बड़ा न था। यन जाते समय राम ने रथ में चलकर एक ही दिन में इसकी सीमा पार कर ली थी।<sup>३</sup> कौशल राज्य के निकटवर्ती प्रान्त या भूभाग के सामन्त राजा इसके अधीन रहते थे। अयोध्या में सामन्त राजाओं का जमाव रहता था।<sup>४</sup> विश्वामित्र के इस कथन से, कि वया आपके (दशरथ के) सामन्त राजा और जनुगण आपके वश में हैं,<sup>५</sup> स्पष्ट होता है कि राजा दशरथ के अधीन अनेक सामन्त राजा थे।

१. वा० रा० ७ संग ४५, ४६

२. वही ११६।८

३. वही २।५०।१०

४. वही १।५।१४

५. वही १।१८।४७

राजा दशरथ स्वयं भी अपने को समस्त वसुन्धरा का स्वामी मानते थे।<sup>१</sup> इसी प्रकार राम ने भी बालि से कहा था कि, उसका राज्य अयोध्या के अन्तर्गत आता है उन्होंने उसकी भूमि को इक्षवाकु राजाओं की भूमि कहा।<sup>२</sup> लेकिन रामायण में यह स्पष्ट नहीं है कि बाली कौशल राज्य के अधीन था।

रामायण के उद्धरणों से यह अवश्य ही स्पष्ट होता है कि अपने पढ़ोसी राज्यों पर कौशल नरेश दशरथ का अधिकार रहा होगा। राजा दशरथ ने इस सन्दर्भ में केकई से कहा था कि द्राविण, सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र, दक्षिणापथ, वंगाल, अंग, मगध, मत्स्य, काशी, और कौशल ये सब देश, जहाँ तरह तरह की वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं और जो धनधान्य एवं पशुओं से भरे पूरे हैं, हमारे अधीन हैं।<sup>३</sup> राजा दशरथ का यह कथन यह संकेत करता है कि उनके अधीन अनेकों राज्य रहे होंगे। इत्तिए वे नतसामन्तः कहे गए हैं।

विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में बानरों और राक्षसों के राज्य थे। इस भू-भाग में विन्ध्य और शिवाला पर्वत के मध्य में दण्डक वन था।<sup>४</sup> यहाँ कुछ हो सन्यासियों को छोड़कर राक्षसों का निवास था। इसी दण्डक वन में जन स्थान था, जो कि राक्षसों की बाहरी सीमा थी। दण्डकारण्य के दक्षिण में किञ्चिन्धा राज्य एवं अन्य राज्यों आनंद, चोल, पाण्य और केरल एवं लंका द्वीप था।

रामायण में प्रमुख रूप से कौशल, किञ्चिन्धा और लंका राज्यों का ही विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। रामायण में उल्लिखित राज्यों का विवरण निम्नांकित है—

१. वा० रा० २।१०।३८

२. वही ४।१८।६

३. वही २।१०।३८, ३९ एवं २।१०।३६, ४०

४. वही ७।७।१६ एवं ७।८।१६

## कौसल जनपद—

यह आधुनिक अवधि प्राप्त है। रामायण में कौसल जनपद को विस्तृत, महान्, और समृद्धशाली कहा गया है। इसकी स्थिति सरयू नदी के किनारे निर्दिष्ट है।<sup>१</sup> इसकी राजधानी मनु के द्वारा बसाई गई अयोध्या नगरी थी।<sup>२</sup> अयोध्या अपनी प्राचीनता के कारण प्रसिद्ध है। इसका वर्णन अथवं संहिता में विस्तृत रूप में आया है। इस संहिता में इस पुर का कई मन्त्रों में महत्व दर्शाया गया है।<sup>३</sup> शिव संहिता में यह अनेक नामों नन्दिनी, सत्या, साकेत, कौसला, राजधानी, ब्रह्मपुरी और अपराजिता से युक्त अष्टदल पद्म के आकार की, नवद्वारों से युक्त और धर्म के धनी लोगों की नगरी कही गई है।<sup>४</sup> इस संहिता में यह लीला भूमि के रूप में उल्लेख की गई है।

इसी प्रकार वसिष्ठसंहिता<sup>५</sup> और वृहद् ब्रह्म संहिता<sup>६</sup> आदि में अयोध्या का महत्व उल्लिखित है। वाल्मीकि ने इसकी स्थिति, स्थायित्व, समृद्धि और शोभा का वर्णन रामायण में विशद रूप से किया है।<sup>७</sup> कौशल जनपद में स्थित अयोध्यापुरी का वर्णन कवि ने विस्तार से किया है। इसके अतिरिक्त इसी जनपद में स्थित नन्दिग्राम का भी उल्लेख किया गया है। यह अयोध्या से एक कोस की दूरी पर स्थित रमणीय ग्राम था।<sup>८</sup> भरत ने राम के बनवास जाने पर नन्दिग्राम से अवधि के जासन का संचालन किया था।<sup>९</sup>

१. वा० रा० १४१५

२. वही १४१६

३. अथवं १०।२।२७ से ३३ मन्त्र

४. विवरसंहिता, पटल, ५ अध्याय २०

५. वसिष्ठ संहिता २६

६. वृहद् ब्रह्म संहिता—पाद ३, अध्याय १

७. वा० रा० १५

८. वही ६।२।२७, २८, २९

९. वही २।११।२२

रामायण में कौसल जनपद के अन्य भागों की (ग्राम और नगर) समृद्धि का भी वर्णन किया गया है।<sup>१</sup>

राम ने कौसल जनपद को दो भागों में विभक्त किया था। कौसल में कुश और उत्तर कौसल में लव राजपद पर अभिषिक्त किए गए थे।<sup>२</sup>

### किञ्चिकन्धा राज्य—

यह विलारी जिले में हंपी से चार मील दूर तुंगभद्रा नदी पर स्थित अनागोदी नामक स्थान बताया गया है।<sup>३</sup> यह वानरराज बालि का राज्य था। तत्पश्चात् सुग्रीव ने इस पर राज्य किया। इसकी राजधानी किञ्चिकन्धापुरी थी। यह एक पर्वतीय राज्य की गुफा थी।<sup>४</sup> जो कि अतुलप्रभा वाली थी।<sup>५</sup> यह प्रग्रवण पर्वत के समीप स्थित थी।<sup>६</sup> यह दुर्गम थी।<sup>७</sup>

### लङ्घा देश—

यह राक्षसों का देश था। इसमें रावण राज्य करता था।<sup>८</sup> यह देश लङ्घा से लेकर जनस्थान तक विस्तृत था। लङ्घापुरी इसकी राजधानी थी। यह पुरी पर्वत शृङ्ख (त्रिकूट) पर स्थित चारों ओर से समुद्र से घिरी हुई थी।<sup>९</sup> यह पर्वत, वन, समुद्र एवं कृतिम दुर्ग

१. वा० रा० २१५००८, ६, १०

२. वही ७।१०७।७

३. रामायण कालीन समाज—परिशिष्ट

४. वा० रा० १।१।६५ एवं ४।२।६।४०

५. वही ४।१।१।२।१

६. वही ४।२।७।२।६

७. वही ६।२।८।३।०

८. वही ४।४।०।१।०

९. वही ४।५।८।२।३

से घिरी हुई अमेघ थी।<sup>१</sup> इस पुरी की व्यवस्था राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी।<sup>२</sup>

उपरोक्त तीन विशाल एवं प्रसिद्ध देशों के अतिरिक्त अन्य छोटे-छोटे देशों का भी रामायण में उल्लेख है। वे इस प्रकार हैं—

अंग देश—

इस देश पर राजा रोमपाद का शासन था।<sup>३</sup> रामायण में इस देश को स्थिति गंगा और सरयू नदी के संगम पर निर्दिष्ट है। यहाँ पर शिवजी तपस्या करते थे कामदेव ने उनकी तपस्या में विघ्न उत्पन्न की। शिवजी ने अपने तृतीय नेत्र से उसे भस्म कर दिया। उसके शरीर के सब अङ्ग जहाँ बिखरे, उस प्रदेश को अङ्ग देश की संज्ञा प्राप्त हुई।<sup>४</sup> यहाँ वह अंग देश है। यह देश राजा दशरथ के अधीन था।<sup>५</sup>

अङ्ग देश आधुनिक भागलपुर या उसके निकट का प्रदेश बताया गया है।<sup>६</sup>

आनन्द—

भारत के दक्षिण में स्थित यह एक देश था, जहाँ सीता की खोज के लिये सुग्रीव ने अंगद को भेजा था।<sup>७</sup> यह वर्तमान तेलंगाना माना जाता है।<sup>८</sup>

१. वा० रा० ६।३।२०, २१, २२

२. वही ६।३६

३. वही १।६।७ एवं १।१३।२३

४. वही १।२।३।१४

५. वही २।१०।३६

६. रामायण कालीन समाज, परिविष्ट

७. वा० रा० ४।४।१।१२

८. संस्कृत हिन्दी कोश—परिविष्ट ३

**उत्कल—**

यह देश वर्तमान उड़ीसा के दक्षिण में स्थित है और गोदावरी के मुहाने तक फैला हुआ है।<sup>१</sup>

**कर्लिंग—**

इसकी स्थिति उड़ीसा से दक्षिण तथा द्रविण देश से उत्तर पूर्व क्षेत्र में मानी जाती है।<sup>२</sup>

**करथ—**

यह देश आधुनिक वर्षेल खण्ड का क्षेत्र माना जाता है।<sup>३</sup>

**कामपित्य—**

रामायणानुसार यहाँ राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे।<sup>४</sup> यह आधुनिक फर्खावाद है।<sup>५</sup>

**काम्बोज—**

यह देश घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था।<sup>६</sup> इसकी स्थिति कश्मीर के उत्तर में थी। लोगमेंत की 'उच्च थेणी का भारत मानचित्र' पुस्तक में २५० ई० पूर्व के भारत ऐतिहासिक मान चित्र में कम्बोज को कश्मीर के पूर्व और हिमालय के उत्तर में दिखाया गया है।<sup>७</sup> यह हिन्दूकृष्ण पर्वत का वह प्रदेश होगा जहाँ यह बलख से गिलगित को पृथक करता है तथा तिब्बत और लद्दाख तक फैला हुआ है।<sup>८</sup>

१. वा० रा० ४४११०, संस्कृत हिन्दी कोष—परिशिष्ट ३

२. वा० रा० ४४१११

३. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

४. वा० रा० १२४१७

५. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

६. वा० रामायण १३३१६

७. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

८. वा० रा० १६२२

९. उदूत, कालिदास का भारत, भाग १ पाठ १०४, १०५

१०. संस्कृत हिन्दी कोष, परिशिष्ट ३

## कारपथ—

यह रामायण में एक रमणीय निरामय देश के रूप में वर्णित है।<sup>१</sup> अंगदीया इसकी राजधानी थी यहाँ लक्ष्मण के पुत्र अंगद का राज्य था। इसे राम ने अंगद के लिए बसाया था।<sup>२</sup> इसे सिन्धु नदों के पश्चिम किनारे पर बन्नू जिले में स्थित आधुनिक कारावाग कहा गया है।

काशी<sup>३</sup>—

यह देश आधुनिक बनारस का विस्तृत क्षेत्र रहा होगा। यहाँ पर राजा दशरथ का अधिपत्य था।<sup>४</sup> रामायण में उल्लिखित एक कथा के अनुसार प्राचीन काल में काशी के राजा पुश्टवा थे।<sup>५</sup>

## केकथ—

केकथी के पिता अश्वपती इसके राजा थे।<sup>६</sup> राजगृह इसकी राजधानी थी।<sup>७</sup> यह देश भेलम और चिनाव नदियों के मध्य का प्रदेश था जो कि आधुनिक शाहपुर गुजरात है।<sup>८</sup> आष्टे के अनुसार यह देश सिन्धु देश की सीमा बनाने वाला कहा गया है।<sup>९</sup>

## केरल—

यह दक्षिण भारत में स्थित एक देश था।<sup>१०</sup> इसमें आधुनिक

१. वा० रा० ७।१०।२।५

२. वही ७।१०।२।८, १३

३. वही १।१३।२२ एवं ४।४।०।२२

४. वही २।१०।३।६

५. वही ७।५।६।२।५

६. वही १।१।३।२।३, २।४

७. वही २।७।०।१ एवं २।७।१।१

८. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

९. संस्कृत हिन्दी कोष, परिशिष्ट ३

१०. वा० रा० ४।४।१।१२

कानड़ा, मलावार, और त्रावणकोर शामिल कहे गए हैं।<sup>१</sup>

### गान्धार—

यह गन्धवौं का देश था।<sup>२</sup> यह सिन्धु नदी के दोनों ओर बसा हुआ था। भारत द्वारा निर्मित तक्षशिला इसका प्रसिद्ध नगर था।<sup>३</sup>

### चोल—

यह दक्षिण भारत में स्थित एक देश था।<sup>४</sup> यह कावेरी के तट पर बसा हुआ मैसूर प्रदेश का दक्षिण भाग है।<sup>५</sup>

### जनस्थान—

मधुमन्तपर (विन्ध्याचल और शेवल पर्वत के बीच का भाग) के उत्तर हो जाने पर तपस्वियों के निवास करने के कारण इसका नाम जनस्थान पड़ा।<sup>६</sup> रावण का छोटा भाई 'खर' यहाँ राज्य करता था।<sup>७</sup> डा० व्यास ने इसे औरंगाबाद तथा कृष्णा और गोदावरी नदी के मध्य स्थित देश कहा है।<sup>८</sup>

### दशर्णि<sup>९</sup>—

डा० व्यास के अनुसार यह भेलसा, वेत्रवती तथा बुन्देलखण्ड की अन्य छोटी नदियों का प्रदेश था।<sup>१०</sup> यह मालवा का पूर्वी भाग था।

१. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
२. वा० रा० ७।१०।१।१०, ११
३. वही ७।१०।१।१० से १५
४. वही ४।४।१।१२
५. संस्कृत हिन्दी कोश, परिशिष्ट ३
६. वा० रा० ७।८।१।१६
७. वही ३।२।०।१२
८. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
९. वा० रा० ४।४।१।१०
१०. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

## पंचाल—

केकम देश को जाते समय वर्षिष्ठ के दूत इस देश के मध्य से गए थे।<sup>१</sup> यह वर्तमान रुहेल खण्ड है।<sup>२</sup> यह गंगा और यमुना का मध्यवर्ती भाग था।<sup>३</sup>

## पाण्ड्य—

यह दक्षिण भारत का देश था।<sup>४</sup> डा० व्यास ने इसमें वर्तमान तिनेवेल्ली और मदुरा जिलों को जामिल किया है।<sup>५</sup> यह चोल देश के दक्षिण पश्चिम में विचमान देश बताया गया है।<sup>६</sup>

## बाल्हीक—

रामायण में यह देश अश्वों के लिये प्रसिद्ध कहा गया है।<sup>७</sup> यह वर्तमान वलख है।<sup>८</sup>

## मगध—

यह देश राजा दशरथ के अधिकार में था।<sup>९</sup> यह गंगा के दक्षिण में स्थित था। यह वर्तमान दक्षिण विहार है।<sup>१०</sup>

## मत्स्य—

यह देश भी राजा दशरथ के आधीन था।<sup>११</sup> इसका क्षेत्र

१. वा० रा० २।६।२।३
२. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
३. संस्कृत हिन्दी कोश, परिशिष्ट ३
४. वा० रा० ४।४।१।२
५. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
६. संस्कृत हिन्दी कोश, परिशिष्ट ३
७. वा० रा० १।६।२।२
८. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
९. वा० रा० २।१।०।३।६ एवं ४।४।०।२।२
१०. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
११. वा० रा० २।१।०।३।६

आधुनिक अलवर और भरतपुर रहा होगा।<sup>१</sup> इसे धौलपुर के पश्चिम में स्थित बताया गया है।<sup>२</sup>

**मद्रा<sup>३</sup>—**

डा० व्यास ने इसे चिनाव के पूर्व में उत्तरी पंजाब का एक जनपद बताया है।<sup>४</sup>

**मलद<sup>५</sup>—**

यह गंगा के पूर्वी किनारे का एक जनपद था जो अब मालदा कहलाता है।

**मल्लदेश—**

यहाँ का राज्य लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु को दिया गया था।<sup>६</sup> यह वर्तमान मुलतान जिला है।<sup>७</sup>

**यवद्वीप—**

इस राज्य में सीता की खोज के लिए सुग्रीव ने विनत को भेजा था। यह सप्त राज्यों से शोभित कहा गया है।<sup>८</sup> डा० व्यास ने इसे जावाद्वीप कहा है।<sup>९</sup>

**वंग—**

रामायणानुसार यह समृद्धशाली देश राजा दशरथ के आधीन

१. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
२. संस्कृत हिन्दी कोश, परिशिष्ट ३
३. वा० रा० ४।४३।११
४. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
५. वा० रा० १।२४।१७
६. वा० रा० ७।१०।२६
७. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट
८. वा० रा० ४।४०।५६
९. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

था।<sup>१</sup> यह वर्तमान पूर्वी बंगाल का प्रदेश है।<sup>२</sup>

**विदभंः<sup>३</sup> —**

यह वर्तमान वरार है।<sup>४</sup>

**विदेहः<sup>५</sup> —**

डा० व्यास ने इसे वर्तमान तिरहुत कहा है।<sup>६</sup> यह मगध के पूर्वोत्तर में विष्यमान एक देश था। इसकी राजधानी मिथिला थी। अब यह मधुवनी के उत्तर में नेपाल में जनकपुर के नाम से प्रसिद्ध है। प्राचोन काल में विदेह के अन्तर्गत नेपाल के एक भाग के अतिरिक्त वह सब स्थान जो अब सीतामढ़ी, सीताकुण्ड अथवा तिरहुत के पुराने जिले का उत्तरी भाग और चम्पारन का उत्तर पश्चिम भाग कहलाता है, इसमें सम्मिलित था।<sup>७</sup>

**शृङ्खलेरपुरः—**

यहाँ राजा गुह का राज्य था।<sup>८</sup> रामायण में इसकी स्थिति गंगा के तट पर अयोध्या से चित्रकूट जाने वाले मार्ग पर बताई गई है।<sup>९</sup> इसे प्रयाग से १६ मील दूर गंगा तट पर स्थित वर्तमान सिंगरीर कहा गया है।<sup>१०</sup>

१. वा० रा० २१५०।३६

२. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

३. वा० रा० १।३८।३ एवं ४।४।१।११

४. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

५. वा० रा० ४।४०।२२

६. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

७. संस्कृत हिन्दी कोश, परिशिष्ट ३

८. वा० रा० २।८।३।१६

९. वा० रा० २।६।३।१६

१०. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

सांकाश्या —

यहाँ कुशध्वज का राज्य था।<sup>१</sup> यह फूखाबाद जिले में फतेहगढ़ के पश्चिम की ओर २३ मील पर इक्षुमती नदी के पास कपित्व नाम से प्रसिद्ध है।<sup>२</sup>

सिंधुः—

इसे नदीज भी कहा गया है।<sup>३</sup> यह समृद्धशाली देश राजा दशरथ के अधिकार में था।<sup>४</sup> यह सिंध नदी के दोनों किनारों पर स्थित था। यहाँ से उत्तम जाति के अश्व अयोध्यापुरी से लाये गये थे।<sup>५</sup>

सौराष्ट्रः—

यह देश भी राजा दशरथ के आधीन कहा गया है।<sup>६</sup> यह आघुनिक काठियाबाड़ प्रदेश है।<sup>७</sup>

सौवीरः—

राजा दशरथ के आधीन यह समृद्धशाली देश<sup>८</sup> वर्तमान उत्तरी सिंधु में स्थित था।<sup>९</sup>

उपर्युक्त राज्यों के अतिरिक्त रामायण में, इन्द्रशिरा<sup>१०</sup> (ऐरावतवर्णी गजराजों के लिए प्रसिद्ध राज्य), कुरु<sup>११</sup> (हस्तिनापुर

१. वा० रा० ११७०।२

२. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

३. वा० रा० १।६।२२

४. वा० रा० २।१०।३८

५. वा० रा० १।६।२२

६. वा० रा० २।१०।३६

७. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

८. वा० रा० २।१०।३६

९. रामायण कालीन समाज, परिशिष्ट

१०. वा० रा० २।७०।२२

११. वा० रा० ४।४३।११

के उत्तर पश्चिम में स्थित राज्य), कुशावती<sup>१</sup> (विन्ध्य पर्वत के नीचे स्थित राज्य), कुक्षि<sup>२</sup> (पश्चिम भारत में स्थित देश), कौशिक,<sup>३</sup> द्रविण,<sup>४</sup> द्रुमकुल्य,<sup>५</sup> पुण्ड्र<sup>६</sup> (पूर्वी भारत में स्थित देश), पुण्ड्र<sup>७</sup> (दक्षिण भारत में स्थित देश), पुर्लिद<sup>८</sup> (उत्तर भारत का एक देश), वनायु<sup>९</sup> (डा० नानूराम व्यास के अनुसार यह अश्व देश है।<sup>१०</sup> रामायण में इसे अश्वों के लिए प्रसिद्ध कहा गया है।), बाल्ही<sup>११</sup> राजा इल का देश), ब्रह्माल<sup>१२</sup>, मध्यदेश,<sup>१३</sup> मधुपरी<sup>१४</sup> (बत्तमान मधुरा, यही लवणासुर का राज्य था, उसके पश्चात् शत्रुघ्न के पुत्र को यहाँ का राज्य दिया गया।) मालव<sup>१५</sup> (आधुनिक मालवा), माहिषक<sup>१६</sup> (दक्षिण भारत में स्थित देश), मेघला<sup>१७</sup> (दक्षिण भारत का देश), सिन्धुनद,<sup>१८</sup> सुवर्णद्वीप,<sup>१९</sup> सुमात्रा),

१. वा० रा० ७।१०८,४
२. वा० रा० ४।४२।७
३. वा० रा० ४।४१।११
४. वा० रा० २।१०।३८
५. वा० रा० ६।२२।३८
६. वा० रा० ४।४०।२२
७. वा० रा० ४।४१।२२
८. वा० रा० ४।४३।११
९. वा० रा० १।६।२२
१०. रामायण कालीन समाज, परिवार
११. वा० रा० ७।८।७।३
१२. वा० रा० ४।४०।२२
१३. वा० रा० ७।८।०।२१
१४. वा० रा० ७।१०८।१०
१५. वा० रा० ४।४०।२२
१६. वा० रा० ४।४१।११
१७. वा० रा० ४।४१।१०
१८. वा० रा० १।६।२२
१९. वा० रा० ४।४०।२६

हैहयदेश<sup>१</sup> (इसकी राजधानी माहिमती थी),<sup>२</sup> आदि छोटे-छोटे देशों का नाम आया है।

अस्तु, वाल्मीकि रामायण में सम्पूर्ण भारत के राज्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

— — —

१. वा० रा० १७०।२३

२. वा० रा० ७।३।१७

तत्त्वीय अध्याय

## रामायण कालीन शासन व्यवस्था

रामायण में राजतन्त्र शासन था। यह राजतन्त्र सप्ताङ्ग प्रणाली पर आधारित था। राजा राज्य का मूल था। रामायण में शासन व्यवस्था वैदिक कालीन शासन व्यवस्था का विकसित रूप प्रतीत होती है। वैदिक काल में साम्राज्य, वैराज्य, भौज्य, राज्य, पारमेष्ठ्य, महाराज्य एवं अधिराज्य शासन पद्धतियों का प्रचलन था। रामायण में केवल राजतन्त्रात्मक शासन पद्धति ही प्रचलित थी। प्रस्तुत अध्याय में रामायण में उल्लिखित राजतन्त्र शासन के राजा, अमात्य, कोष, एवं दण्ड राज्याङ्गों पर विचार किया गया है।

राजा—

'राजन्' शब्द राज् (शासन करना) से कनिन् प्रत्यय से बना है। इस प्रकार राजा का अर्थ शासन करने वाला या शासक होता है। भारतीय राजनीतिक विचारधारा से 'प्रकृति रंजनात्' राजा, अर्थात् प्रजा के रंजन करने के कारण इसे राजा कहा गया है। जैसा कि रघुवंश महाकाव्य<sup>१</sup> और महाभारत<sup>२</sup> में निर्दिष्ट है। वात्मीकि रामायण में राजा का लोकरञ्जन-कर्ता के रूप में वर्णन है।

१. राजा प्रकृतिरञ्जनात् । रघुवंश महाकाव्य ४।१२

२. रञ्जनतात्क प्रजास्तर्वा तेनराजेन शब्दते । महाभारत, शान्तिपर्व

### राजा की उत्पत्ति—

प्राचीन भारतीय साहित्य में राजा की उत्पत्ति विषयक अनेक कथायें प्रचलित हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख है कि देवताओं और असुरों में युद्ध हुआ। देवता पराजित हो गये। देवों ने विचार विमर्श करके निष्ठकर्ष निकाला कि उनकी पराजय का कारण राजा का न होना है। उन्होंने राजा चुनने का विचार किया। इसमें सभी ने सहमति प्रकट की।<sup>१</sup>

वाल्मीकि रामायण में भी राजा की उत्पत्ति विषयक कथा का उल्लेख है। इसमें उल्लेख है कि पहले मानवीय प्रजा बिना राजा के थी। प्रजाजन ब्रह्मा के पास गये और किसी को राजा बनाने के लिये प्रार्थना की। ब्रह्मा ने सब लोकपालों के तेज के अंश से एक पुरुष उत्पन्न किया और उसका नाम क्षुप रखा। ब्रह्मा ने क्षुप को प्रजा का आधिपत्य दिया और उसे राजा बनाया।<sup>२</sup>

वस्तुतः राजा की उत्पत्ति समाज में उत्पन्न होने वाली अराजकता के कारण हुई होगी, जैसा कि रामायण के उल्लेख से स्पष्ट है कि राजा रहित राज्य में योगक्षेम नहीं होता, स्त्री एवं सम्पत्ति सुरक्षित नहीं रहती और सर्वत्र अशान्ति का वातावरण रहता है आदि।<sup>३</sup>

### रामायण में राजा का पद—

रामायण के अनुसार राजपद के लिये तीन बातों का ध्यान दिया जाता था—(१) राजा वंशानुमत होता था। (२) राजपद के लिये ज्येष्ठ पुत्र ही अधिकारी होता था। (३) राजपद योग्य व्यक्ति को ही प्राप्त होता था।

१. ऐतरेय ब्राह्मण १।१४

२. वा० रा० ७।३७, ३६, ४२, ४३

३. वा० रा० २।६।७।६ आदि

## (१) राजा की वंशानुगत परम्परा—

राजा की वंशानुगत परम्परा वेदिक काल से ही प्रारम्भ हो गई थी। यद्यपि वेदिक काल में राजा के निवाचित के कुछ उल्लेख हैं,<sup>१</sup> लेकिन इसके साथ-साथ वेदिक काल में राजपद के आनुवंशिक होने के भी उदाहरण मिलते हैं। तृतीयों में चार पीढ़ी से भी अधिक समय से पुत्र ही पिता के राजसिंहासन पर बैठते चले आ रहे थे। संजयों के राजा दृष्ट ऋतु पौसायन की कथा में १० पीढ़ी से प्राप्त राज्य का उल्लेख है और राज्याभिषेक के समय की घोषणा में भी नये राजा को राजा का पुत्र कहा गया है।<sup>२</sup>

रामायण में राजपद की आनुवंशिकता दृढ़ हो गई।<sup>३</sup> फिर भी उत्तराधिकारी की नियुक्ति के लिये मन्त्रियों एवं पौरजनपद का समर्थन या प्रजा की सहमति लेने की आवश्यकता का अनुभव होता था। राजा दशरथ ने राम को राजा बनाने की इच्छा से मन्त्रियों एवं पौरजानपद लोगों का समर्थन लिया था।<sup>४</sup> राजा दशरथ के प्रस्ताव का ब्राह्मण, सेनापति और पुरवासियों ने समर्थन किया था और राम को राजा बनाने के लिये अपनी स्वीकृति प्रदान की थी।<sup>५</sup>

इसी प्रकार भरत ने भी राम से पुरोहित, नागरिकों और नैगमों आदि के समक्ष देने राजा बनने की प्रार्थना की थी।<sup>६</sup> राजा नृग ने अपने पुत्र को राजपद देने के लिये मन्त्री एवं सभासदों से विनय की थी।<sup>७</sup> सुग्रीव को भी राजपदारूढ़ होने में मन्त्रियों की

१. अथवा ३४२

२. उद्गत, प्राचीन मारतीय शासन पद्धति, पृष्ठ ५८, ५९

३. वा० रा० २१७६।५, ४।६।३ एवं २।७।६।७

४. वही २।२।१५, १६

५. वही २।२।२१, २२

६. वही २।१०।६।२४, २६

७. वही ७।५।४।८

सहमति प्राप्त थी।<sup>१</sup> इस प्रकार रामायण काल में राजपद आनुबंधिक होने के साथ ही उसके लिये मन्त्रियों एवं पौरजानपद या सभा के सदस्यों का समर्थन भी अपेक्षित था।

### राजा की जाति—

यहाँ वंशानुगतक्रम में राजा की जाति के विषय में विचार विमर्श करना उचित है। रामायण कालीन समाज की वर्ण व्यवस्था पर आधारित था।<sup>२</sup> सभी वर्णों के कार्य बैठे हुए थे।<sup>३</sup> ब्राह्मण धार्मिक कार्यों का अनुष्ठान करते थे, अध्ययनशील थे, प्रतिग्रह (दान लेने में) संयत थे। और जितेन्द्रिय थे।<sup>४</sup> वे यज्ञ करते और कराते थे। क्षत्रियों का कर्तव्य आतंजनों की रक्षा करना था।<sup>५</sup> वैश्य कृषि और पशुपालन करते थे।<sup>६</sup> और शूद्रों का कार्य अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना था।<sup>७</sup>

स्पष्ट है कि आतंजनों की रक्षा करने वाला क्षत्रिय ही राजपद के योग्य था। रामायण में आयं राजा क्षत्रिय कहे गये हैं। राम को क्षत्रिय कुलोत्पन्न कहा गया है।<sup>८</sup>

रामायण में वानर राजाओं की जाति का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं है। सुपीव के राज्याभिषेक के समय पर ब्राह्मणों ने उसे अभिवित किया था और वे ब्राह्मण इस अवसर पर भोजन, वस्त्र और रत्नादि से सम्मानित किए गए थे।<sup>९</sup> अतः वानर राजा

१. वा० रा० ४।६।२०

२. वही १।१।६३

३. वही १।६।१७, १८

४. वही १।६।१३

५. वही २।६।३।१६

६. वही १।६।१६

७. वही ४।१७।२५

८. वही ४।२६।२८

भी सत्रियोचित गुणों से युक्त रहे होंगे। क्योंकि ये राजा भी अपनी प्रजा की रक्षा करने में समर्थ थे।

राक्षस राजाओं या रावण की जाति के विषय में रामायण में उल्लेख है कि रावण क्रहिं पुलस्त्य का प्रपोत्र और ब्रह्मणि विश्वा का पुत्र था।<sup>१</sup> क्रहिं पुलस्त्य को दिज कहा गया है।<sup>२</sup> अतः राक्षस राजा ब्राह्मण जाति के थे। रामायण में एक अन्य कथा के अनुसार राक्षस नामकरण रक्षा करने के कारण पड़ा।<sup>३</sup> अतः रक्षा कर्म में दक्ष होने के कारण राक्षस राजा भी राजोचित गुणों से युक्त थे।

रामायण में अन्य जाति के राजाओं का भी उल्लेख है। शृङ्गवेरपुर का राजा निषादराज गुह जाति का था। लेकिन समस्त जातियों के राजाओं के लिए राज्य के कल्याण करने की योग्यता रखना और प्रजापालन करना अनिवार्य था।<sup>४</sup>

### (२) राजपद के लिये ज्येष्ठपुत्र का अधिकार—

रामायण के अनुसार राजपद के लिए राजा का ज्येष्ठ पुत्र ही अधिकारी होता था। कैक्यी का यह कथन, कि ज्येष्ठ पुत्र ही इक्वाकुवंश में राजा होता आया है, 'इस मत की पुष्टि करता है।<sup>५</sup> इस सन्दर्भ में भरत का भी यही कथन था।<sup>६</sup> भरत ने राम से कहा था कि बड़े भाई के होते हुए छोटा भाई शासनाधिकारी नहीं हो सकता।<sup>७</sup> विशिष्ट ने भी इक्वाकुवंश में ज्येष्ठ पुत्र को राजा बनाने की बात का समर्थन किया था।<sup>८</sup>

१. वा० रा० ७।२।३४ एवं ७।३।१ आदि

२. वही ७।२।२७

३. वही ७।४।१३

४. वही २।२।४६

५. वही २।८।१४

६. वही २।७।३।२० एवं २।७।३।२२

७. वही २।१०।१।२

८. वही २।१।१०।३२

आपत्तिकालीन स्थिति में अराजकता से बचने के लिए ज्येष्ठ पुत्र की अनुपस्थिति में किसी अन्य पुत्र को राजा बनाने के लिए विचार किया जाता था। राम के बन गमन पर भरत के राज्याभिषेक का निर्णय लिया गया था।<sup>१</sup> ज्येष्ठ पुत्र के अयोग्य होने पर वह राजपद के अधिकार से वंचित रहता था। राजा संगर का पुत्र 'असमंज' मूर्खता के कारण राज्य से निष्कासित कर दिया गया था।<sup>२</sup>

बानरों में भी ज्येष्ठ पुत्र ही राज्याधिकारी होता था। बालि अपने पिता का ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण राज्यारुढ़ किया गया था।<sup>३</sup>

ज्येष्ठ भ्राता की मृत्यु पर छोटा भाई राज्याधिकारी होता था। बालि की मृत्यु पर सुग्रीव को राजा बनाया गया था।

राक्षसों में भी ज्येष्ठ पुत्र को राजा बनाने की परम्परा थी। रावण अपने पिता का ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण राजा बनाया गया था।

राज्याधिकार ज्येष्ठ पुत्र तक ही सीमित न था। सुघन्वा को जीतने के बाद नया राज्य प्राप्त होने पर राजा जनक ने अपने छोटे भाई कुशश्वर को सांकाश्या का राजा बनाया था।<sup>४</sup> उत्तरकाण्ड में भी यही बात स्पष्ट होती है कि केवल ज्येष्ठ पुत्र ही राज्याधिकारी नहीं होता था, अपितु उसके कनिष्ठ भ्राता और पुत्र भी राजपद पर अभियक्त होते थे। राम ने अपने सभी भाइयों और उनके पुत्रों में राज्य का विभाजन कर दिया था।<sup>५</sup>

१. वही २।६।७।८

२. वही २।३।८।१६, १६ आदि

३. वही ४।६।१, २

४. वा० रा० १।७।०।२ आदि

५. वही ७।१०।१, १०२, १०७

## (३) योग्य व्यक्ति राजपद का अधिकारी—

राजपद की प्राप्ति के लिए अन्तिम एवं महत्वपूर्ण बात यह थी कि उत्तराधिकारी योग्य एवं गुणवान् हो। रामायणानुसार योग्यपात्र ही राजपद पाने का अधिकारी होता था।<sup>१</sup> न चेव राज्यं विगुणायदेयं' की भावना सर्वत्र व्याप्त थी। राजा का ज्येष्ठ पुत्र भी यदि अयोग्य और गुणहीन होता था तो राजपद के लिए न तो उसका नाम ही प्रस्तावित किया जाता था और न उसे प्रजा का समर्थन ही प्राप्त होता था। राजा दशरथ ने राजपद के लिए राम का नाम उनके गुणों और उनकी योग्यता के कारण ही प्रस्तावित किया था।<sup>२</sup> प्रजाजनों ने भी राम की योग्यता पर भली-भाँति विचार करके ही राजा दशरथ के प्रस्ताव का एक मत होकर समर्थन किया था।<sup>३</sup> अजितेन्द्रिय राजपद के अयोग्य माना जाता था।<sup>४</sup>

राजपद के लिए प्रजापालन की क्षमता रखना और जितेन्द्रिय होना आवश्यक था।<sup>५</sup> राम के अनुसार 'राजा' धर्म, अर्थ और काम को समयानुसार करने की योग्यता रखने वाला हो।<sup>६</sup> नारद की दृष्टि में राजा को समुद्र, हिमालय, विष्णु, चन्द्र, प्रलयाग्नि, पृथ्वी और धर्म के समान क्रमः: गम्भीर, धैर्यवान्, पराक्रमी, सुन्दर, प्रबल, क्षमाशील और स्थिर गुणों से युक्त होना चाहिए।<sup>७</sup> इस प्रकार रामायण में राजपद के लिए योग्यपात्र ही अधिकारी कहा गया है।

१. वही २।१।३४, २।२।११ एवं २।२।१२

२. वही २।२।२० प्रादि

३. वही २।२।६

४. वही २।२।४६

५. वही ४।३८, २२, २३

६. वही १।१।१७, १८

### राजा का व्यक्तित्व—

रामायण में राजा को चतुर्मुखी व्यक्तित्व से युक्त कहा गया है। वह अत्यन्त कान्तिवान्, बुद्धिमान् और सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञाता, शक्तिवान् विजेता और नैतिक गुणों का आगार था। रामायणानुसार राजा के व्यक्तित्व को चार रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है—

(१) रूपवान्—वाल्मीकि ने राजा को शारीरिक सौन्दर्य की दृष्टि से अत्यन्त आकर्षक बताया है। राजा राम सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपम कहे गये हैं। वे विशाल कन्धों वाले, महाबाहु, सुन्दरग्रीवा, विशालवक्ष, सुग्गिर, सुललाट और स्तिरध वर्ण वाले कहे गए हैं।<sup>१</sup> वानर राजा भी दर्शनीय थे।<sup>२</sup> सुग्रीव चुतिमान् और कान्तिमान् था।<sup>३</sup> राक्षस राजा रावण भी परम तेजस्वी और पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख मण्डल वाला कहा गया है।<sup>४</sup>

(२) बुद्धिमान् एवं विद्वान्—रामायण में सभी राजा बुद्धिमान् एवं विद्वान् कहे गये हैं। राजा राम वेद वेदांग तत्त्वज्ञ, सर्वज्ञास्त्रतत्त्वज्ञ,<sup>५</sup> ज्ञान सम्पन्न,<sup>६</sup> स्थिरप्रज्ञ, अप्रमादी और स्वदोष-परदोषविद्<sup>७</sup> एवं पुरुषान्तर कोविद थे।<sup>८</sup> राजावलि भी विशदज्ञानवान्<sup>९</sup> और कार्यों के संचालन में चतुर था।<sup>१०</sup> सुग्रीव को भी ज्ञानवान् और मतिमान् कहा गया है।<sup>११</sup> इसी प्रकार राक्षस राजा

१. या० रा० १।१६, १०, ११

२. वही ४।४।६

३. वही ३।७।२।४

४. वही ५।४।६।६, ८

५. वही १।१।१४, १५

६. वही १।१।१२

७. वही २।१।२।४

८. वही २।१।२।५

९. वही ४।१।८।६।१

१०. वही ४।२।२।३

११. वही ३।७।२।१२, १३

भी वुद्धिमत्ता और विद्वत्ता में बढ़े-चढ़े थे ।

(३) वीर—रामायण में सभी राजा सुविक्रम वाले कहे गये हैं । राजा राम महावीर्यवान् सुविक्रमी<sup>१</sup> विष्णु के सदृश्य पराक्रमी,<sup>२</sup> और वीर<sup>३</sup> थे । राजावालि शत्रुनिष्ठूदन,<sup>४</sup> महावली,<sup>५</sup> इन्द्र-तुल्पराक्रम सम्पन्न<sup>६</sup> आदि वीरतापूर्ण शब्दों से विभूषित था । सुग्रीव भी वीर, महापराक्रमी और महावली के रूप में वर्णित है ।<sup>७</sup> राजा रावण समितिवज्यप,<sup>८</sup> अजेय, समर में शूर,<sup>९</sup> कहा गया है ।

(४) नीतिज्ञ—रामायण में आयं राजा नीतिक गुणों के आगार और श्वेष्ठ चरित्र वाले कहे गये हैं । वे केवल धर्म में ही आस्था रखने वाले थे ।<sup>१०</sup> वे सत्य, दान, तप, त्याग, मंत्री, शौच, आजंब, गरयुषा, क्षमा, दमन, त्याग, सत्यभाषण, धार्मिकता, कृतज्ञता, और प्राणियों के प्रति प्रेम आदि गुणों से युक्त थे ।<sup>११</sup> राजा दशरथ धर्म वत्सल<sup>१२</sup> और धर्मज्ञ<sup>१३</sup> कहे गए हैं । राम धर्मज्ञ, सत्यसंघ, साधु<sup>१४</sup>,

१. वही १।१।८, १०

२. वही १।१।१८

३. वही १।१।२४

४. वही ४।६।१

५. वही ४।६।८

६. वही ४।६।१३

७. वही ३।७।२।१३, १४

८. वही ६।१।२।१

९. वही ३।३।२।६

१०. वा० रा० ३।१।६।२०

११. वही २।१।२।३।०, ३३

१२. वही ४।४।६

१३. वही १।८।१

१४. वही १।१।१२, १५

क्षमाशील, धैर्यवान्, जितेन्द्रिय<sup>१</sup>, कृतज्ञ, मृदु, स्थिरचित्त, अनुसूयक, प्रियवादी, सत्यवादी, स्नेही, शीलवान् आदि नैतिक गुणों से युक्त थे।<sup>२</sup> वानर राजा भी धर्मतिमा थे।<sup>३</sup> सुघोव को सत्यसंघ, विनीत और धृतिमान् कहा गया है।<sup>४</sup> राक्षस राजा अवश्य ही नैतिक गुणों से रहित थे और वे धर्म को मूल से नष्ट करने वाले थे।<sup>५</sup> रामायण में राक्षस राजा यज्ञधर्मक, कूर, ब्रह्महत्या करने वाले, दुराचारी, कर्कश, दयाशून्य और प्रजाओं का अहित करने वाले कहे गये हैं।<sup>६</sup>

अनेन प्रकारेण रामायण में वर्णित राजाओं का व्यवितत्त्व गौरवपूर्ण था। राक्षस राजाओं को छोड़कर अन्य राजाओं का चरित्र अनुकरणीय है।

### राजकुमारों की शिक्षा—

राजाओं की योग्यता और उनका चतुर्मुखी व्यवितत्त्व उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पर आधारित था। रामायण में राजकुमारों की शिक्षा का विशेष ध्यान दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि उस समय राजकुमारों की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध था। राजकुमारों को वेद, तत्त्वज्ञान, वीरता, राजनीति आदि का अध्ययन कराया जाता था। उन्हें शासन संचालन शास्त्र विद्या और युद्ध कौशल की शिक्षा प्रायोगिक रूप से दी जाती थी। वे धनुर्विद्या, रथ संचालन हृस्थिरविद्या और शासन के संचालन में निष्णात होते थे।

राजा दशरथ के चारों राजकुमार अपनी प्रारम्भिक अवस्था

१. वही २।२।३१
२. वही २।२।२८ आदि
३. वही ४।३।२१
४. वही ३।७।२।१३
५. वही ३।३।२।१२
६. वही ३।३।२।२०, २१

में ही वेदाध्ययन में निरत रहते थे।<sup>१</sup> वे अस्त्र विद्या, हस्तिविद्या और धनुविद्या के निपुण थे।<sup>२</sup> वे सभी राजकुमार सर्वज्ञ और दूरदर्शी थे।<sup>३</sup> राजनीतिशास्त्र के विशारद सुधन्वा इन राजकुमारों के उपाध्याय थे।<sup>४</sup>

राम अनेक विद्याओं में विशारद थे। वे नित्य अस्त्र-शस्त्रों का अध्यास करते थे।<sup>५</sup> वे हस्ति, अस्त्र और वाण विद्या में अद्वितीय,<sup>६</sup> सभी अस्त्रों के चलाने में निपुण,<sup>७</sup> धर्मज्ञ,<sup>८</sup> सांगोपांग वेदों के ज्ञाता,<sup>९</sup> धर्म और अर्थ नीति के ज्ञाता,<sup>१०</sup> लोकाचार में विशारद,<sup>११</sup> विनम्रता, दया, अकोथ, अनुसूया, दीनानुकम्पा, पवित्रता, प्रजानुराग, त्याग आदि नैतिक गुणों को हृदयंगम करने में कुशल,<sup>१२</sup> शास्त्रों के मर्मज्ञ,<sup>१३</sup> शिल्प विद्या में विशेषज्ञ,<sup>१४</sup> संन्यव्यूह की रचना में निपुण,<sup>१५</sup> संगीत विशारद,<sup>१६</sup> धर्म, काम, अर्थ के तत्त्वज्ञ,<sup>१७</sup> और

१. वा० रा० ११८।३५
२. वही १।१८।२६, २७, ३६
३. वही १।१८।३४
४. वही २।१००, १४
५. वा० रा० २।१।१२
६. वही १।१८।२६, २।१।२६ एवं २।१।२०
७. वही २।२।३३
८. वही २।१।१५
९. वही १।१।१५ एवं २।१।२०
१०. वही २।१।२२
११. वही २।१।२२
१२. वही २।१।१४ आदि
१३. वही २।१।२७
१४. वही २।१।२८
१५. वही २।१।२९
१६. वही २।२।३४
१७. वही २।१।२२

अन्य समस्त विद्याओं में दीक्षित थे।<sup>१</sup> वे शासन संचालन के सभी नियमों के ज्ञाता थे। वे मन्त्र को गुप्त रखने की क्षमता वाले,<sup>२</sup> प्रजापालक, तत्त्वज्ञ,<sup>३</sup> दुष्टों पर शासन करने में दक्ष,<sup>४</sup> और धनोपार्जन के उपायों एवं उसके सदब्यय के ज्ञाता थे।<sup>५</sup>

आर्य राजकुमारों की भाँति वानर राजकुमार भी शिक्षित होते थे। अंगद को गुणी और जिक्षित कहा गया है।<sup>६</sup> रामायण में वानर राजाओं को भी मेधावी,<sup>७</sup> धर्मज्ञ,<sup>८</sup> नीतिज्ञ,<sup>९</sup> मतिमान और विद्वान् कहा गया है। राजावालि विशद ज्ञान वाला था।<sup>१०</sup> वालि के अनुसार राजा को नीतिक ज्ञान होना आवश्यक है। उसके अनुसार राजा को नीतिज्ञ और शिक्षित होना चाहिये।<sup>११</sup>

वानर राजकुमारों को राजनीति की शिक्षा प्रयोगात्मक रूप से दी जाती थी। अंगद को सेनापतियों के सान्निध्य में रखा गया था ताकि वह राजनीतिक विचारों और शासन संचालन की नीतियों को प्राप्त करे।<sup>१२</sup> वानर राजाओं की शासन व्यवस्था और युद्ध नीतियों से स्पष्ट हो जाता है कि वे राजनीति विद्या में पारंगत थे।

१. वही १।१।१५ एवं २।२।३४
२. वही २।१।२३
३. वही २।२।४४
४. वही २।१।२६
५. वही २।१।२६
६. वही ४।१।५।५।१
७. वही ४।२।२३
८. वही ४।२।३।१
९. वही ४। संग १७
१०. वही ४।१।८।६।१
११. वही १।१।७।२६, ३३
१२. वही ४।४।१।५

शास्त्रों और राजनीति के ज्ञान के अतिरिक्त वानर राजकुमार, विभिन्न आयुधों को चलाने में भी दीक्षित होते थे। अंगद परिघ और परशु चलाने में तथा मुष्टि-युद्ध करने में कुशल था।<sup>१</sup> वानर-राजकुमारों को शिलाओं और वृक्षों आदि से युद्ध करने के लिए शिक्षा दी जाती थी। सुग्रीव वृक्ष और पत्थरों से युद्ध करता था।<sup>२</sup> वालि और सुग्रीव वाहु युद्ध, मुष्टि युद्ध, द्वन्द्ययुद्ध तथा शिलायुद्ध में दक्ष थे।<sup>३</sup> वानर राजकुमारों को इच्छानुसार रूप धारण करने की भी शिक्षा दी थी। सुग्रीव को कामरूपी कहा गया है।<sup>४</sup>

राक्षस राजकुमार भी भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा प्राप्त करते थे। राक्षस राजा वेद वेदांग के ज्ञाता, राजनीति के पण्डित, शस्त्र-अस्त्र और धनुविद्या तथा रथसंचालन में पारंगत थे। लंका में वेदाध्ययन के लिये ज्ञालायें थीं।<sup>५</sup> उनमें राक्षस राजकुमारों को शिक्षा दी जाती थी। रावण उच्च शिक्षा की प्राप्ति के कारण ही वाक्यकोविद था।<sup>६</sup> विभीषण की वृहस्पति के तुल्य मति<sup>७</sup> उसकी बुद्धि की प्रखरता एवं ज्ञानार्जन के कारण ही कही गई है।

शास्त्रों की शिक्षा के अतिरिक्त अस्त्र-शस्त्र विद्या, धनुविद्या और रथ संचालन आदि में राक्षस राजकुमार दक्षता प्राप्त करते थे। इन्द्रजीत अस्त्र विद्या में पारंगत था।<sup>८</sup> वह वाण विद्या, शूल, मुद्रग, भुशुण्ड, गदा, खड्ग, परशु आदि के चलाने में दक्ष

१. वा० रा० ६।६६।१३, ६।६६।१६ आदि

२. वही ६।६७।१। १२

३. वही ४।१।१।२८

४. वही ३।७।२।१८

५. वही ६।१०।१।६

६. वही ३।३।१।३।६

७. वही ६।१।५।१

८. वही १।४।५।५

९. वही ६।८।८।१७, १८

था।<sup>१</sup> वह रथ संचालन में प्रवीण था। युद्धभूमि में सारथि की मृत्यु के उपरान्त उसने स्वयं ही युद्ध करने के साथ साथ रथ संचालन भी अद्भुत ढंग से किया था।<sup>२</sup> रावण धनुर्विद्या में पारंगत था।<sup>३</sup> वह अनेक प्रकार के अस्त्र चलाने में दक्ष था।<sup>४</sup>

राक्षस राजकुमारों को राजनीतिशास्त्र में परिपब्द कराया जाता होगा, क्योंकि राक्षस राजा राजनीति के अच्छे ज्ञाता थे। वे राजनीति के सामादि चारों अङ्गों और धड़गुणों के ज्ञाता थे। जैसाकि रामायण के उल्लेखों से स्पष्ट है, वे मन्त्रविद् भी होते थे। रावण ने उत्तम, मध्यम और अधम मन्त्रों में विषय में विवेचन किया है।<sup>५</sup>

राक्षस राजकुमार छल कपट विद्या को भी सीखते थे। वे माया और छल कपट करने में निष्णात होते थे। इन्द्रजीत युद्ध में माया से शत्रु को मोहित करने की क्षमता रखता था।<sup>६</sup> इस प्रकार विविध प्रकार की शिक्षा प्राप्त करके भी राक्षस राजा आचरण से हीन होने के कारण और मायावी होने के कारण आदर्श एवं अनुकरणीय न बन सके।

रामायण में शिक्षा के क्षेत्र में राजनीति के ज्ञान का विशेष महत्त्व निर्दिष्ट है। राजनीति का ज्ञान सभी वर्ग के राजकुमारों को विशेष रूप से कराया जाता था। वे साम, दाम, भेद और दण्ड इन चारों नोतियों के ज्ञाता होते थे। उन्हें छः युवितयों—सन्धि, विग्रह, यान, आसन, दृंघीभाव और समाश्रय का ज्ञान कराया जाता था। इसका उल्लेख रामायण में अनेक स्थलों पर किया गया है।<sup>७</sup>

१. वा० रा० ६।६।६०

२. वही ६।६।०।४४

३. वही ६ संग ६७, १०० एवं ६।१०।१३, ६।१०।६।२३

४. वही ६।१०।०।४० सादि

५. वही ६।६।११

६. वही ६।४।४।३६; ५१

७. वही ३।७।२।८, ६।६।८, ६।१३।७

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रामायणानुसार राजकुमारों को व्यावहारिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक शिक्षा दी जाती थी। उन्हें अस्त्र-शस्त्र विद्या और राजकार्यों के संचालन में विशेष योग्यता प्राप्त कराई जाती थी। ये राजकुमार शिक्षा प्राप्त करके नीतिवान्, विनयी, सदाचारी, पराक्रमी और देशकालज्ञ बनते थे।<sup>१</sup> इस प्रकार वे प्रजा द्वारा अनुकरणीय बनते थे।<sup>२</sup>

### राजकुमार का विवाह—

शिक्षा समाप्ति के पश्चात् राजकुमार का विवाह होता था। राजकुमार के विवाह के लिये 'राजा' मन्त्रियों, उपाध्यायों और बान्धवों से परामर्श लेता था।<sup>३</sup> राजकुमार का विवाह 'राजा' विना मन्त्रियों की सलाह से नहीं कर सकता था।<sup>४</sup>

### राजा का निवाचिन—

बंशपरम्परा, ज्येष्ठता, योग्यता और शिक्षा के आधार पर राजकुमार राजपद को प्राप्ति के योग्य बनता था। राजा के बृद्ध होने पर और उसके द्वारा राजपद के भार को वहन करने की असमर्थता प्रकट करने पर अथवा राजा की मृत्यु के उपरांत योग्य राजकुमार का राजपद के लिये निवाचिन होता था। बृद्ध होने पर राजा दशरथ ने राम को मन्त्रियों के परामर्श से युवराज पद पर अभिषिक्त करने का निश्चय किया था।<sup>५</sup> रामायण में युवराज या राजा के निवाचिन की विधि इस प्रकार से वर्णित है—

नये राजा के लिये राजकुमार का नाम पुराने राजा द्वारा प्रस्तावित किया जाता था। राजा दशरथ ने बृद्ध होने के कारण

१. बा० रा० ४।१८८

२. वही २।४५।१

३. वही १।१८।३८, ३६

४. वही १।५८-१६, १७

५. वही २।१।३३, ४१

राज्य के कार्यों को बहन करने में अपनी असमर्थता प्रकट करके<sup>१</sup> सम्पूर्ण पुरवासियों के समक्ष<sup>२</sup> तथा अन्य राजाओं के समक्ष<sup>३</sup> सर्वंगुणसम्पन्न अपने ज्येष्ठ पुत्र का नाम राजपद के लिये प्रस्तावित किया था।<sup>४</sup> राजा दशरथ ने इस बात को भी स्पष्ट किया था कि यदि उनका प्रस्ताव उचित न हो, तो अन्य विचार भी प्रस्तुत किया जा सकता है।<sup>५</sup> इसी प्रकार राजा नृग ने भी राजपद के लिये अपने पुत्र 'बसु' का नाम पुरोहित, मन्त्रियों और नैगमों के समक्ष प्रस्तावित किया था।<sup>६</sup>

राजपद हैतु प्रस्ताव के अनन्तर उसके लिये समर्थन प्राप्त किया जाता था।<sup>७</sup> राजपद के लिये प्रस्तावित व्यक्ति के गुण, योग्यता आदि के विषय में सम्यक् विचार करके एवं परस्पर परामर्श करके ब्राह्मण, विशिष्टजन और पौरजानपद एकमत होकर राजा के प्रस्ताव का समर्थन करते थे।<sup>८</sup> राजा दशरथ के प्रस्ताव के सम्बन्ध में परस्पर विचार विमर्श करके ही प्रजाजनों ने एकमत होकर उसका समर्थन किया था एवं राजकुमार राम को युवराजपद पर अभिविक्त कराने की अनुमति प्रदान की थी।<sup>९</sup>

इसी प्रकार वालि<sup>१०</sup> और सुशील<sup>११</sup> ने भी राजसिंहासन की प्राप्ति के लिये मन्त्रियों का समर्थन प्राप्त किया था।

१. वा० रा० २१२१८
२. वही २१२१९
३. वही २१२१३
४. वही २१२१११, १२
५. वही २१२११६
६. वही ७१५४१५, ८
७. वही २१२११५
८. वही २१२११६, २०
९. वा० रा० २१२१२१
१०. वही ४१६१२
११. वही ४१६१२०

रामायण में राजा और युवराज के निवाचन को विधि समान है। राम को युवराजपद पर निर्वाचित करने के लिये ही योजना बनाई गई थी। रामायण में राजा के निवाचन के साथ ही साथ युवराज के निवाचन का भी उल्लेख है। यदि राजा के पुत्र नहीं होता था, तो ऐसो स्थिति में उसका छोटा भाई ही युवराज पद पर अभिषिक्त कर दिया जाता था। राम के राज्याधिकारी होने पर, राम के पुत्र की अनुपस्थिति में राम ने अपने छोटे भ्राता भरत को युवराज पद पर अभिषिक्त कराया था।<sup>१</sup> सुशीव के राज्याधिकारी होने पर एवं उसके कोई पुत्र न होने के कारण उसने अपने भतीजे अंगद को युवराज पद पर अभिषिक्त कराया था।<sup>२</sup>

युवराज राज्य के कार्यों के संचालन में राजा की सहायता करता था। वह राजा द्वारा राजपद के त्याग देने के पश्चात् राजपद को ग्रहण करता था।<sup>३</sup>

### राज्याभिषेकोत्सव—

प्रजातन्त्रात्मक पढ़ति से राजपद के लिये निवाचन के पश्चात् उत्तराधिकारी का राज्याभिषेक होता था। रामायण में राम, सुशीव, विभीषण, शत्रुघ्न तथा राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के पुत्रों के राज्याभिषेक का उल्लेख है। कृति में सर्वप्रथम राम के यीवराज्याभिषेक की तंयारी का वर्णन है।<sup>४</sup> किंचिकधाकाण्ड में राजपद पर सुशीव के और युवराज पद पर अङ्गद के अभिषेक का उल्लेख है।<sup>५</sup> लङ्घाविजयोपरान्त विभीषण के राज्याभिषेक के वर्णन<sup>६</sup> के अनन्तर अयोध्या लौटने पर राम के राज्याभिषेक का

१. वा० रा० ६।१३।१८६
२. वही ४।२६।३७
३. वही ४।६।३
४. वही २ सर्ग ३, ४, ५, १४, १५
५. वही ४।२६।३५, ३६, ३७
६. वही ६।११।३।१६

वर्णन किया गया है।<sup>१</sup> अन्त में उत्तरकाण्ड में शत्रुघ्न के राज्याभिषेक के वर्णन<sup>२</sup> के अनन्तर राम आदि चारों भाइयों के पुत्रों के राज्याभिषेक<sup>३</sup> तथा युवराज अङ्गूष्ठ के राज्याभिषेक का संकेत मिलता है।<sup>४</sup>

रामायण में राम और सुग्रीव के राज्याभिषेक का ही विस्तार से वर्णन किया गया है। अन्य का वर्णन संक्षेप में ही है या केवल संकेत मात्र किया गया है।

रामायण में राज्याभिषेकोत्सव की विधि कोसल, किञ्चिन्धा और लङ्घा में लगभग समान रूप से वर्णित है। यह उत्सव राजप्रासाद में सम्पन्न होता था।<sup>५</sup> राज्याभिषेक शुभ मुहूर्त में किया जाता था।<sup>६</sup> इस अवसर पर अभिषेकोत्सव की विभिन्न तंयारियाँ की जाती थी।<sup>७</sup> महोत्सव को सम्पन्नता के लिये सुवर्ण, रत्न, समस्त औषधियाँ, श्वेतपुष्प की मालायें, लावा, मधु, धी, नवीनवस्त्र, रथ, समस्त आयुध, चतुरङ्गी सेना, शुभलक्षण सम्पन्न हाथों, दो चामर, श्वेतछब्बी, श्वेतछत्र, सुवर्ण के सो कलश, स्वर्ण जटित शृङ्ख वाले वृषभ, व्याघ्र चर्म आदि एकत्रित किये जाते थे।<sup>८</sup>

इस अवसर पर सम्पूर्ण नगर और अन्तःपुर सज्जित होता था। अन्तःपुर और नगर के सम्पूर्ण द्वारों का चन्दन, मालाओं और

१. वा० रा० ११३१६२, ६३

२. वही ७१६३१० से १५

३. वही ७१०११११, ७१०२११०, ७१०७११७, ७१०८१८

४. वही ७१०८१२४

५. वही २१३१६, २१४१४, १५, ४२६३०, ६ संग ११५, १३१

६. वही २४१२१

७. वही २१३४

८. वही २१३८ से ११, ४२६१२३ से २८

सुगन्धित पुष्प धूप से पूजन किया जाता था।<sup>१</sup> ब्राह्मण भोज की सामग्री, प्रशस्त अन्न और वही दूध से निर्मित पदार्थ तैयार किये जाते थे।<sup>२</sup> ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करने की अपेक्षा की जाती थी।<sup>३</sup> मार्गों पर पुष्प बिखरे जाते थे।<sup>४</sup> पताकायें फहराई जाती थी।<sup>५</sup> राजमार्ग पर छिड़काव होता था और प्रत्येक घर बन्दनवार और पुष्पमालाओं से सजिजत किया जाता था।<sup>६</sup> इस अवसर पर नर्तक और गणिकायें अलड़कृत होकर राजभवन में बुलवाई जाती थीं।<sup>७</sup> ये नट नर्तक और गायक अपनी कला से लोगों को प्रसन्न करते थे।<sup>८</sup> देवमन्दिर और चोराहों पर दक्षिणा और भोजन की सामग्री वितरण के लिये पहुँचाई जाती थी।<sup>९</sup> मार्गों पर प्रकाश की व्यवस्था को जाती थी।<sup>१०</sup> योधागणों को सुन्दर वस्त्र धारण करके महोत्सव में उपस्थित होने के लिये आज्ञा दी जाती थी।<sup>११</sup> इस प्रकार इस अवसर पर उपर्युक्त कार्यों तथा अन्य अपेक्षित कार्यों को सम्पन्न किया जाता था।<sup>१२</sup>

उत्तराधिकारी के लिए उपदेश—

राज्याभिषेकोत्सव सम्बन्धी उपर्युक्त कार्यों के सम्पन्न हो जावे

१. वा० रा० २।३।१३
२. वही २।३।१४
३. वही २।३।१६
४. वही २।१।२७
५. वही २।७।३, ६
६. वही २।५।१८
७. वही २।३, १८
८. वही २।६।१४
९. वही २।३।१८
१०. वही २।६।१८
११. वही २।३।२०, २१
१२. वही २।३।२२

पर राजा द्वारा उत्तराधिकारी को राजभवन में बुलवाया जाता था।<sup>१</sup> राजसभा में अन्य समस्त राजाओं के समक्ष<sup>२</sup> पूर्व राजा द्वारा उत्तराधिकारी को युवराज पद प्राप्त करने की सूचना दी जाती थी<sup>३</sup> और उसे यथोचित उपदेश भी दिया जाता था। उत्तराधिकारी को युवराज पद प्राप्त करने पर विनाश और जितेन्द्रिय बने रहने की शिक्षा दी जाती थी।<sup>४</sup> उसे काम, ऋषि आदि वे उत्पन्न व्यसनों को त्यागने के लिये प्रेरणा दी जाती थी।<sup>५</sup> उत्तराधिकारी को राज्य सम्बन्धी समस्त वृत्तान्त एवं अन्य राज्यों से सम्बन्धित घटनाओं को गुप्तचरों द्वारा जानने के लिये सचेत किया जाता था।<sup>६</sup> उसे यह निर्देश दिया जाता था कि मणिचयों एवं प्रजाजनों को प्रसन्न रखें तथा अन्नागारों और आयुधागारों को क्रमणः अन्न और ज्ञात्रों के संचय से परिपूर्ण करें।<sup>७</sup> इस प्रकार सभा में उत्तराधिकारी को प्रजारञ्जन के लिये तथा उपर्युक्त निर्दिष्ट वातों पर आचरण करने के लिये प्रेरित किया जाता था।<sup>८</sup>

राम के यीवराज्याभिषेकोत्सव पर राजा दशरथ ने राम को उपर्युक्त करणीय वातों की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुये उपदेश दिया था। इसी प्रकार का उपदेश अपनी मृत्यु के समय राजा वालि ने राजापद पर अभिषिक्त होने वाले सुग्रीव और युवराज पद पर अभिषिक्त होने वाले अङ्गद को दिया था। वालि ने सुग्रीव

१. वा० रा० २।३।२२

२. वही २।३।२४, २५, २६

३. वही २।३।४०

४. वही २।३।४२

५. वही २।३।४३

६. वही २।३।४३, ४४

७. वही २।३।४४, ४५

को कर्तव्य करने का उद्देश दिया था<sup>३</sup> एवं अङ्गद को देशकालानुसार कार्य करने एवं इन्द्रियों पर संयम रखने के लिये सचेत किया था<sup>४</sup>।

इस उत्सव पर उत्तराधिकारी को नियमानुसार व्रत उपवास करने के लिये निर्देश दिया जाता था<sup>५</sup>। राजपुरोहित यह कार्य सम्पन्न करता था<sup>६</sup>। उत्तराधिकारी सप्तनीक उपवास करता था<sup>७</sup> तथा देवताओं को प्रोति के लिये यज्ञ करता था<sup>८</sup>। सुग्रीव के राज्याभियोकोत्सव पर मन्त्र जानने वाले ब्राह्मणों ने यज्ञ का कार्य सम्पन्न किया था<sup>९</sup>।

इस उत्सव पर प्रजाजनों में उत्साह एवं प्रसन्नता का बातावरण रहता था<sup>१०</sup>। सभी प्रजाजन इस महोत्सव को देखने के लिए उत्सुक रहते थे<sup>११</sup>। नगर के बाहर के जनपद निवासी भी इस उत्सव को देखने के लिये नगर में एकत्रित होते थे<sup>१२</sup>।

इस अवसर पर अभियेक से सम्बन्धित समस्त वस्तुयें— भद्रपीठ,<sup>१३</sup> जलयुक्त स्वर्णकलश,<sup>१४</sup> शहद, दही, धी, खीलें, कुच, दूध, सुन्दरी कन्यायें, मत्त वारण,<sup>१५</sup> चार अश्वों का रथ, असि,

१. वा० रा० ४।२२।१४

२. वही ४।२२।१६, २२

३. वही २।४।२३

४. वही २।५।४

५. वही २।५।११

६. वही २।६।२

७. वही ४।२६।२६

८. वही २।५।१७

९. वही २।४।२०

१०. वही २।५।२५

११. वही २।१४।३४, २।१५।४

१२. वही २।१५।४

१३. वही २।१४।३५, ३६

श्रेष्ठधनुष, पालकी, उज्ज्वल वस्त्र, शुभ्रवंमर, स्वर्णजटित शृङ्ख-  
युक्त वृषभ, सिंह, अश्व, सिंहासन, वाघाम्बर, समिधा, अग्नि,  
वाच्यन्त्र, अलङ्कृतवेष्यायें, आचार्य, ब्राह्मण, गौ, हिरण, पक्षी,<sup>१</sup>  
पवित्र नदियों एवं चारों समुद्रों का जल<sup>२</sup> बन्दीजन सूत, मागध  
आदि उपस्थित रहते थे।<sup>३</sup> इस अवसर पर ब्राह्मण, सेनापति,  
नेगम एवं अन्य राजागण भी उपस्थित रहते थे।<sup>४</sup>

इस समय उत्तराधिकारी के लिए सम्पूर्ण राज्य हस्तान्तरित  
किया जाता था। राम ने पुर, पर्वत, बन, नगर ग्राम आदि से युक्त  
सम्पूर्ण राष्ट्र को भरत के लिए हस्तान्तरित किया था।<sup>५</sup> इसी  
प्रकार राम के बन से लौटने पर भरत ने भी कोष, कोष्ठागार,  
पुर, सेना आदि सहित सम्पूर्ण राष्ट्र राम को ग्रहण करने के लिए  
कहा था।<sup>६</sup> बालि ने भी वानरों का सम्पूर्ण राज्य सुधीव को  
सौंपा था।<sup>७</sup>

उत्तराधिकारी अभिषेक के पूर्व मित्रों एवं सभी दर्शनार्थियों  
और प्रजाजनों का यथोचित सम्मान करता था<sup>८</sup> एवं प्रजाजनों से  
प्रीतिपूर्वक बातचीत करके उन्हें सन्तुष्ट करता था।<sup>९</sup>

राज्याभिषेक के समय उत्तराधिकारी स्नानादि करके, मालायें  
धारण करके, सुन्दर वस्त्र धारण करता था।<sup>१०</sup> एवं आभूषणों से

१. वा० रा० २।१४।३६ से ४०; २।१५।५ से १२

२. वही २।१४।५, ६; ६।१३।१।५३ प्रादि

३. वही २।१४।१२

४. वही २।१४।२४

५. वही २।३।८।५५, ५६

६. वही ६।१३।०।५७, ५८

७. वही ४।२।२।५

८. वही २।१।१।२७

९. वही ४।२।८।२१

१०. वही ६।१३।१।१५

सुसज्जित किया जाता था ।<sup>१</sup>

राज्याभिषेकोत्सव उत्तराधिकारी की रथ यात्रा से प्रारम्भ होता था ।<sup>२</sup> रथ में स्थित उसके ऊपर शुभ्र छत्र लगाया जाता था और चमर ढुलाये जाते थे<sup>३</sup>। रथ के साथ जनसमुदाय जय जयकार करता हुआ चलता था ।<sup>४</sup> रथ के आगे चन्दन और अगर से अनुलिप्त संनिक हाथों में खड़ग और धनुष लिए हुए चलते थे ।<sup>५</sup> रथ के पीछे अश्वों और हाथियों पर सवार एवं पेदल सहस्रों लोग चलते थे ।<sup>६</sup> साथ ही वाह्यों का नाद होता था और बन्दीजन स्तुति करते हुए चलते थे ।<sup>७</sup> मार्ग में मंगल कामनाएं करती हुई स्त्रियाँ उत्तराधिकारी के ऊपर पुष्पवर्षा करती थीं ।<sup>८</sup> शकुन के लिए मार्ग में स्थान-स्थान पर दही, अक्षत, हवि, लाजा, धूप, अगर, चन्दन रखा रहता था<sup>९</sup> एवं आशीर्वादात्मक शब्द सुनाये जाते थे ।<sup>१०</sup>

इस प्रकार रथ यात्रा नगर में होती हुई राजभवन तक समाप्त होती थी ।<sup>११</sup> तदन्तर उत्तराधिकारी राजमहल में प्रवेश करता था ।<sup>१२</sup> वहाँ उसे रत्नजटित पीठ पर मन्त्रोच्चारणपूर्वक पूर्वाभिमुख

१. वा० रा० ६।१३।१६
२. वही २।१६।२८; ६।१३।१२० गादि
३. वही २।१६।३२, ६।१३।१२८
४. वही २।१६।३३; ६।१३।१३५
५. वही २।१६।३५
६. वही २।१६।३४
७. वही २।१६।३६; ६।१३। ३३, ३७
८. वही २।१६।३७, ३८
९. वही १।१७।६
१०. वही २।१७।७
११. वही २।१७।१७; ६।१३।१४३
१२. वही ६।१३।१४५

बेठाया जाता था' और सुगन्धित जल से अहतिक् ब्राह्मणों द्वारा, कन्याओं द्वारा, मन्त्रियों द्वारा तदनन्तर सेनिकों द्वारा और अन्त में नैगमों द्वारा उसका अभिषेक होता था।<sup>३</sup> अभिषेक शास्त्रोक्त विधि पूर्वक होता था।<sup>४</sup> सम्पूर्ण औषधियों के रसों से भी उसका अभिषेक कराया जाता था एवं उसे राजमुकुट धारण कराया जाता था।<sup>५</sup> अभिषेक के अनन्तर राजा को अनेक भेटें दी जाती थीं।<sup>६</sup> अन्त में अभिषिक्त राजा थ्रेष्ठ ब्राह्मणों और मिथ्रों आदि को दक्षिणा और उपहार देकर प्रसन्न करता था।<sup>७</sup> इस प्रकार राज्याभिषेकोत्सव सम्पन्न होता था। यह राजनीतिक कृत्य रामायण में मांगलिक संस्कार के रूप में वर्णित है।

### राजा की उपाधि एवं राजचिह्न—

रामायण काल में राज्य छोटे-छोटे थे। इस काल में राजा के लिए केवल 'राजा'<sup>८</sup> एवं 'महाराजा'<sup>९</sup> उपाधियों का ही प्रयोग किया गया है।

### राजलिङ्ग—

रामायण में वर्णित राज्याभिषेकोत्सव से स्पष्ट है कि उस समय राजा के लिए विभिन्न राजचिह्न होते थे। राजचिह्नों में राजसिंहासन, राजचत्र, चौमर, रत्नजटित मुकुट, राजदण्ड एवं

१. वा० रा० ४१२६।३१; ६।११५।१५; ६।१३।१६०

२. वही ४।२६।३४; ६।१३।१६३

३. वही ४।२६।३३

४. वही ६।१३।१६४ आदि

५. वही ६।१३।१६६ आदि

६. वही ६।१३।१६७०, ७१, ७३

७. वही १।७।२१; १।७।२२०; २।२।२

८. वही २।१४।४२, ५१; २।१८।१५; २।५।७।३२

पीठिका प्रमुख थे। इनमें सिहासन छत्र एवं चैमर का विशेष महत्त्व था।<sup>१</sup>

### राजा की प्रतिज्ञा—

राजपद आनुवंशिक हो जाने से रामायण में राजा की प्रतिज्ञा का उल्लेख नहीं है। वैदिक साहित्य में राज्याभिषेकोत्सव के समय राजा को प्रतिज्ञा का उल्लेख मिलता है।<sup>२</sup> रामायण में राजा की प्रतिज्ञा का उल्लेख न होते हुए भी राजा धर्मानुसार प्रजा का पालन करने के लिए वाध्य था।<sup>३</sup> राजा दशरथ ने धर्मानुसार राज्य का पालन किया था।<sup>४</sup>

राज्याभिषेकोत्सव से सम्बन्धित वैदिक यज्ञादि की परम्परा भी इस समय लुप्त हो चुकी थी; तथापि राज्याधिरूढ़ होने के पश्चात् राम ने पौष्टरीक, अश्वमेघ, वाजपेय तथा अन्य विविध यज्ञ किए थे।<sup>५</sup> राजा दशरथ ने भी अपने राज्यकाल में अनेक यज्ञ किए थे।<sup>६</sup> राजा दशरथ राजसूय और अश्वमेघ यज्ञों के कर्ता कहे गये हैं।<sup>७</sup>

### राजा पर नियन्त्रण—

रामायणानुसार राजा निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी नहीं हो सकता था। उस पर कई प्रकार से नियन्त्रण था। एक तो वह धर्म से प्रतिवद्ध था,<sup>८</sup> दूसरे उस पर पुरोरित, मंत्री, जनता, नियम, आचार, विचार आदि नियन्त्रण करते थे एवं उचित मार्ग निर्देशन

१. वा० रा० ४।२६।२३, ३०; ६।१३।१६०, ६५

२. ऐतरेय ब्राह्मण ८।३।१५

३. वा० रा० २।१००।४६

४. वही २।२।२३

५. वही ६।१३।१६०

६. वही १।६।२

७. वही २।१००।६

८. वही २।१४।२४

करते थे।<sup>१</sup> यदि राजा धर्म का उल्लंघन करता था और अपनी प्रजा को कष्ट देता था, तो उसे पदच्युत कर दिया जाता था। राजा सगर ने अपने ज्येष्ठ पुत्र असमव्यज को दुष्टता के कारण देश से निष्कासित कर दिया था।<sup>२</sup>

धर्मशास्त्र की नीतियों का विभीषण द्वारा ज्ञान कराने पर राजा रावण भी हनुमान् को मृत्युदण्ड देने से रुक गया था।<sup>३</sup> राजा दशरथ द्वारा राम को दिया गया बनवास भी प्रजा ने निर्भीकता से अनोचित्यपूर्ण बतलाया था।<sup>४</sup> राजा दशरथ को भय था कि उनकी प्रजा इस कार्य को अनुचित कहकर विरोध करेगी कि वे अपनी पत्नी के भोगानन्द में पुत्र को त्याग रहे हैं।<sup>५</sup>

राजा रावण को निरंकुशता से बचने के लिए उपर्युक्त बन्धन थे, लेकिन वह निरंकुश था। उसने मारीच को अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिए अपनी बात को बलपूर्वक मनवाने के लिए विवश किया था।<sup>६</sup> राजा रावण मन्त्रियों, भाइयों आदि सभी से सलाह लेता था, लेकिन स्वार्थ के कारण उचित सलाह का निरादर करता था। यह उसकी निरंकुशता थी।

**वस्तुतः** रामायण में राजा पर नियन्त्रण के लिए उचित जिज्ञा एवं अच्छे संस्कारों के आधान के निरूपण के साथ-साथ पुरोहित एवं मन्त्रियों, सभा एवं प्रजाजनों, धर्म, लोक एवं परलोक के भय आदि की मर्यादाओं का वर्णन है। यह नियन्त्रण उसे अनाचरण से बचाने के लिए पर्याप्त थे।

१. वा० रा० ३।४।१६, ७; ५ संग् ५२

२. वही २।३।१२३

३. वही ५ संग् ५२

४. वही २।३।३।१६ पादि

५. वही २।१२।६४ से ६६, ७६, ८३, ८८

६. वही ३।४।०।८, ६

## राजा की दिनचर्या—

बालमीकि-रामायण में राजा को दिनचर्या का उल्लेख है। यह आदर्श कही जा सकती है। रामायण में राजा के कार्यों का वर्णन सम्पूर्ण दिन के काल विभाजन के अनुसार वर्णित है।

राजा प्रातःकाल संस्तुतियों, गीतों, मूदङ्गादि वाचों के शब्दों तथा सुन्दरियों के आभरणों की छवियों आदि से जगाया जाता था।<sup>१</sup> जागने के पश्चात् राजा नित्य कृत्य स्नानादि से पवित्र होता था।<sup>२</sup> इस समय उसके लिए प्रातानीय (भोजन) की सामग्री भी उपस्थित रहती थी।<sup>३</sup> अतः वह प्रातःकाल का भोजन भी यथासमय करता होगा। राक्षस राजा प्रातः उठकर सुरापान करते थे।<sup>४</sup>

राजा प्रातःकाल में हृवन करता था<sup>५</sup>। तत्पश्चात् देवालय में जा कर देवताओं, पितरों और नाह्यणों की यथाविधि अचंना करता था।<sup>६</sup> इस प्रकार नित्य नैमित्तिक कर्मों एवं देवादि पूजन से निवृत्त होकर राजा वाह्य कक्ष में सभाभवन में प्रवेश करता था, जहाँ पर मन्त्री, पुरोहित, अन्य अधीन राजागण एवं उसके भ्रातागण पूर्व से ही उसकी प्रतीक्षा में उपस्थित रहते थे।<sup>७</sup> इसी समय नैगम, वृद्धजन एवं कुलोन्जन भी सभा में उपस्थित होते थे। सभा में राजा ऋषियों से धार्मिक एवं प्राचीन वृत्तान्तों या कथाओं को सुनता था।<sup>८</sup> राजा सभा में न्याय का कार्य की करता था। वह कार्यार्थियों

१. वा० रा० २।१४।४५, ४६; २।६५।१ यादि। वा० रा० २।८।१८, ६;  
४।१८।३ एवं वा० रा० ७।३।७।१२

२. वही २।६।५।६; ७।३।७।१३

३. वही २।६।५।६

४. वही ४।१८।१३

५. वही ७।३।७।१३

६. वही ७।३।७।१४

७. वही ७।३।७।१४ से १७

८. वही ७।३।७ के पश्चात् प्रक्षिप्त सर्वे

को बुलवाता था और पुरोहित तथा मन्त्रियों के समक्ष पौर कार्य करता था।<sup>१</sup> इस समय धर्म और कर्तव्य सम्बन्धी चर्चायें भी होती थीं।<sup>२</sup> रामायण में राजा द्वारा प्रत्येक दिन पौर कार्य देखने पर बल दिया गया है।<sup>३</sup>

राजा दिन के पूर्व भाग में धर्मकार्य एवं न्याय कार्य करता था<sup>४</sup> एवं धार्मिक कथाओं को सुनाता था। तत्पश्चात् अपराह्ण समय में प्रजाजनों के दुःख सुख आदि के विषय में राजा जानकारी प्राप्त करता था।<sup>५</sup> वह अपराह्ण समय अन्तःपुर में भी ब्यतीत करता था।<sup>६</sup>

राजा सायंकालीन वेला में उपवन में विनोदार्थ जाता था।<sup>७</sup> राजा के आहारार्थ वहाँ मान्स एवं विविध फल लाये जाते थे।<sup>८</sup> उपवन में राजा के मनोरञ्जनार्थ नृत्य गीत आदि भी प्रस्तुत किये जाते थे।<sup>९</sup> सन्ध्या के समय में राजा विधिवत् सन्ध्योपासना करता था।<sup>१०</sup>

रात्रि के प्रथम प्रहर में राजा विविध प्रकार की कथाओं को सुनता था एवं यह समय वह हास्यकारों के मध्य विताता था।<sup>११</sup>

१. वा० रा० ७।५३।५, ६ एवं ७।६०।२ आदि

२. वही ७ सर्ग ५३, ५४, ५५ आदि

३. वही ७।५३।६

४. वही ७।५२।२६

५. वही ७।५१।२, १७

६. वही ७।५२।२६

७.] वही ७।५२।१

८. वही ७।५२।१६

९. वही ७।५२।२० आदि

१०. वही ७।३६।६३

११. वही ७।५३।१

इसी समय में राजा प्रसंगवश अपने विषय में प्रजाजनों के विचारों को जानने के लिये लोगों के समक्ष उत्सुकता व्यक्त करता था।<sup>१</sup> विशेष घटना घटित हो जाने पर<sup>२</sup> राजा अपने बन्धुओं सहित इस समय में विचार विमर्श करके तद्विषयक निर्णय भी लेता था।<sup>३</sup> रात्रि में राजा नृत्य, सङ्खीत और खेल का भी आनन्द लेता था।<sup>४</sup> रात्रि के शेष भाग में राजा विश्राम करता था।<sup>५</sup> रामायणानुसार राजा की उपर्युक्त रूप से ही दिनचर्या थी।

### राजा के कर्तव्य—

रामायण में राजाओं को कर्तव्य पालन के लिये विषेष निर्देश हैं। 'यथा राजा तथा प्रजा' का भाव उस समय सर्वत्र व्याप्त था।<sup>६</sup> रामायण में राजाओं के कर्तव्यों का विवेचन अनेक स्थलों पर है। मुख्य रूप से राजा दशरथ द्वारा यौवराज्याभिषेक के समय राम को दिया गया उपदेश,<sup>७</sup> राम का भरत के प्रति निर्देश,<sup>८</sup> राम के प्रति वालि के घर्मयुक्त परुष वचन,<sup>९</sup> सूर्पनखा का रावण के प्रति आक्रोश<sup>१०</sup> और रावण को मारोच द्वारा सचेत करने के स्थल<sup>११</sup> स्पष्ट रूप से राजाओं को उनके कर्तव्य का ज्ञान कराने के लिये उल्लेखनीय हैं।

१. वा० रा० ७।४३।४
२. वही ७।४३।१८
३. वही ७।४४।१
४. वही ४।४।२६
५. वही ७।३।६।६
६. वही ७।४३।१६, २।१०।६।६
७. वही २।३।४२ आदि
८. वही २ सर्ग १००
९. वही ४।१७।१३
१०. वही ३।३।३
११. वही ३ सर्ग ३। एवं ३७

रामायण में वर्णित राजा के कर्तव्य राज्य के सप्ताङ्गों से सम्बन्धित हैं। राजा का अपने प्रति कर्तव्य-राजोचित आचरण करना, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य—राष्ट्र की बाह्य और आन्तरिक विधि बाधाओं से रक्षा करना, प्रजा के प्रति कर्तव्य, उसकी सुरक्षा एवं उसका हित करते हुए अनुरक्षण करना, अमात्यों के प्रति कर्तव्य—उनको गतिविधियों पर ध्यान देना एवं शासन के कार्यों में उनकी मन्त्रणा लेना, बल या सेना के प्रति कर्तव्य—उसकी वथोचित व्यवस्था करना एवं अपराधानुसार दण्ड का विधान करना, सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण कराना, कोष को समृद्ध करना एवं मुहूर्द के प्रति कर्तव्य—उसके साथ मंत्रोपूर्ण वार्ता को रखते हुए उससे राज्य के स्थायित्व एवं वृद्धि में सहायता लेना या।

इस प्रकार राजा शासन की समस्त व्यवस्था का निरीक्षण करता था और राज्य के योगक्षेम के लिये कर्तव्यों का पालन कराता था।

### राजा का अपने प्रति कर्तव्य—

पाप कर्मों के दुष्परिणाम से राजागण अवगत रहते थे।<sup>१</sup> अतः उन्हें जितेन्द्रिय बनने के लिये एवं काम क्रोध से उत्पन्न व्यसनों का त्याग करने के लिये सचेत किया जाता था।<sup>२</sup> भोगों में आसक्ति का त्याग,<sup>३</sup> सर्वंत्र जागरूक रहना,<sup>४</sup> चंचलता एवं असावधानी का परित्याग करना<sup>५</sup> एवं शम, दम, क्षमा, धर्म, धृति, सत्य, पराक्रम आदि गुणों को अपने में धारण करना राजा को अपेक्षित था।<sup>६</sup>

१. वा० रा० २।१२।८०

२. वही २।३।४२

३. वही ३।३।३।२, ३

४. वही ३।३।३।४

५. वही ३।३।३।७

६. वही ४।१।७।१७

नास्तिकता, असत्यभाषण, कोश, प्रमाद, दीर्घसूत्रता और आलस्य का परित्याग करना,<sup>१</sup> स्वेच्छाचारिता एवं निरकुशलता से दूर रहना,<sup>२</sup> राजदोषों-कोशज और कामज दोषों से सदैव बचना<sup>३</sup> आदि राजा के अपने प्रति कर्तव्य थे। राजा के राज्याधिकार की अहं भावना से रहित होना पड़ता था।<sup>४</sup> अपने को सामान्य मनुष्य मान लेना हो राजा का आदर्श था। पाप से दूर रहना,<sup>५</sup> निद्रा में लिप्त न रहना और समय पर जागना,<sup>६</sup> शठता, गवं और प्रभुता से दूर रहना<sup>७</sup> भी राजा के लिए अपेक्षित था।

इस प्रकार किसी भी कार्य में प्रमाद न करना एवं अपने को संयमित रखना,<sup>८</sup> ये राजा के अपने प्रति प्रमुख कर्तव्य थे। कार्यों के प्रति असावधान रहने वाले एवं स्वयं कार्यों को न करने वाले राजा कार्यों को ही नहीं अपितु राज्य को भी नष्ट करने वाले कहे गये हैं।<sup>९</sup>

### राजा के प्रजा के प्रति कर्तव्य—

राजा के स्वयं के प्रति कर्तव्य, शोल, सदाचरण, जागरूकता आदि उसे प्रजा के प्रति कर्तव्य परायण बनने के लिए प्रेरित करते थे। इसी कारण वह प्रजा के प्रति कर्तव्य से च्युत होने के प्रमाद से बचने में समर्थ होता था।

१. वा० रा० २।१००।६६

२. वही ३।३।३।२

३. वही २।१००।६८, ६६, ७०

४. वही ७।४।४।१६

५. वही ४।१७।२०

६. वही २।१००।१६, १८

७. वही ३।३।३।१५

८. वही ३।३।३।२०

९. वही ३।३।३।४

रामायणानुसार राजा के प्रजा के प्रति मुख्य कर्तव्य प्रजा की यथाशक्ति सावधानीपूर्वक रक्षा करना,<sup>१</sup> सदेव प्रजा के हित की कामना करना<sup>२</sup> एवं प्रजा रंजन करना<sup>३</sup> थे। प्रजानुरंजन करते हुए पृथ्वी का पालन राजा द्वारा करणीय था, जो उसके हित में था। यही उसके मित्र वर्ग को प्रसन्नता प्रदान करने वाला और उसे स्वर्ग की प्राप्ति का प्रदायक था।<sup>४</sup>

रामायण में राजा को चारों वर्णों के लिए अपने-अपने कार्यों में नियुक्त करने एवं उन वर्णों के हितार्थ कार्य करने के निर्देश हैं।<sup>५</sup> राजा द्वारा अपनी प्रजा की देहिक, देविक तथा भौतिक तापों से रक्षा करणीय थी।<sup>६</sup> उसका कर्तव्य था कि वह प्रजा को धर्म में लगाये।<sup>७</sup> यत्नपूर्वक सचेत रहकर अपनी प्रजा की रक्षा अपने प्राणों के समान करने वाले राजा व्रहालोक में सम्मान प्राप्त करने वाले कहे गये हैं।<sup>८</sup> ऐसे राजा प्रजा के प्रिय बनते थे।<sup>९</sup> राजा को प्रतिदिन पौर कार्य करना आवश्यक था।<sup>१०</sup> कार्यालयों के प्रति न्याय न करने वाले राजा को पाप का भागी कहा गया है।<sup>११</sup> राजा

१. वा० रा० २१२७

२. वही १११२०

३. वही २१३४०; २१३४३

४. वही २१३४५, २१०००७७

५. वही १११२३, ११६१६, ५१३४११, ६११३१११००

६. वही १११६० पादि, २१००१४५, ४६

७. वही ६११३१११०१

८. वही ३१६१२, १३

९. वही २१२१४६

१०. वही ७१५३१६

११. वही ७१५३१६, ७१५३२५

अपने प्रति प्रजा के विवारों को जानने के लिए उत्सुक रहता था,<sup>१</sup> जिससे कि वह अपने प्रति प्रजा में व्याप्त अपवादों का निराकरण कर सके और प्रजा की इच्छानुसार उनका अनुरंजन कर सके। प्रजा के संतोष, कल्याण एवं सुख के लिए अपनी प्रिय वस्तु का परित्याग करना राजा का कर्तव्य था। राम ने प्रजा में व्याप्त अपवाद के कारण उनके संतोष के लिए अपनो प्रिय पत्नी सीता का परित्याग कर दिया था।<sup>२</sup> राजा सगर को भी जनकल्याणार्थ अपने पुत्र असुमंज का देश से निष्कासन करना पड़ा था।<sup>३</sup> राजा को प्रजा की रक्षाय अपने अत्यन्त प्रिय पुत्र को भी समर्पित कर देना पड़ता था। विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षार्थ राजा दशरथ ने इच्छा न होने पर भी अपने प्रिय पुत्र राम को समर्पित किया था।<sup>४</sup>

राजा प्रजा को रक्षार्थ धर्मबन्धन से आबद्ध था।<sup>५</sup> एवं धर्म के बाह में था।<sup>६</sup> धर्म के द्वारा प्रजा की रक्षा करना ही उसका कर्तव्य था।<sup>७</sup> वह धर्म की वृद्धि की इच्छा से धर्म के विपरीत आचरण करने वाले को रोकता था।<sup>८</sup> उस समय धर्म से तात्पर्य सत्य आदि नेतिक गुणों से था।<sup>९</sup>

रामायण के अनुसार प्रजा पर आगत विपत्ति का कारण राजा का धर्म या कर्तव्यपरायणता के प्रति उदासीनता का भाव कहा गया है।<sup>१०</sup> अंग देश में दुर्भिक्ष का कारण वहाँ के राजा रोमपाद

१. वा० रा० ७।५३।४
२. वही ७।५५।१६
३. वही २।३६।२३
४. वही १।२२।३
५. वही १।२१।७, २।१४।२४
६. वही ४।१८।३७
७. वही २।२।२५
८. वही ४।१८।६, १०, ११
९. 'आहुः सत्यं हि परमं धर्मं धर्मविदो जनाः। वा० रा० २।१४।३
१०. वही ७ संगे ७३, ७४

को माना गया था।<sup>१</sup> देश की विपत्ति का उत्तरदायी राजा ही मान्य था।

प्रजा की आय के छठे भाग को प्राप्त करने के कारण राजा प्रजा की रक्षा करने के लिए बाध्य था।<sup>२</sup> न केवल नगर के लोगों की अपितु अपने राष्ट्र से सम्बन्धित वनों में रहने वाले तपस्त्रियों की रक्षा करना भी राजा का कर्तव्य था क्योंकि वह उनसे भी उनकी तपस्या का चौथा भाग प्राप्त करता था।<sup>३</sup> प्रजा की आय का छठवाँ भाग 'कर' के रूप में घट्टण कर प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ राजा महा-अधर्मी कहा गया है।<sup>४</sup> रामायण में राजा को प्रजा की रक्षा पुत्रवत् करने के निर्देश दिये गये हैं।<sup>५</sup> राजा द्वारा प्रजा की रक्षा राजवृत्ति द्वारा करने का भी निर्देश है।<sup>६</sup>

**निष्कर्षतः:** रामायणानुसार मनसा, बाचा, कर्मणा तथा धर्मानुसार प्राणों और पुत्र के समान प्रजा की रक्षा करना एवं प्रजा को नैतिक तथा भौतिक उन्नति करना राजा का कर्तव्य था।<sup>७</sup>

राज्य, अमात्य एवं अन्य अधिकारियों के प्रति राजा के कर्तव्य—

राजा के राज्य के प्रति सुरक्षात्मक कर्तव्य थे। राजा के समस्त कार्य राजा के द्वारा न्यायपूर्वक करणीय थे।<sup>८</sup> राज्य की सुरक्षा एवं उनकी व्यवस्था करके ही वह राज्य के बाहर जा सकता था। राजा भगोरथ (गंगावतरण के लिए) जब तपस्या हेतु गये थे, तो वे

१. वा० रा० ११६।१०, ३।३७।६, ७

२. वही ३।७।४।३।१

३. वही ३।६।१।४

४. वही ३।६।१।१

५. वही ३।६।१।१

६. वही १।५।२।७

७. वही ३।६।१।२

८. वही ६।१।२।३।०

राज्य का प्रबन्ध मन्त्रियों को सौंप गये थे ।<sup>१</sup> राजा राम शम्बूक को खोज के लिए जाने से पूर्व राज्य की व्यवस्था का प्रबन्ध करने के लिए भरत और लक्ष्मण को निर्देश दे गये थे ।<sup>२</sup>

राजा का राज्य के प्रति वह भी कर्तव्य था कि वह राज्य सम्बन्धी वृत्तान्तों को जाने एवं अन्य राज्यों में घटित घटनाओं से भी अवगत हो<sup>३</sup> और तदनुसार कार्य करे ।

अमात्यों के प्रति राजा के विभिन्न कर्तव्य थे । वह श्रेष्ठ मन्त्रियों की नियुक्ति करता था ।<sup>४</sup> राज्य के प्रत्येक कार्य में मन्त्रियों के साथ परामर्श करना राजा का कर्तव्य था ।<sup>५</sup> राजा को युद्ध एवं शासन के कार्यों में मन्त्रियों से मन्त्रणा करना आवश्यक था ।<sup>६</sup> राजकार्यों का संचालन उसे मन्त्रियों की सहायता से करणीय था ।<sup>७</sup>

राजा का कर्तव्य था कि वह केवल मन्त्रियों पर ही शासन न छोड़े, अपितु शासन के प्रति व्यक्तिगत ध्यान दे ।<sup>८</sup> इसके अतिरिक्त मन्त्रियों को प्रसन्न रखना भी राजा का कर्तव्य था ।<sup>९</sup>

मन्त्रियों के अतिरिक्त राजा के कर्तव्य अन्य अधिकारियों से भी सम्बन्धित थे । स्वामिभक्त सेनापति की नियुक्ति करना,<sup>१०</sup> वृद्धिमान दूतों का चयन करना,<sup>११</sup> विभिन्न पदाधिकारियों के विषय

१. वा० रा० १४२।१२

२. वही ७।०४।६

३. वही २।३।४३

४. वही २।१००।१६

५. वही २।२।१, २।१००।१६

६. वही ६।२।१८, ६।१।२।२८

७. वही २।१।४।२२

८. वही ४।२।६।५, आदि

९. वही २।३।४३

१०. वही २।१००।३१

११. वही २।१००।३६

में जानकारी प्राप्त करते रहना<sup>१</sup> शत्रुओं के प्रति सचेत रहना,<sup>२</sup> अधिकारियों के प्रति प्रेम का वर्ताव करना एवं उनका अपमान न करना<sup>३</sup> आदि अधिकारियों से सम्बन्धित राजा के कर्तव्य थे।

### राजा के अन्य राज्यांगों से सम्बन्धित कर्तव्य—

रामायण में राजा के दण्ड, कोष और मित्र राज्यांगों से सम्बन्धित कर्तव्यों का भी उल्लेख है। रामायण में राजा को दण्ड विधान के प्रति सचेत रहने का निर्देश है।<sup>४</sup> वह दण्डधारी था।<sup>५</sup> पापी को दण्ड न देने से वह स्वयं पाप का भागी कहा गया है।<sup>६</sup> अपराधी को दण्ड देने वाला राजा स्वर्गाधिकारी कहा गया है।<sup>७</sup> राज्य में दण्ड की व्यवस्था को बनाए रखना,<sup>८</sup> दुष्टों के प्रति दण्ड का प्रयोग करना,<sup>९</sup> अनपराधी को दण्ड न देना,<sup>१०</sup> एवं दण्ड देने में स्वेच्छाचारी न होना<sup>११</sup> आदि दण्ड से सम्बन्धित राजा के कर्तव्य थे।

न्याय सम्बन्धी राजा के कर्तव्य बड़े महत्वपूर्ण थे। राजा न्यायपालिका का प्रधान था।<sup>१२</sup> उससे यह अपेक्षा थी कि वह

१. वा० रा० २।१००।३७

२. वही २।१०।०।३८

३. वही २।१०।०।२८, ३५

४. वही २।१०।०।७।, ७।७।६।१०

५. वही ३।१।।१७

६. वही ४।१।८।३४, ७।७।६।१६

७. वही ४।१।८।३२

८. वही ७।१।७।३०

९. वही ४।२।१।१५, १६

१०. वही ४।१।७।१७, २७, ७।७।६।८

११. वही ४।१।७।३२, ३३

१२. वही ३।१।।१७

प्रतिदिन न्यायालय में उपस्थित होकर प्रजा के प्रति उचित न्याय करे।<sup>१</sup> प्रजा को राजा से दान, दया, सम्मान एवं न्याय की अपेक्षा रहती थी।<sup>२</sup>

उचित दण्ड एवं न्याय की व्यवस्था करने के अतिरिक्त राजा को अपने कोष को समृद्ध रखना अपेक्षित था। उसे राज्य की आय को व्यय से अधिक रखना<sup>३</sup> एवं धन, धान्य, आयुध, जल यन्त्र आदि आवश्यक वस्तुओं के आगारों को परिपूर्ण रखना<sup>४</sup> अपेक्षित था। रामायण में राजा को अन्नागारों और आयुधागारों को परिपूर्ण रखने के लिए निर्देश हैं।<sup>५</sup>

राजा को प्रजा का धन अनियमानुसार लेने का अधिकार नहीं था।<sup>६</sup> उसे राज्य को समुचित व्यवस्था रखने के लिए आय व्यय का लेखा रखना पड़ता था।<sup>७</sup> राज्य को आय का सही रूप से व्यय करना राजा का कर्तव्य था। वह राज्य की आय को अपात्रों में व्यय नहीं कर सकता था।<sup>८</sup> उचित कार्यों एवं उचित पात्रों में ही धन का व्यय करना राजा का कर्तव्य था।<sup>९</sup> राजा प्रजा के धन को अपने मनोरञ्जन के लिए व्यय नहीं कर सकता था।<sup>१०</sup> वह किसी भी व्यक्ति से लालचवश भेट के रूप में कुछ भी वस्तु

१. वा० रा० २१००१५८, ७।५।३।६

२. वही ३।१।१७, ४।१।७।१७

३. वही २।१००।५५

४. वही २।३।४४, २।१००।५४

५. वही २।३।४४

६. वही २।१००।२६

७. वही २।१।२६

८. वही २।१००।५५

९. वही २।१००।५६

१०. वही २।१००।५५

स्वीकार नहीं करता था।<sup>१</sup> राजा का यह कर्तव्य सराहनीय था क्योंकि उक्त भावना राज्य में घट्टता को रोकने के लिए आवश्यक थी। इस प्रकार राजा के न्याय, दण्ड एवं आय और व्यय सम्बन्धी कर्तव्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थे।

राजा के 'बल' और 'युद्ध' सम्बन्धी भी अनेक कर्तव्य थे। सेना को वेतन और भोजन से सन्तुष्ट रखना,<sup>२</sup> उन्हें उपहार से प्रसन्न करना,<sup>३</sup> और भली प्रकार निष्चयपूर्वक तथा समयानुसार युद्ध का प्रारम्भ करना<sup>४</sup> तथा सुहृद् को बचनबद्ध होकर सहायता करना<sup>५</sup> एवं अपनी विजय तथा राज्य के कल्याणार्थ मित्र से सहायता लेना<sup>६</sup> आदि राजा के सेना, युद्ध और सुहृद् से सम्बन्धित कर्तव्य थे।

उपर्युक्त कर्तव्यों के अतिरिक्त राजा के लोक कल्याणार्थ सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्य भी थे। राज्य में मार्गों की व्यवस्था करना,<sup>७</sup> प्रकाश की सुविधा देना,<sup>८</sup> व्यापार की वृद्धि करना,<sup>९</sup> कृषि एवं पशुपालन की ओर ध्यान देना,<sup>१०</sup> सिचाई की सुविधा प्रदान करना,<sup>११</sup> प्रजा के मनोरंजनार्थ साधन उपलब्ध कराना<sup>१२</sup>

१. वा० रा० ७०७६।३५

२. वही २१००।३३

३. वही २१२५।६, ६

४. वही ६११३।७, ६।३५।८

५. वही ४ संग ७, ८

६. वही ६ संग १६

७. वही १५।७, २।६।१७, २।१७।४, ४५

८. वही २।६।१८

९. वही १५।१४

१०. वही २।१०।०।४८

११. वही २।१०।०।४६

१२. वही १५।१२, १६

एवं प्रजा के धार्मिक भाव को जाप्रत करने के लिए तथा उनके नैतिक उत्थान के लिए धार्मिक यज्ञों का अनुष्ठान कराना<sup>१</sup> आदि भी राजा के महत्त्वपूर्ण कर्तव्य थे ।

**निष्कर्षः** रामायणानुसार राजा का कर्तव्य अपने चरित्र की रक्षा के साथ साथ स्वजन और प्रजाजनों की रक्षा करना था एवं एवं धर्म की रक्षा करते हुये<sup>२</sup> प्रजा को किसी प्रकार कष्ट न पहुँचाना था ।<sup>३</sup>

रामायण में राजा को कर्तव्य पालन के लिये सचेत करते हुये उल्लिखित है कि जो राजा कर्तव्य का यथावत् पालन नहीं करता है वह राज्यच्युत होने के कारण तुच्छता को प्राप्त करता है ।<sup>४</sup>

स्पष्ट है कि रामायण में राष्ट्र की चतुर्मुखी समृद्धि हेतु एवं उसके स्थायित्व के लिये राजा के कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन किया गया है । रामायणानुसार राजा भोगों को भोगने की ही मूर्ति नहीं था, अपितु वह प्रजा की सुरक्षा, सम्पन्नता, सुख और सुविधा एवं अनुरंजन का मूल आधार था । 'राजा' प्रजा को नैतिक एवं भौतिक उन्नति करने का उत्तरदायी था ।

### राजा के अधिकार—

रामायण में राजा के कर्तव्यों के साथ साथ उसके अधिकारों का भी उल्लेख है । उसे युवराज का चुनाव करने,<sup>५</sup> मन्त्रियों की नियुक्ति करने,<sup>६</sup> राजाज्ञा का उल्लंघन करने पर मन्त्रियों को

१. वा० रा० ११६२, २१००१६ एवं ६११३१६०

२. वही ५१३५७

३. वही ७०८३१२०

४. वही ३१३३११७

५. वही २११४१

६. वही २१००१६

दण्डित करने,<sup>१</sup> सेनापति को नियुक्त करने,<sup>२</sup> न्याय और दण्ड के विषय में प्रधान बनने,<sup>३</sup> युद्ध की घोषणा करने और राजसुख का यथोचित उपभोग करने<sup>४</sup> आदि का अधिकार था।

राजा के लिए सुख-सुविधाओं और मनोरञ्जन के साधन—

राजा राज्य के प्रति पूर्ण रूप से उत्तरदायी था एवं राज्य के प्रति उसके विश्वाद कर्तव्य थे, अतः राज्य के द्वारा उसे उन कर्तव्यों की पूर्ति के उपलक्ष में सुख सुविधायें मी प्राप्त थीं।

रामायणानुसार राजा को राजधानी में वैभवपूर्ण राजप्रासाद उपलब्ध था। उस प्रासाद में विशाल अट्टालिकायें,<sup>५</sup> उद्यान एवं आमोद प्रमोद के स्थल भी थे। राजाओं के भवन 'प्रासाद' या 'विमान' कहे जाते थे। ये विशाल एवं उन्नत थे।<sup>६</sup> प्रासाद में कई प्राञ्जलि<sup>७</sup> एवं अन्तःपुर होते थे।<sup>८</sup> प्रासाद का वाह्य कक्ष न्यायालय या राजसभा के लिये था।<sup>९</sup> मध्यम कक्ष में राजा अपने भाइयों एवं मन्त्रियों के साथ विचार विमर्श करता था।<sup>१०</sup> इसमें उत्सव आदि भी सम्पन्न होते थे।<sup>११</sup> प्रासाद के अन्तिम कक्ष में या अन्तःपुर

१. वा० रा० ३।४०।६

२. वही २।१००।३।१

३. वही ३।१।२७

४. वही ७।७।४।३।२

५. वही २।१५।३।१, ४।३।३।१।४, ५।६।४।३

६. वही ५।७।२, ५

७. वही २।१७।२।०, २।१, ४।३।३।१।८

८. वही ५।७।२

९. वही ७।३।७।१।४

१०. वही ७ सर्वं ४।४

११. वही २।३।१।६

में रानियाँ रहती थीं। एवं राजा भी निवास करता था।<sup>१</sup> इसी कक्ष से संलग्न राजा के मनोरंजनार्थ आनन्दोद्यान या प्रमदवन होता था। इसमें राजा और रानी या प्रासाद की महिलायें भी विचरण करती थीं। इन राजभवनों में अनेक चित्र विचित्र नतागृह, चित्रशालायें, कोडागृह, रतिगृह और रम्यविथामगृह होते थे।<sup>२</sup> राजभवन में हवन के लिये वेदियाँ भी होती थीं।<sup>३</sup>

राजभवन सम्पत्ति एवं विलासिता की सामग्री से युक्त होते थे।<sup>४</sup> इनका उपभोग केवल राजा ही सपरिवार करता था। राजप्रासाद अत्यन्त समृद्ध एवं हावीदाँत, स्वर्ण, स्फटिक, वैदूर्य आदि मणियों से अलंकृत थे।<sup>५</sup> राजा के बैठने के लिये राजभवन में स्वर्णजटित सिंहासन भी उपलब्ध था।<sup>६</sup>

राजा को अपने वैभव एवं पद के अनुरूप वस्त्राभूषण उपलब्ध थे। उसे सुविधा के लिये हाथी, अश्व एवं रथादि प्राप्त थे।<sup>७</sup> उसे उत्तम भोज्य पदार्थों का सुख उपलब्ध था।<sup>८</sup> राजा के राजभवन में उसकी सुख-सुविधा के लिये द्वारपाल, प्रतिहारी एवं अनेक सेवक उपलब्ध थे।<sup>९</sup> राजभवन में राजा की सुरक्षार्थ पहरा रहता

१. वा० रा० ४।३।३।१८, २१

२. वही ४ सर्ग ३३

३. वही ४।६, ३६, ३७

४. वही ४।६।१२

५. वही ५ सर्ग ७

६. वही २।१।३।३२, ५।४।२६, ५।६।४, १४, ५।७।६, ४ सर्ग ३३

७. वही ४।३।४।३

८. वही ५।६।२६, २७; ५।६।६

९. वही ५।६।४२, ७।४।२।११

१०. वही ४।३।३।२३, ७।३।७।१२

था।<sup>१</sup> इस प्रकार राजा को राज्य की ओर से सुख सुविधा एवं भोगविलास की समस्त सामग्री उपलब्ध था। राजा अपने सुख के लिये अनेक रानियाँ भी रखते थे।<sup>२</sup>

रामायण में राजा के मनोरञ्जनार्थ मृगया, जलक्रीड़ा, सज्जीत, नृत्य, वाणि आदि का उल्लेख है<sup>३</sup> एवं हास्यकारों द्वारा राजा के मनोविनोद एवं उसके लिये अन्तःपुर में समस्त सुख सामग्री का भी वर्णन है।<sup>४</sup> रामायणानुसार तत्कालीन राजाओं के मनोविनोद का प्रमुखसाधन मृगया था। दशरथ, रावण, राम, इल आदि नरेश रामायण में शिकार खेलते हुये वर्णित हैं।<sup>५</sup> राजाओं के मनोविनोद का दूसरा साधन सज्जीत, नृत्य आदि था। राजा राम हास्यकारों से घिरे रहते थे।<sup>६</sup> बन्दीजनों द्वारा किया गया यशमान भी राजाओं का मनोरञ्जन करता था। राजाओं के मनोरञ्जन के लिये उनकी स्तुति और वंशावली का वर्णन करने वाले सूत एवं मागध आदि थे।<sup>७</sup> उद्यान और क्रीड़ागृह आदि भी राजा के मनोरञ्जनार्थ थे।

### राजा का वेतन —

राजा को सुखोपभोग के लिये निर्धारित वेतन प्राप्त होता था। वह प्रजा की आय के छठवें भाग को प्राप्त करता था<sup>८</sup> एवं उसका अपने सुख के लिये तथा प्रजारञ्जनार्थ उपयोग करता था।

१. वा० रा० ५१३३१६, ५४१२८, ३४; ५१६१३

२. वही २१०३१३, ४१२०१२०, ४१३४१३६, ५१६१६

३. वही ४१३३१२४, ५१६१४२, ४३

४. वही ५१६११२, ७१४३११

५. वही २१४६१५, २१६३२०, २१, ७११२१३, ७१८७१८

६. वही ७१४३१२

७. वही २१४१४५, ४६, २१८८१८, ६; २१६५११ आदि, ५१६१३

८. वही ३१६१११, १४; ७१७४१३१

इस प्रकार राज्य के प्रति कर्तव्यपालन एवं प्रजा के हित और रक्षा हेतु राजा को उपयुक्त सुविधायें राज्य की ओर से प्राप्त थीं।

### राजा की दिग्विजय—

राजसिंहासन पर आळड़ होने पर राजा दिग्विजय प्रारम्भ करता था। रावण ने राजसिंहासन पर आसीन होने के अनन्तर लोकों को जीतना प्रारम्भ कर दिया था।<sup>१</sup> राम ने अश्वमेघ यज्ञ करके विजय का अश्व छोड़ा था।<sup>२</sup> राजा सगर ने भी अश्वमेघ यज्ञ का अश्व विजयार्थ छोड़ा था।<sup>३</sup> इस प्रकार रामायण में राजा की दिग्विजय के उल्लेख मिलते हैं।

### राजा की निरंकुशता—

जैसा कि पूर्व में उल्लेख है कि रामायणानुसार तत्कालीन राजतन्त्र सम्बेदानिक थे। राज्य के संचालन में राजा के साथ साथ प्रजा का भी हाथ था, अतः राजा स्वेच्छाचारी नहीं हो पाता था। तथापि अपवाद के रूप में राजा रावण अपने व्यवहार में निरंकुश था। वह मन्त्रियों से सलाह लेता था, लेकिन उन मन्त्रियों के विचार ही उसे मान्य थे, जो उसका विरोध नहीं करते थे। जो भी मन्त्री विरोध करता था, वह उसे दोषी ठहराता था। मारीच द्वारा उचित सलाह पाने पर भी रावण ने उसे दोषी कहा एवं अपनी बात मनवाने को विवश किया था।<sup>४</sup> इसी प्रकार सत्य एवं उचित बात कहने पर शुक और सारन को भी रावण का अपमान सहना पड़ा था।<sup>५</sup> विभीषण की रावण के मत में सहमति न होने पर उसे

१. वा० रा० ७ सर्ग १३ प्रादि

२. वही ७ सर्ग ६२ प्रादि

३. वही १ सर्ग २६

४. वही ३।४०।६, २६, २७

५. वही ६।२६।३ प्रादि

भी रावण द्वावण अपमानित होना पड़ा था।<sup>१</sup> इस प्रकार रामायण में राजा की निरंकुशता भी दृष्टव्य है।

### राजा का देवत्व—

वैदिक साहित्य में राजा के देवत्व की भावना नहीं थी। डा० अलतेकर ने लिखा है कि 'राजा के देवत्व की भावना, जो ईसा की प्रथम शताब्दी में सर्वमान्य थी, वैदिक काल में वर्तमान न थी। उस काल में राजा का पद पूर्णतः लौकिक था'<sup>२</sup>। रामायणानुसार राजा में देवत्व मान्य हो गया था। रामायण में उल्लेख है कि राजा पृथ्वी पर देवता स्वरूप हैं।<sup>३</sup> वह पञ्चदेवताओं के रूप को धारण करने वाला है।<sup>४</sup> वह देवताओं के अंश से उद्भूत<sup>५</sup> एवं उनसे भी श्रेष्ठ कहा गया है।<sup>६</sup>

### राजा के दोष—

रामायण में राजपद वंशानुगत<sup>७</sup> हो जाने से तथा राजा को देवांशों से उद्भूत,<sup>८</sup> देवतावत्<sup>९</sup> एवं देवों से भी श्रेष्ठतर मान लेने से<sup>१०</sup> राजागण अपने को प्रजा से बहुत बड़ा मानने लगे थे। वे सामान्य प्रजा से ही नहीं, अपितु मन्त्रियों से भी अनपेक्षित सम्मान

१. वा० रा० ६।१६।१५

२. प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, पृ १४

३. वही ४।१८।४४

४. वही ३।४०।१२

५. वही ७।७६।४२ आदि

६. वही २।६७।३५

७. वा० रा० २।७६।५, ४।१३

८. वही ६।७६।४२ आदि; ३।४०।१२

९. वही ४।१८।४४

१०. वही २।६७।३५

प्राप्त करने की अपेक्षा करने लगे थे। वे अपने को देवतत्व कहकर<sup>१</sup> अपनी महता को प्रकट करते हुये अपनी आज्ञा का बलपूर्वक पालन कराने के लिये मन्त्रियों को विवश करते थे।<sup>२</sup> राजा शब्द का आश्रय लेकर वे अपने को पूज्य एवं सम्माननीय घोषित करते थे।<sup>३</sup> इस प्रकार वे अपनी आज्ञा को अनुलङ्घनीय बताते थे।<sup>४</sup> उपर्युक्त प्रवृत्ति राक्षस राजा रावण में दृष्टिगोचर होती है।

**वस्तुतः** रामायण में राजागण समय-समय पर राजदोषों से अवगत कराये गये हैं। उन्हें इन दोषों से बचने के लिये निर्देश एवं उचित मन्त्रणा दी जाती थी। राम को राजा दण्डरथ द्वारा,<sup>५</sup> भरत को राम द्वारा<sup>६</sup> सुग्रीव को हनुमान् द्वारा<sup>७</sup> तथा राजा रावण को मारीच द्वारा<sup>८</sup> राजधर्म का पालन करने की प्रेरणा दी गई थी।

### राजा का अधिकार परित्याग—

रामायण में चतुराश्रम व्यवस्था का उल्लेख है।<sup>९</sup> राजा भी क्षत्रिय धर्म का पालन करके बानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करता था और तपस्या हेतु वन में जाता था।<sup>१०</sup> वृद्ध होने पर राजा स्वयं राजपद से अवकाश ग्रहण करने की इच्छा करता था।<sup>११</sup> राजा दण्डरथ ने वृद्ध होने पर अपने अधिकार को त्यागने की इच्छा व्यक्त की थी।<sup>१२</sup> इसी प्रकार राज्याधिकार से अवकाश प्राप्त करके

१. या० रा० ३।४०।१२; ४।१८।४४
२. वही ३।४०।६०
३. वही ३।४०।१३
४. वही ३।४०।६
५. वही २।३।४२ आदि
६. वही २।१००
७. वही ४।२६।५ आदि
८. वही ३ संग ३७, ४१
९. वही २।१०६।२२
१०. वही २।२३।२६
११. वही २।२।६
१२. वही २।२।८